राजस्थानी साहित्य परिषद्
४ जगमोहनमल्लिक लेन,
कलकत्ता।

मुद्रक :
न्यू राजस्थान प्रेस,
१३ मुक्तारामबाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता।

६ पईसेरी हांडी गयी, कुत्तेरी जात तो आयी

पैसेकी हंडिया गयी तो परवाह नहीं, कुत्तेकी जाति (के स्वभाव) का तो जान लिया

थोड़ी हानि तो हुई पर वास्तविकता तो मालूम हो गयी ; फिर वैसा धोखा नहीं खायेंगे । थोड़ी हानि उठाकर आगे सजग बन जाना ।

७ पईसेरी हांडी पण बजा'र लेवै

पैसेकी हांडी भी बजाकर लेते हैं

चाहे थोड़े मोलकी ही माल खरीदना हो पर उसको खूब देखभालकर लेना चाहिये । छोटे कामको भी खूब विचारपूर्वक करना चाहिये ।

८ पईसैसूं पईसो हुवै * [पाठान्तर वधै]

पैसेसे पैसा होता है

पैसा पास हो तो उसके द्वारा अधिक धन कमाया जा सकता है ।

मिलाओ—धन-सूं धन वधै ।

९ पईसो तो जहर खावणनै ही कोनी

पैसा तो जहर खानेके लिये भी नहीं है

जब हाथ बहुत तंग हो ।

१० पईसो हाथरो मैल है

पैसा हाथका मैल है

जैसे हाथके मैलको उतारकर फेंक देते हैं वैसे ही पैसेका भी दान करते रहना चाहिये । हाथका मैल जैसे जमा होता रहता है वैसे ही पैसा भी आता ही रहता है अतः उसके खर्चमें कंजूसी नहीं करनी चाहिये ।

११ पख-दाळदी है, जिलम-दाळदी कोय नी

पक्षका दरिद्री है, जन्मका दरिद्री नहीं

मन्दभागी तो है पर अधिक नहीं ।

१२ पग बिन कटै न पंथ

पैरोंसे चले बिना मार्ग नहीं कटता

करनेसे ही काम होता है, अपने आप नहीं।

१३ पगमें चक्कर है

पैरमें चक्र है

दिनरात इधर-उधर आना जाता रहता है। व्यर्थ घूमनेवाले पर।

१४ पगरै लागी अर पाटो बांधै माथैरै

पैरके लगी और पट्टी बांधता है माथेके

असङ्गत काम करना। नहीं करनेका काम नहीं करना। बेवकूफीका काम करना।

१५ पगां बळती को दीसै नी, डूंगर बळती दीस जाय

पैरोंके पास जलती आग नहीं दिखायी देती, दूर पहाड़ पर जलती हुई दिखायी दे जाती है

अपने दोष नहीं दिखायी देते, दूसरोंके दिखायी पड़ जाते हैं।

१६ पगां किसी महँदी लागियोड़ी है

पैरोंके कौनसी महँदी लगी हुई है (कि चल नहीं सकते)

(१) जब कोई व्यक्ति पैदल चलनेमें आनाकानी करता है तब

(२) जब कोई व्यक्ति काम नहीं करता है तब।

१७ [इयांरै] पगांरा बांध्योड़ा हाथांसूं को खुलैनो

([illegible] हाथोंसे नहीं खुलता (वे जिसे पैरोंसे बांध दें [illegible] हाथोंसे भी नहीं खोल सकते)

[illegible] पर।

१८ [इयांरे] पगांसूं दियोड़ी दांतांसूं को खुलै ना

(इनकी) पैरोंसे बांधी हुई दांतोंसे नहीं खुलती

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१९ पछै घोड़ो दौड़ै क घोडी दौडै

पीछे न-जाने घोड़ा दौड़े या घोड़ी दौड़े

पीछे न-जाने क्या हो। पीछे न-जाने क्या विघ्न उपस्थित हो जाय।

२० पछै घोडो दौडो 'र घोडी दौडो

पीछे चाहे घोड़ा दौड़े और चाहे घोड़ी दौड़े

पीछे चाहे जो हो।

२१ पड गया खल्ला, उड गयी खेह

फूल फड़क-सी हो गयी देह

जूते पड़ गये, शरीर परकी धूल उड़ गयी और शरीर ताजे फूल
(निर्मल और हलका) हो गया

(१) उस व्यक्ति पर जो दण्ड पानेसे मार्ग पर आता है।

(२) निर्लज्ज व्यक्ति पर, जो दण्ड पाने पर भी लज्जित नहीं होता, उ
बनाता है।

२२ पड़तां-पडतां ही असवार हुया करै

गिरते-गिरते ही सवार होते हैं (सवारी सीखनेके लिये पहले
गिरना पड़ता है तब होशियारी आती है।

आदमी गलतियां करता करता ही होशियार होता है। आदमी क
उठाकर ही निपुण होता है।

२३ पड़ना पाटी फोड वतरणा

प्रतिपदाको पट्टी और वतरना (स्लेट और पेंसिल) फोड़ दो

प्राचीन प्रथाकी पाठशालाओंके छात्रोंकी उक्ति, जिनमें प्रतिपदाको छुट्टी
है और बालकोंको पढ़ना नहीं पड़ता।

३६ परणीजै जिको गायीजै

जिसका विवाह होता है उसीके गीत गाये जाते हैं

जिसका प्रसंग होता है उसीका बखान होता है।

३७ परणीज्या नहीं तो जान तो गया हा

ब्याहे नहीं गये तो बरातमें तो गये थे

काम स्वयं नहीं किया तो करता हुआ किया जाता हुआ देखा तो है (ज
कोई किसीसे कहे कि तुम क्या जानो, तुमने काम कभी किया तो है ह
नहीं, तब वह इस प्रकार उत्तर देता है)।

३८ परमात्मा गिंजैने नख को दिया नी

परमात्माने गंजेको नाखून नहीं दिये (नहीं तो वह अपना ही सिर खुज
डालता)

परमात्माने नीच या दुष्ट व्यक्तिको बुराई करनेके साधन नहीं दिये, नहीं त
वह अपना और पराया सबका नाश कर डालता।

३९ परमात्मा घण-देवो है

परमात्मा अधिक देनेवाला है

४१ परायी थाळीमें घी घणो दीसै

परायी थालीमें घी ज्यादा दिखायी पड़ता है

दूसरेका लाभ या धन या सुख सदा अपनेसे अधिक जान पड़ता है

४२ परायी पीड़ परदेस बराबर

दूसरेका दुख परदेशके बराबर

परायी पीड़का ध्यान किसीको नहीं होता ।

४३ पराधीन सपनै सुख नाहीं

पराधीनको स्वप्नमें भी सुख नहीं

पराधीनताकी, तथा नौकरी आदि पराधीनतावाले पेशोंकी, निंदा

४४ पराया घर ऊनै पाणीसूं बाळै

पराये घरोंको गर्म पानीसे जलाता है

किसीके कुकर्मोकी प्रशंसा करके उसे वैसा करनेके लिअे प्रोत्साहित

४५ पराया पूत कमा'र थोडा ही दे

पराये पूत कमाके थोड़ेही देते हैं (अर्थात नहीं देते)

(१) दूसरोंसे काम करानेकी आशा नहीं करनी चाहिअे ।

(२) बुढ़ापेमें अपनी संतान ही कमाकर खिलाती है ।

(३) गोद लिये हुअे पुत्र पर ।

४६ परायै कांटै घी घणो लखायीजे

परायी थालीमें घी अधिक दिखायी पड़ता है

(देखो ऊपर कहावत नं० ४१)

४७ परायै दुख दूबळा थोड़ा, परायै सुख दूबळा घणा

पराये दुःखसे दुबले होनेवाले लोग थोड़े हैं, पर पराये सुखसे दुबले बहुत हैं

पराये दुःखकी चिन्ता करनेवाले थोड़े, पर पराये सुखसे जलने वाले मिलते हैं ।

४८ परायै धन माथै लिछमीनाथ

पराये धन पर लक्ष्मीनाथ

दूसरेके धनके बल पर, या दूसरेके धनको पाकर, दातारगी दिखानेवाले पर।

मिलाओ—माले मुफ्त दिले बेरहम।

४९ परायो माथो लाल देख'र आपरो माथो थोड़ो ही फोड़ीजै

पराया माथा लाल देखकर अपना माथा थोड़े ही फोड़ा जाता है (ताकि वह भी लाल हो जाय)

हानि उठाकर दूसरोंकी बराबरी नहीं की जा सकती।

५० पहरणनै तो घाघरो ही कोनी, नांव सिणगारी

पहननेको तो लहगा तक नहीं, और नाम है सिनगारी (शृंगार की हुई)

जब नामके अनुसार गुण न हो तब।

५१ पहली आवै जकैरी गोरी गाय

जो पहले आवेगा उसकी गोरी गाय होगी

(१) दौड़के खेलमें दौड़नेवालोंको उत्साहित करनेके लिये कही जाती है

(२) जो पहले पहुंचता है वही लाभ उठाता है।

५२ पहली घरमे, पछै मसीतमें

पहले घरमें, फिर मसजिदमें (दिया जलाया जाता है)

(१) पहले घरकी जरूरतें पूरी करके तब मन्दिर आदिमें दान देना चाहिये। घरवालोंका ध्यान रखकर परोपकार करना चाहिये।

(२) कोई काम घरमें करके पीछे बाहर करना चाहिये। पहले घरका या अपना करना चाहिये पीछे दूसरों का।

मिलाओ—Charity begins at home.

५३ पहली धाप'र हंसलै पछै बात करज्यै

पहले पेट भरकर हंस ले, फिर बात करना

जो बात करते-करते हंसता जाय उसके प्रति।

५४ पहलो पेट, पछै हेत

[illegible]

५५ पहलो पेट पूजा, पछै काम दूजा

पहले पेट पूजा और बादमें दूसरे काम (भावार्थ)

(१) सब काम छोड़कर भोजन करना चाहिये।

(२) पेट भरने पर ही दूसरे काम हो सकते हैं।

मिलाओ — शतं विहाय भोक्तव्यं।

५६ पहली रहती यूँ, तो सबलो आतो क्यूँ ?

पहले ही यों रहती तो सबला क्यों आता ?

पहले ही सावधान रहे तो फिर हानि नहीं होती।

५७ पहली बिसमिल्लामें ही खोट

पहले बिसमिल्लामें ही गलती

जब कामके शुरूमें ही भूल हो तब।

मि०—(१) बिसमिल्लाह ही गलत

(२) श्रीदाता धनवैमें ही खोट

(३) श्रीगणेशाय नमः में ही दबको।

५८ पहली सोच-विचार कर पीछै कीजै कार

पहले सोच-समझकर बादमें काम करना चाहिये।

५९ पहलो सुख नीरोगी काया

शरीरका नीरोग होना सबसे पहला सुख है

स्वास्थ्यकी प्रशंसा।

मि०—(१) शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्

(२) धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्

(३) Health is wealth

६० पंच परमेश्वर

पंच परमेश्वरके समान हैं।

६१ पंचांमें परमेश्वरो वास है

पंचोंमें परमेश्वरका निवास है।

मि०—(१) पंच जहां परमेश्वर।

(२) पंचनके मुख है परमेश्वर।

६२ पंसेरीमें पांच सेररी भूल

पंसेरीमें पांच सेरकी भूल

बहुत बड़ी भूल।

६३ पंसेरीमें पांच सेररो धोखो

पसेरीमें पांच सेरकी गड़बड़ या भूल

(ऊपरकी कहावत देखो)

६४ पाका पान तो खिरणरा ही है

पके हुओ पत्ते तो टूटनेको ही हैं

बूढ़े आदमी मरनेको ही हैं। बूढ़ोंके मरनेकी ही अधिक संभावना होती है।

६५ पाकै घड़ैरै कानो का लागै नी

पके घड़ेके ओठ नहीं लगता

पकी उमरमें सुधार नहीं हो सकता।

६६ पागड़ो गयो आगड़ो. सिर सलामत चायीजै

पगड़ी गयी दूर. सिर सलामत चाहिअे

(१) थोड़ी हानि हुई तो कुछ परवाह नहीं, बच तो गये।

(२) लज्जा गयी तो कोई परवाह नहीं, सिर तो बच गया (निर्लज्जकी उक्ति)।

५४ पहली पेट, पछै सेठ

जिस नौकरीमें पेट नहीं भरता वह नौकरी नहीं की जा सकती।

५५ पहली पेट पूजा, पछै काम दूजा

पहले पेट पूजा और बादमें दूसरे काम (करना चाहिये)

(१) सब काम छोड़कर भोजन करना चाहिये।

(२) पेट भरने पर ही दूसरे काम हो सकते हैं।

मिलाओ - शतं विहाय भोक्तव्यं।

५६ पहली रहती यूँ, तो सबलो जातो क्यूं ?

पहले ही यों रहती तो सबला क्यों जाता ?

पहले ही सावधान रहे तो फिर हानि नहीं होती।

५७ पहली बिसमिल्लामें ही खोट

पहले बिसमिल्लामें ही गलती

जब कामके शुरुमें ही भूल हो तब।

मि०—(१) बिसमिल्लाह ही गलत

(२) श्रीदाता धनकैमें ही खोट

(३) श्रीगणेशाय नमः में ही हबको।

५८ पहली सोच-विचार कर पीछै कीजै कार

पहले सोच-समझकर बादमें काम करना चाहिये।

५९ पहलो सुख नीरोगी काया

शरीरका नीरोग होना सबसे पहला सुख है

स्वास्थ्यकी प्रशंसा।

मि०—(१) शरीरमाद्यं खलु धर्म-सा

(२) धर्मार्थकाममो

(३) Health i

७२ पाणीपर पथ्थर तिरै

पानी पर पत्थर तैरते हैं

असंभव काम संभव होता है।

७३ पाणी पहलां पाळ बांधे

पानी आनेके पहले पार बांधना है

(देखो ऊपर कहावत नं० ७१)

७४ पाणी पाणीरी ढाळ बहै

पानी अपनी ढाल पर बहता है

काम अपने ढंगसे होता है।

७५ पाणी पीजै छाण, गुरु कीजै जाण। (पाठान्तर - सगा, सगपण)

पानी छानकर पीना चाहिये, गुरु (पाठान्तर-सगाई, संबंध) परीक्षा करके करना चाहिये।

७६ पाणी पीजै छाणियां, कीजै मनरा आणियां

पानी छानकर पीना चाहिये, काम मनके अनुकूल करना चाहिये।

७७ पाणी पीणा छाणियां, काम करणा मनरा आणियां

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

७८ पाणी पी र जात नहीं पूछणी

पानी पीकर जाति नहीं पूछनी चाहिये।

काम करनेके बाद उसका विचार नहीं करना चाहिये।

७९ पाणी पी र मूण फोड़े

पानी पीकर मूण फोड़ता है

बड़े भारी कृतघ्न थे।

६७ पागड़ी गयी भैंसरी गांठमें

पगड़ी गयी भैंसकी गांठमें

रिश्वतखोर हाकिमके लिअे जो दोनों ओरसे रिश्वत लिया है और ज्यादा देनेवालेको जिताता है।

टिप्पणी—इस पर अेक कहानी है अेक रिश्वत खानेवाला हाकिम था। अेक पक्षने उसको रिश्वतमें पगड़ी भेंट की। दूसरे पक्षको जब यह बात मालूम हुई तो वह भैंस भेंट कर आया। हाकिमने भैंस देनेवालेके अनुकूल फैसला दिया। तब पहले पक्षवाला हाकिमके पास गया और उसने कहा—मेरी पगड़ी-का क्या हुआ? हाकिमने उत्तर दिया--पगड़ी गयी भैंसकी गांठमें।

६८ पाड़ोसीरै बरससी तो छांट्यां अठैई पड़सी

पड़ोसीके यहाँ मेह बरसेगा तो बूंदे यहाँ भी गिरेंगी

पड़ोसी या मित्रको लाभ होगा तो कुछ लाभ हमें भी होगा।

६९ पाड़ोसण छड़ै खीच, धमको पड़ै म्हारै सीस

पड़ोसिन खिचड़ा छड़ती है, धमाका मेरे सिर पड़ता है

टि०—छड़ना=ऊखलमें डालकर मूसलसे कूटना।

७० पाणी आडी पाळ बांधै

पानीके सामने पार बांधता है

पहलेसे उपाय करता है।

पहलेसे बहानेबाजी करता है।

७१ पाणी आडी पाळ पहली बांधै

पानीके आगे पार पहले बांधता है

काम न करना पड़े इसके लिअे पहलेसे बहानेबाजी करता है।

८५ पाद्णरी पोंच नहीं, गोळंदाजांमें चेरो करो

शक्ति पादनेकी भी नहीं और कहता है कि गोलंदाजोंमें नौकर रख लो

थोड़ी शक्तिवाला बहुत बड़ा काम हाथमें लेना चाहे तब।

८६ पाद्यां ही सर ज्याय तो झाड़ै कुण जाय ?

पादनेसे ही काम बन जाय तो पाखाने कौन जावे ?

साधारण प्रयत्नसे काम चल जाय तो बड़ा परिश्रम कौन करे ?

८७ पाद्दो, अे चिड़्यां ! सावण आयो

हे चिड़ियों ! पादो, सावन आ गया

जब किसी अयोग्य व्यक्ति की मनचाही हो जाय तब व्यंगमें।

८८ पापड़ खा'र पादमणी हुई है

पापड़ खाकर पद्मिनी बनी है।

थोड़ा-सा थोथा दिखावा करके गुणवान बननेका आडंबर करना।

८९ पापड़ तो घणा ही पोट्या हा* [पाठान्तर-पोया हा, बेल्या हा]

पापड़ तो बहुत-से पोटे थे (पोये थे, बेले थे)

प्रयत्न तो बहुत तरहके किये। तरह-तरहके काम किये पर किसीमें सफलता नहीं मिली।

९० पाप फूटै पण फूटै

पाप फूटता है और फूटता है

(१) पाप अवश्य प्रकट होता है।

(२) पापका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

मिलाओ—(१) पाप पहाड़ पर चढ़के पुकारै।

(२) पाप उभरै पर उभरै।

(३) Murder is out.

८० पाणी पीवै छाण, जीव मारै जाण

जो पानीको छानकर पीते हैं वे जानबूझकर जीवोंको मारते हैं

जैनियों पर, जो जीव-हत्यासे बहुत डरते हैं।

८१ पाणीमें मीन पियासी*

पानीमें रहकर भी मछली प्यासी है

सब कुछ होते हुअे भी उसका लाभ न उठावे, या उठा पावे, तब।

८२ पाणीरी पीक दुकारमें देखो

पानीकी चाह पानीका अकाल पड़नेपर देखी जाती है (तभी पानीका मूल्य लोग समझते हैं)

वस्तुके अभावमें उसका मूल्य मालूम होता है।

८३ पाद, छींक, डकार—तीनूं गुणाकार

पाद, छींक, और डकार ये तीनों गुणकारी होते हैं।

८४ पादण घर कस्तूरी किता'क दिन ?

पादनेवालीके घर कस्तूरी कितने दिन (काम दे) ?

दुष्ट पर सदुपदेशका प्रभाव अधिक नहीं रह सकता।

---

* यह कहावत कबीरके इस पदकी प्रथम पंक्ति है—

पाणीमें मीन पियासी।

मोहि सुण-सुण आवै हांसी।

घरमें वसत धरी नहिं सूझै, बाहर ध्याजन जासी

म्रिगकी नाभि मांहि कसतूरी, बन-बन फिरत निरासी

आतम-ग्यान बिना सब सूनो, क्या मथुरा, क्या कासी

कहै कबीर, सुणो भाइ साधो, सहज मिलै अविनासी

९७ पाली ! थारा भाग, धना भगत धाड़ा करै !

हे पाली ! धन्य तेरे भाग, जो धना भक्त तुझमें डाके डालते हैं !

९८ पालीवाळो पेम, नकारैआळो नेम

पालीवाला पेम, नकारवाला नेम
जो कभी इनकारका शब्द मुंहसे नहीं निकालता उसपर। पालीमें पेमसिंह नामका सरदार था जो नकार नहीं करता था।

९९ पाळ जकैरो धरम

जो पालता है उसका धर्म है
(१) धर्मका पालन करनेको सब स्वतंत्र हैं, सब कोई धर्म कर सकते हैं।
(२) धर्मका पालन करनेवालेको ही धर्मका फल मिलता है।

१०० पावणा जीमता ही जाय, रांडां रोवती ही जाय

पाहुने जीमते ही जाते हैं, रांडें रोती ही जाती हैं
लोग विरोध करते रहेंगे और काम होता रहेगा।

१०१ पावणा जीमता ही जासी, रांडां रोवती ही रहसी

पाहुने जीमते ही जायगे और रांडे रोती ही रहेंगी
(ऊपरवाली कहावत देखो)

१०२ पावणो प्यारो, पण अेक-दो दिन

पाहुना प्यारा होता है, पर अेक-दो दिन
पाहुना ज्यादा दिन रहे तो फिर अच्छा नहीं लगता।

१०३ पांच पंच मिळ कीजै काज, हारे-जीते नांही लाज

कई-अेक आदमियोंको मिलकर काम करना चाहिअे क्योंकि मिलकर काम करनेसे सफलता मिलती है और यदि बदनाम भी मिले तो किसी अेकके सिर बदनामी नहीं आती।

१०४ पांचांमें तीन कढ़ाऊं और दोयांमें और राखूं

पांचोंमें तीन उठा लूं और बाकी दोमें हिस्सा रखूं

राणी और बालक पुत्रके लिये जो यह कहावत कहते

१०५ पांचरो, मालक पचासरो गुमास्तो

पांच पैसोंका मालिक और पचास पैसोंका गुमाश्ता

मालिक छोटी रकमका हो और नौकर बड़ी रकमका हो

मालिकको आज्ञा पालन करनी पड़ती है।

१०६ पांचरो लाभ, पनरैरो खरच

पांचका लाभ, पंद्रहका खर्च

आयसे अधिक व्यय।

१०७ पांच-सातरी लाकड़ी, अेक जणैरो बोझ

पांच या सातकी अेक-अेक लकड़ी मिलनेसे अेकका भारा पूरा

सबकी थोड़ी-थोड़ी सहायतासे काम बन जाता है।

[नीचे कहावत नं० १११ देखिये]

१०८ पांचांमें परमेश्वररो वास

पांच आदमियोंमें परमेश्वरका निवास होता है।

(ऊपर कहावत नं० ६१ देखिये)

१०९ पांचांमें पंचांरो वास

पांच आदमियोंमें पंचोंका निवास होता है

पांच आदमी मिल जाते हैं तो वे पंचोंके बराबर हैं।

११० पांचां मांयसूं तीन रुठावणा'र दोमें पांती राखणी

पांचमेंसे तीन उठा लेना और बाकी दोमें भी हिस्सा रखना।

(ऊपर कहावत नं० १०४ देखिये)

१२१ पीससी जको पिसाई लेसी

जो पीसेगा वह पिसाई (पीसनेकी उजरत) लेगा

(१) जो काम करेगा वह मजदूरी लेगा (मुफ्त नहीं करेगा)।

(२) जो काम करेगा उसीको मजदूरी मिलेगी (दूसरेको नहीं)।

१२२ पीढारैमें छाणाही नीकळै

पिढारेमें कंडे ही निकलेंगे (और कुछ नहीं निकल सकता)

बुरे आदमीकी प्रत्येक बात बुरी होती है।

१२३ पीपळांनै पोखो

पीपलके पेड़ोंको पोषण (जल-सिंचन)

जब किसी भोजनभट्टको बड़े समयके पश्चात भोजनका निमंत्रण मिले तब व्यंगमें।

१२४ पींवतां-पींवतां समंदर ही खूट ज्याय

पीते-पीते समुद्र भी समाप्त हो जाता है

केवल खर्च करते रहनेसे बहुत बड़ी संपत्ति भी चुक जाती है।

१२५ पुटियो जाणै आभो म्हारै ही ताण ऊभो है

पुटिया समझता है कि आकाश मेरे ही बल पर ठहरा हुआ है (पुटिया ओक पक्षीका नाम है जो अपने पैर आकाश की ओर रखता है)

जब कोई (अयोग्य) व्यक्ति समझे कि काम उसके सहारेसे ही हो सकता है।

मि०—कुत्तो जाणै गाडो म्हारै ही ताण चालै।

१२६ पुस्करणा लाल फौज है

पुष्करणे लाल फौज हैं

पुष्करणे ब्राह्मण वीर और साहसिक होते हैं।

१२७ पुराणो देगचो, कळीरी भड़क

पुराना देगचा, और कलईकी तड़क-भड़क

जब कोई बूढ़ा या बुढ़िया बनाव-शृंगार करे तब हंसीमें कही जाती है।

पुत्र सपूत होगा तो स्वयं कमा लेगा, कपूत होगा तो जोड़ा हुआ भी उड़ा देगा। इसलिओ दोनों अवस्थाओंमें धन जोड़ना व्यर्थ है।

१३३ पेट थोथो है

पेट थोथा है (क्योंकि चाहे जितना भरो कभी नहीं भरता)

पेटको भरना पड़ता है इसीलिओ मनुष्य विविध प्रकारके कष्ट सहता है और पराधीनता भोगता है।

१३४ पेट पापी है

क्योंकि सारे पाप पेट भरनेके लिओ ही किये जाते हैं।

मिलाओ—बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।

१३५ पेट-भर्‌योरी बातां है

पेट भरेकी बातें हैं

पेट भरनेपर ही सब बातें सूझती हैं, भूखेको कोई बात अच्छी नहीं लगती।

१३६ पेटमें ऊँदरा कूदे है

पेटमें चूहे कूदते हैं

बहुत भूख लग रही है।

१३७ पेटमें ऊँदरा लड़े

पेटमें चूहे लड़ते हैं।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१३८ पेटमें ऊँदरा धमचो करै

पेटमें चूहे खेल रहे हैं (धमा-चौकड़ी मचा रहे हैं)

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१३९ पेटमें मिनकड़ा लड़े

पेटमें बिल्लियां लड़ती हैं

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१४६ पोसाळमें कांगसिया जोवै

पाठशालामें कंघे ढूंढ़ता है (कंघोंका पाठशालासे क्या संबंध ?)

किसी चीजको ऐसी जगह ढूंढ़ना जहांसे उसका कोई संबंध नहीं।

१४७ पोपांबाई, राम-राम। नांव कियां जाण्यो ? बणियारो देख'र

कोई व्यक्ति-पोपां बाई, राम-राम !

पोपांबाई—तुमने मेरा नाम बिना बताये कैसे जान लिया ?

वह व्यक्ति—तुम्हारी शकल देखकर।

जिसकी शकल-सूरतसे ही बेवकूफी टपकती हो उसके लिये।

१४८ प्राणीरै लारै दाणा वीखरग्या

प्राणीके पीछे दाने बिखर गये।

मृतकके पीछे मौसर करने पर।

१४९ प्रीत छिपायी ना छिपै

प्रेम छिपाया नहीं छिपता।

१५० प्रीत छिपायोड़ी को छिपै नी

प्रीति छिपायी नहीं छिपती।

---

१४० पेटमें छुरी-कतरणी है

पेटमें छुरी-कतरनी हैं।

मनमें कपट रखता है; मनमें दुष्टता रखता है।

१४१ पेटमें बड़'र कुणी को देख्यो नी

पेटमें घुसकर किसीने नहीं देखा है

किसीके हृदयमें क्या है यह जानना संभव नहीं।

हृदयके कपटका पता नहीं चल सकता।

१४२ पैंडो कोसरो ही बुरो

मार्ग कोसका भी बुरा

चलना चाहे एक ही कोसका हो तो भी कष्टदायक होता है।

१४३ पो खालड़ रो (पाठान्तर — पो खालड़ीरो खो)

पौष महीना चमड़ेका दुश्मन है

जाड़ेमें हाथ-पैर आदि फट जाते हैं। पौषमें शीत बहुत पड़ता है।

१४४ पोटो पड्यो जको रेत ले'र ही उठसी

पोटा (गोबर) गिर गया सो रेतको साथ लेकर ही उठेगा (धूल पर गिरेगा तो उसके धूल लग ही जायगी जो उठाते समय साथ उठ आयगी)

कुछ-न-कुछ नुकसान होता है।

१४५ पोथा मे थोथा

१५८ फीचाऊ पिणियारी गावै है (पाठान्तर—पग)

टांगें 'पनिहारी' गाती हैं।

बहुत थक गया है।

टि० —'पणिहारी' अेक गीतका नाम है।

१५९ फूटा भाग फकीरका भरी चिलम ढुळ ज्याय

फकीरके फूटे भाग कि भरी हुई चिलम लुढ़क जाती है

भाग्य विपरीत होनेसे बना-बनाया काम बिगड़ जाता है।

१६० फूटी हांडी अवाजसूं पिछाणीजै

फूटी हांडी आवाजसे पहचानी जाती है

बोलने पर बुरे आदमीका पता चलता है।

१६१ फूहड़ करै सिणगार मांग ईंटांसूं फोड़ै

फूहड़ जब शृंगार करती है तो ईंटोंसे मांगको फोड़ती है

फूहड़ स्त्री पर।

१६२ फूहड़ रांडरै हुई सवारी, कुत्ता चाट्या रेवाड़ो

फूहड़ स्त्रीके घर भोजनकी तैयारी हुई तो कुत्ते मुंह-के-मुंह चले

फूहड़ पर।

१६३ फूहड़रा मैल फागणमें उतरै

फूहड़के मैल फागनमें उतरते हैं

फूहड़ सालभर नहीं नहाती।

१६४ फूफाजी रूसग्या तो भुवाजीनै राखस्यां

फूफाजी रूठेंगे तो फूफीजीको रख लेंगे (और क्या करेंगे?)

कोई नाराज होगा तो क्या कर लेगा!

फ

१५१ फाट्या कपड़ा बूढा माईतांरी लाज नहीं करणी

फटे कपड़ों और बूढ़े मां-बापकी लाज नहीं करना चाहिये।

१५२ फाट्या कपड़ा मत देखो, घर दिल्ली है

फटे कपड़ोंको ओर मत देखो, इसका घर दिल्लीमें है (घरकी ओर देखो)।

१५३ फाट्या कपड़ा मत देखो, जातरी ईंदो है

फटे कपड़े मत देखो, जातकी ईंदो है (जातिकी ओर देखो)।

टिप्पणी—ईंदा पड़िहार (प्रतीहार) राजपूतोंकी अेक शाखा है।

१५४ फाड़नवाळैने सीवणवाळो को पूगै नी

फाड़नेवालेको सीनेवाला नहीं पहुंच सकता (बराबरी नहीं कर सकता)

काम बनता धीरे-धीरे है, पर बिगड़ते देर नहीं लगती।

१५५ फावड़ैरो नांव गुलसफो

फावड़ेका नाम गुलसफा

आशासे बहुत थोड़ी प्राप्ति हो तब।

१५६ फिरै सो चरै, बंध्यो भूखो मरै

फिरता है सो चरता है

घर बैठे पेट नहीं भरता। घर बैठे रोजी नहीं मिलती।

१५७ फिरयां-घिरयांसूं आदमी हुवै

फिरने-घिरनेसे आदमी बनता है

भ्रमणसे अनुभव बढ़ता है।

ब

१६८ बकरी दूध देवै पण मींगण्यां रळा'र देवै

बकरी दूध देती है पर मेंगनी मिलाकर देती है

(१) जब कोई व्यक्ति अनिच्छासे काम करे।

(२) दुष्ट काम करते हैं पर साथमें थोड़ी-बहुत हानि भी कर देते हैं।

१६९ बकरी मींगणी देवै पण रोय-रोय देवै

बकरी मेंगनी देती है पर रो-रोकर देती है

जब कोई अनिच्छा पूर्वक काम करे।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१७० बकरीरै मूंढमें मतीरो कुण रहण दे ?

बकरीके मुंहमें तरबूज कौन रहने देता है ?

गरीबको कोई लाभ नहीं उठाने देता, गरीबके पास कोई अच्छी चीज नहीं रहने देता।

१७१ बकरीरो दूध नहीं देखणो, लड़ाक देखणो

बकरीका दूध नहीं देखना, पर यह देखना कि वह लड़ाकू है या नहीं

झगड़ालू व्यक्तिके लिये व्यंगमें।

१७२ बकरी रोवै जीवनै, कसाई रोवै मांसनै

बकरी रोती है अपने जीवको, कसाई रोता है मांसको

सबको अपनी-अपनी पड़ी है, सब कोई अपने ही स्वार्थको देखते हैं, सबका ध्यान अपनी ही हानिकी ओर रहता है, दूसरेकी हानिकी ओर नहीं।

१६५ फूल नहीं तो फूलरी पांखड़ी
फूल नहीं तो फूलकी पंखुरी
बहुत नहीं तो थोड़ा ही सही।

१६६ फूलरी लागी पांखड़ी
फूलकी लगड़ पंखुरी ।

१

१६७ फेरांरो दोस मती लाग्या
फेरोंका दोष मत लगना
फेरोंका दोष लगना=फेरों यानी सप्तपदीके बाद ही विधवा हो जाना

१८० बाई कहतां रांड आवै

बाई कहते रांड आता है ; बाई कहना चाहते हैं पर मुंहसे निकलता है रांड
जिसे बोलनेका शऊर न हो उस व्यक्तिके लिये।

१८१ बाईजी मूंढेरा भारी घणा, सहररा लोग निमाणा* घणा
(पाठान्तर—मसकरा)

बाईजी मुंहकी भारी बहुत हैं और शहरके लोग ढीठ बहुत हैं
किसीकी सज्जनताका दूसरों द्वारा अनुचित लाभ उठाया जाय तब।

मुंहका भारी=जो सङ्कोचके कारण बोल न सके या उत्तर न दे सके।

१८२ बाई बत्तीसो, बीरा छत्तीसो

बहनमें बत्तीस कुलक्षण, तो भाईमें छत्तीस
जब अेक व्यक्ति दूसरेसे बुराईमें बढ़कर हो तब।

१८३ बाई-बाई कहता रांड कहण लाग जावै

बाई-बाई कहते-कहते रांड कहने लगते हैं
(ऊपर कहावत नं० १८० देखो)
मि० — क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः।

१८४ बाईरा पूल बाईरै बटै

बाईके पूल बाईके बटते हैं
(१) बहन-बेटीका धन बहन-बेटीको ही दे दिया जाता है
(२) जो वस्तु जिस व्यक्तिसे मिले वह वस्तु उसी व्यक्तिको दे दी जाय या उसीके निमित्त लगा दी जाय (परन्तु गांठसे कुछ न देना पड़े) तब।

१७३ बकरैरी मा कद-ताणी खैर मनासी

बकरेकी माँ कबतक खैर मनावेगी ; (वह तो कभी-न-कभी मारा ही जायगा)

अेक-दो बार आपत्ति टल भी गयी तो क्या हुआ, अेक-न-अेक दिन तो उसकी लपेटमें आना ही होगा।

१७४ बकरैरी मा किता थावर टाळसी

बकरेकी मा कितने शनिवार टालेगी (अेक-न-अेक शनिवारको तो वह मारा ही जायगा)

(ऊपरकी कहावत देखो)

१७५ बगलमें छोरो, गांवमें ढींढोरो

बगलमें लड़का, गांवमें ढिंढोरा

चीज पासमें रखी हो और उसे सब जगह ढूंढना।

१७६ बजरंग बीरका सोटा, फूट जाय भंगीका लोटा

भंगी=भंगेड़ी।

१७७ बळ आगे बुध बापड़ी

बलके आगे बुद्धि बेचारी है

बलके सामने बुद्धि काम नहीं देती।

१७८ बळती लायमें कूदै

जलती आगमें कूदना है

जानको जोखिममें डालना है।

१७९ बळदोड़ी बाटी ही कोनी बपड़ीमें नी

बनी हुई रोटी भी नहीं पलटी जाती

बहुत आसान काम भी नहीं किया जाता (आलसीके लिये)।

ाग पसारै वड़ै घरमें

र टांगें फैलाता है उस घरमें

ाकार जमानेका प्रयत्न करना ।

परायी चीज पर भी अधिकार जमानेकी इच्छा करना ।

कै डणियारै है

ानों अेक ही आकृतिके हैं

चालै, बैठो ही घर घालै

न चलता है, बैठा-बैठा ही घरका नाश करता है

ा बैठा-बैठा खाता है उसके लिअे ।

ृतोंके लिअे व्यंगमें ।

.ह छूटै, नै बळद वह छूटै

टकर ही रहता है, बैल चलकर ही रहता है

डरी बात करनेसे नहीं हिचकिचाता, बैल परिश्रमसे नहीं चूकता ।

ग, कुत्ता, वाणिया जात देख गुर्राय

ा, कुत्ते और बनिये अपनी जातिवालोंको देखकर गुर्राने लगते हैं

ण और बनिये हमपेशे लोगोंको देखकर ईर्षा करते हैं, कुत्ता दूसरे कुत्तेका

नहीं होता ।

, हाथी, नहीं जातके साथी ।

तीनूं जात कुजात

कुत्ते तीनों कुजात जातके हैं

ो दुष्ट होते हैं ।

१८५ [illegible]

[illegible]

(१) [illegible]

[illegible]—

[illegible]

[illegible]

१८६ बांदरा मदारेरा करै

बांई (देखो) के मदारेरा बनाये हैं

ओकको लेकर दूसरेको पुकारना।

मि०—रामकी टोपी श्यामके सर।

१८७ माटो खावैने घूस भावै

मोटी खाते हुओको घूस आती है (मस्त खानेमें अटक आता है)

खाते-पीतेको कुबुद्धि उपजती है। जब कोई आराममें रहता हुआ भी अैसा काम कर बैठे जिससे कष्ट खड़ा हो जाय।

१८८ बांध्या बळद ही को रेवै नी

बंधे हुओ बैल भी नहीं रहते

मूर्ख भी बंधनमें रहना नहीं चाहता।

१८९ बादस्यारी बेटीसूं फकीररो ब्यांव

बादशाहकी बेटीसे फकीरका विवाह

हिम्मत और मेहनतसे कठिन-से-कठिन काम भी बन जाता है

१९० बाप-पीटो कहो भावैं मा-पीटो कहो, बात ओक-री-ओक

बाप-पीटी कहो चाहे मा-पीटी कहो, बात ओक-की-ओक

दोनों ओक ही बात हैं। ओक ही बातको घुमा-फिराकर कहा जाय तब।

२०३ बाबो बैठो इयै घरमें, टांग पसारै बै घरमें
बाबा बैठा है इस घरमें, पर टांगें फैलाता है उस घरमें
दोनोंपर अेक साथ अधिकार जमानेका प्रयत्न करना।
अपनी चीजके साथही परायी चीज पर भी अधिकार जमानेकी इच्छा करना।

२०४ बाबो'र बहूजी अेकै डणियारै है
बाबा और बहूजी दोनों अेक ही आकृतिके हैं
दोनों अेक-से हैं।

२०५ बाबो हालै न चालै, बैठो ही घर घालै
बाबा हिलता है न चलता है, बैठा-बैठा ही घरका नाश करता है
(१) जो घरमें बैठा-बैठा खाता है उसके लिअे।
(२) साधु-महंतोंके लिअे व्यंगमें।

२०६ बामण कह छूटै, नै बळद वह छूटै
ब्राह्मण कहकर ही रहता है, बैल चलकर ही रहता है
ब्राह्मण खरी बात कहनेसे नहीं हिचकिचाता, बैल परिश्रमसे नहीं चूकता।

२०७ बामण, कुत्ता, बाणिया जात देख गुर्राय
ब्राह्मण, कुत्ते और बनिये अपनी जातिवालोंको देखकर गुर्राने लगते हैं
ब्राह्मण और बनिये हमपेशे लोगोंको देखकर ईर्षा करते हैं, कुत्ता दूसरे कुत्तेको देखकर गुर्राता है।
इन लोगोंमें जाति-प्रेम नहीं होता।
मि०—बामन, कुत्ते, हाथी, नहीं जातके साथी।

२०८ बामण, नाई, कूकरा तीनूं जात कुजात
ब्राह्मण, नाई और कुत्ते तीनों कुजात जातके हैं
ब्राह्मण, नाई और कुत्ते दुष्ट होते हैं।

१९८ बावोजी घोर जोगा, बीबीजी सेज जोगा

बाबाजी कब्रके योग्य, और बीबीजी सेजके योग्य

(१) वृद्ध पुरुष और युवा स्त्रीके अनमेल योगके लिअे।

(२) अनमेल संयोगके लिअे।

१९९ बावोजी जीम्यां पछै ठीया रहसी

बाबाजीके भोजन कर लेनेके बाद चूल्हेकी ईटें बाकी बचेंगी

अभी काम कर लेना चाहिअे, पीछे नहीं होगा।

२०० बावोजी छानमें बैठा गोधा नाथै

बाबाजी छप्परमें बैठे साड़ोंको नाथते हैं

समय व्यतीत करनेको व्यर्थके कार्य करनेवालेके लिअे।

२०१ बावोजी-रा-बावोजी, तरकारी-री-तरकारी

बाबाजी-के-बाबाजी और तरकारी-की-तरकारी

(१) आदर भी करना और अवज्ञा भी करना।

(२ आदर भी करना और साथ ही हानि भी पहुंचाना।

(३) जब अेक ही चीज दोका काम दे।

कहानी—

अेक व्यक्तिने किसी बाबाजीसे उनका नाम पूछा। बाबाजीने बताया—बैंगन तब उस व्यक्तिने यह कहावत कही।

२०२ बावो ढोलरो कांई करै ? फाड़ै

बाबा ढोलका क्या करे ? फाड़ता है

जब किसी व्यक्तिको अैसी वस्तु मिल जाय जो उसके किसी उपयोग की न हो तब।

२१५ बारह माळी तेरह होका

बारह माली, तेरह हुक्के

(ऊपरवाली कहावत देखो)

२१६ बाळक देखै हीयो, बूढो देखै कीयो

बालक हृदय को देखता है और बूढ़ा किये हुए कामको

बालक प्रेम चाहता है और बूढ़ा काम (या चाकरी) को।

२१७ बाळक बादस्या बरोबर हुवै

बालक बादशाहके बराबर होता है (बालक और बादशाह बराबर हैं)

बालक बादशाहकी भांति अपनी मर्जीका मालिक होता है और किसीकी पर्वाह नहीं करता। बालक किसीसे नहीं डरता।

२१८ बारह बरस दिल्लीमें रै'र भाड ही भूंजो

बारह बरस दिल्लीमें रहकर भाड ही झोंका

अच्छे स्थानमें रहकर भी लाभ न उठाना।

२१९ बाळो ठाकर सेविये, ढळती लीजै छांह

बालक ठाकुरकी सेवा करना चाहिए और ढलती छायाको लेना चाहिए।

बालक ठाकुरके राज्यमें इच्छानुसार कार्य कर सकते हैं। छोटेपनसे ठाकुरके साथ रहनेसे उसकी कृपा बराबर बनी रहती है और बहुत समय तक लाभ उठाया जा सकता है। बड़ी उमरका ठाकुर एक तो देवेगा नहीं, दूसरे उसका अनुग्रह रहा तो भी कितने दिन ? इसी प्रकार ढलती छायाके नीचे आश्रय लेने तो वह हटेगी नहीं, बराबर बढ़ती ही जायगी। प्रातः-कालकी चढ़ती छाया धीरे-धीरे घटकर बिल्कुल ही चली जाती है।

२२० बावन तोळा पाव रत्ती

बावन तोले, पाव रत्ती

बिल्कुल ठीक।

२०९ [illegible]

ब्राह्मणको 'कहा' ही बनिया बना जाता है

ब्राह्मण [illegible] होते हैं, पूरे हिसाबको [illegible] नहीं करते, बनियेके साथ रहते हैं और हिसाब करते समय [illegible] 'इसको बनाओ' कहकर छोड़ देते हैं। इसी तरहसे बनिया होनेको बना देता है।

२१० बामणरो जो लाडूमें

ब्राह्मणका जो लड्डूमें

ब्राह्मणको लड्डू प्यारे लगते हैं।

मि० — (१) बामन रीझै लाडुवां, बाकल रीझै भूत।

(२) ब्राह्मणो मधुर-प्रियः।

२११ बायें आवै, फूंकां जाय

हवाके साथ आती है, फूंकके साथ जाती है

जो चीज ठहरती नहीं उसके लिओ।

२१२ बारटजी ! परड़ कित्ता बेत ब्यावै ?

बारहठजी ! परड़ (ओक प्रकारकी सांपिन) कितनी बार बच्चे देती है ?

किसी विषय पर असम्बद्ध आदमीसे प्रश्न करना।

२१३ बारह गाडा बडाई है

बारह गाड़े भरकर अभिमान है

अभिमानी व्यक्तिके लिओ।

२१४ बारह पूरबिया तेरह चौका

बारह पूर्विये तेरह चौके

ओक राय न होने पर।

२८ बांबी कूट्यां सांप थोड़ो ही मरै

बांबीको पीटनेसे सांप थोड़े ही मरता है ?

बाहरी उपचारसे बुराई दूर नहीं होती।

२९ बांह देवै जकैरी बांह नहीं ताड़नी

जो बांह (सहारा) दे उसकी बांह नहीं तोड़ना चाहिअे

जो सहायता दे उसको हानि करना नहीं चाहिअे।

मि०—(१) खावै जको हांडीनै ही फोड़ै।

(२) जिस थालीमें खाय उसीमें छेद करै।

३० बूठैंरी बात तो बटाऊ केवैला

बरसेकी बात तो बटाऊ कहेंगे

किसी स्थानमें वर्षा हुई होगी तो उसका हाल आये हुअे यात्री कह देंगे।

सर्व-प्रसिद्ध बात छिपी नहीं रहती।

३१ बेटी जायी रे जगनाथ ! क्यांरी हेटै आयो हाथ

हे जगनाथ ! जिसके बेटी जनमी उसका हाथ नीचे आ गया

बेटीके बापको वरके पक्षवालोंसे सदा दबकर ही चलना पड़ता है।

३२ बेटी दे'र बेटो लेणो है

बेटी देकर बेटा लेना है (बेटा बनाना है)

जमाईके लिअे।

३३ बेटो घररो आंभ है

बेटा घरका चराग है

बेटेसे ही घर चलता है।

३४ बैठणो छायामें, दूजो भलांई बेर हो

बैठना छायामें ही चाहिअे, चाहे करील ही हो।

२२१ बारै जित्ता मांय

जितने बाहर उतने भीतर

कूटनीतिज्ञ या चालाकके लिअे ।

२२२ बाहर टेढो हो चलै बांबी सीधो सांप

सांप बाहर टेढ़ा चलता है पर बांबीमें सीधा हो जाता है

घरवालोंसे या अपनोंसे कपट नहीं करना चाहिअे ।

२२३ बाहर बाबू सूरमा, घरमें गीदड़दास

जो बाहर लोगोंके सामने बहादुरी बघारे और घरमें जोरूके सामने भीगी बिल्ली बन जाय उसके लिअे ।

२२४ बाहररी पूरी, सहररी आधी

बाहरकी पूरी और शहरकी आधी (बराबर हैं)

परदेशकी पूरी तनख्वाह घरकी आधी तनख्वाहके बराबर है क्योंकि बाहर सभी तरहका खर्च बढ़ जाता है और स्वदेश जैसा आराम भी नहीं मिलता ।

२२५ बांग्योड़ी तो ठेढरी ही खाली को जावै नी

उठायी हुई (लाठी आदि) तो ढेढ़की भी खाली नहीं जाती

अपने संकल्पसे विचलित होनेवाले व्यक्तिके प्रति, उसे उत्साहित करनेके लिअे

२२६ बांडै कुत्तैरा लायमें कांई बळै ?

दुम-कटे कुत्तेका आगमें क्या जले ?

जिसके पास कुछ नहीं उसकी क्या हानि हो सकती है ?

२२७ बीं बातांनै घोड़ा ही को पूगै नी (नावड़ै नी)

उन बातोंको घोड़े भी नहीं पहुच सकते

बीती हुई बात नहीं लौटायी जा सकती ।

२४१ बै दिन गया जद खरेलसी फाख्ता उडांवता हा

वे दिन गये जब खरेलसी फाख्ता उडाते थे

सम्पत्तिके दिन चले गये। अब वह अवस्था नहीं रही।

२४२ बै बातां ही गयी

वे बातें हो गयीं

अच्छे दिन चले गये।

२४३ बैरी गत बा ही जाणै

उसकी गति वही जानता है

परमात्माके लिये। ईश्वरीय लीलाको कोई नहीं जान सकता।

२४४ बैठ्या माळा फेर, मुसाफर ! कदयक हाळो निसर ज्यासी

हे मुसाफिर, बैठा माला फेर, कभी-न-कभी हाल मुड़ेगी ही

हे प्राणी, ईश्वर-भजन करो, कभी भगवानकी कृपा होगी ही और तुम्हारा काम भी बनेगा।

२४५ बो'त गयी, थोड़ी रही, सा भी जावणहार

उम्र बहुत सी बीत चुकी, थोड़ी बाकी रह गयी है, सो वह भी जानेवाली है।

२४६ बोलती बन्द हुगी

बोलती बंद हो गयी

(१) चुप हो जाना पड़ा। जवाब नहीं आया।

(२) सामना करनेका हौसला जाता रहा।

२४७ बो पाणी मुलतान गयो

वह पानी मुलतान गया

वह दम अब नहीं रहा।

२३५ बैठतो वाणियो, उठती माळना

बैठता वनिया, उठती मालिन

दुकान खोलते ही वनिया और बाजारसे उठते समय मालिन सस्ता सौदा देती है।

२३६ बैठां आगै ऊभांरो कांई जोर?

बैठे हुओंके सामने खड़े हुओंका क्या जोर (चलता है)?

जिनने पहले जगह घेर ली उनको खड़े हुए व्यक्ति नहीं उठा सकते।

२३७ बैठी-सूती डूमणी घरमें घाल्यो घोड़ो

बैठी-सोयी डूमनीने घरमें घोड़ा डाल लिया

आराममें रहते हुए आफत खड़ी कर लेना।

२३८ बैठै जोय तो उठावै न कोय

पहले देखभाल करके उचित जगह पर बैठे तो फिर कोई उठाता नहीं।

सभा-सम्मेलनोंमें प्रायः लोग आगे आकर बैठ जाते हैं, पीछे कोई बड़े आदमी आते हैं तो उन्हें उठा दिया जाता है।

२३९ बैठ्यासूं बेगार भली

निकम्मे बैठेसे बेगार अच्छा

नहीं करनेसे कुछ करना अच्छा।

आलसमें दिन बिताना बुरा है।

२४० बैठो मजूर मांदो पड़े

निकम्मा बैठा मजदूर बीमार पड़ता है

निकम्मा बैठना अच्छा नहीं।

२५४ बोळो पूछ बोळीनै, काई रांधां होळीनै ?

बहरा बहरोसे पूछता है कि होलीके दिन क्या रांधें ?

जब दो बहरे इकट्ठे हो जायं।

२५५ बोल्या'र ठाह्ना लाभा

बोले और ठीक पता चला

बोलनेसे योग्यताकी तुरंत परीक्षा हो जाती है।

मि०—मिनखां आही पारख्या बोल्या अर लाध्या।

२५६ बोल्या 'र बोया

बोले और डुबाया

मुखसे बोलते ही बुरी बात निकाली।

*

*

२४८ बोलणसूं सोभ देवे

बोलनेसे गुण मालूम होता है

बोलनेसे मनुष्यकी योग्यताका पता चलता है।

२४९ बोलणसूं सोभ बधे

बोलनेसे गुण बढ़ता है

बोलनेसे ही वास्तविकता प्रकट होती है और सभी लोग कदर करते हैं।

२५० बोलीरा घाव को मिटै नी

बोलीके घाव नहीं मिटते

अनुचित या बुरी बात कहनेका जो बुरा प्रभाव पड़ता है वह कभी दूर नहीं होता। कड़वे वचनोंसे जो चोट पहुँचती है वह कभी नहीं भूलती।

२५१ बोलै जकीरा बोर बिके

जो बोलती है उसके बेर बिकते हैं

(१) प्रयत्न करनेसे काम सिद्ध होता है।

(२) जो बोलता-चालता है उसका काम बन जाता है; जो चुप बैठा रहता है उसका नहीं बनता।

२५२ बोलै जकीरा भूँगड़ा ही बिक ज्याय

जो बोलती है उसके (भुने हुअे) चने भी बिक जाते हैं

बोलने-चालनेसे कठिन काम भी बन जाता है। चुप रहनेसे कुछ नहीं होता।

२५३ बोलै जकैरो गुर मूठो

जो बोले उसका गुड़ झूठा

जब कोई हरगिज न बोले तब कही जाती है।

भ

२५७ भगतणनै कोई किसब सिखावै ?

वेश्याको क्या कसब सिखावे ? (कसब=वेश्यावृत्ति)

(१) जब कोई जानकारको वही बात सिखावे।

२५८ भगतणरो जायो कैनै बाप कैवै ?

वेश्याका जाया किसको अपना बाप कहे ?

२५९ भगतां भेळा मिल गया, कुण जाणै कूँभार ?

भक्तों (साधुओं) के साथ मिल गये, कौन जानता है कि कुंभार है ?

साधुओंके लिये जिनमें सभी जातियोंके लोग होते हैं।

२६० भगवान भावनारा भूखा है

भगवान भावनाके भूखे हैं

भगवान तो हृदयके सच्चे प्रेमसे राजी होते हैं।

मि० — देवता भावनारा भूखा है।

२६१ भज कलदारं, भज कलदारं, कलदारं भज मूढमते●

हे मूर्ख, कलदारको भज, कलदारको भज, कलदारको भज (कलदार=रुपया)

हार्दिक: भजन करो। धन-संचयको चिन्ता करो।

[illegible]

● शंकराचार्यने ईश्वराराधनाके लिये एक गीत है जिसका आरंभ इस प्रकार है — भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते। उसी शैली पर यह कहावत बनी है। [illegible]

२६७ भण्योड़ैरै च्यार आंख्यां हुवै
पढ़ेलिखेके चार आंखें होती हैं
विद्याकी प्रशंसा।

२६८ भरम भारी, खीसा खाली
भरम बहुत पर जेब खाली
लोग समझते हैं कि इनके पास धन बहुत है पर वास्तवमें कुछ भी नहीं है।

२६९ भरी जवानी पइसो पल्लै, राम चलावै तो सीधो चल्लै
भरी जवानी हो और पासमें पैसा हो तो फिर राम चलावे तभी आदमी सीधे रास्ते चलता है।
भरी जवानीमें पैसा पास होने पर सुमार्गगामी होना संभव नहीं।
मि०—धन, जोवन, अर ठाकरी अर चौथो अविवेक।
ऐ च्यारूं भेला हुवै अनरथ करै अनेक॥

२७० भलाभली माता जमी है
(नीचेवाली कहावत देखो)

२७१ भलाभली माता जमी है जका सगळो सैवै
भली तो एक माता पृथ्वी है जो सब कुछ सहती है।

२७२ भलां ही छुरी खरबूजै पर पड़ो, भलांई खरबूजो छुरी पर पड़ो
चाहे छुरी खरबूजे पर पड़े चाहे खरबूजा छुरीपर पड़े दोनोंका फल एक ही होता है (अर्थात् खरबूजेको ही हानि पहुचती है)
(१) जब दोनों प्रकारसे एक ही व्यक्तिको हानि पहुचे
(२) चाहे बलवान गरीबसे वैर कर चाहे गरीब बलवानसे वैर करे—दोनों अवस्थाओंमें गरीबको हानि होती है।

मि०—छुरी खरबूजेपर गिरी तो खरबूजेका जरर।
खरबूजा छुरीपर गिरा तो खरबूजेको जरर॥

२७३ भलीमें भली माता धिरथी है

सबसे भली अेक धरती माता ही है।

(देखो ऊपर कहावत नं० २७१)

२७४ भलो भलाई बुरो बुराई, कर देखो, रे भाई!

भलाईसे भला और बुराईसे बुरा फल होता है, हे भाई! करके देखलो।

२७५ भायो जका भायो, लारलो छींके टांग दी* (पाठान्तर -लटकायो)

जितनो भायो (अच्छो लगो, रुचि हुया) उतनो (रोटी) खालो, बाकी छींके पर लटका दो।

(१) भाईसे भाईकी बनती नहीं हो तब।

(२) भाई हैं परन्तु आपसमें प्रेम नहीं है।

२७६ भाई! भिणज्यो सोई, ज्यामें हंडिया खदबद होई

हे भाई! वही विद्या पढना जिससे हंडिया खुदबुद करे (अर्थात भोजन मिल सके)

पेट भरनेवाली विद्या पढनी चाहिये।

मि०—पढिये भैया सोई, जामें हंडिया खुदबुद होई।

२७७ भाई भलां ही मर ज्याओ, भाभीरो वट निकळनो चाहीजे

भाई चाहे मर जावो, पर भाभीका घमंड टूटना चाहिअे

(१) अपनी बड़ी हानि करके भी दूसरेको दुःख पहुंचाना।

(२) बड़ी हानि सहकर भी जिद कायम रखना।

मि०—तू मर पण तनै रांड कैवार छेडूं।

२७८ भाई भूरा, लेखा पूरा

भाई भूरा! हिसाब पूरा

अब हिसाब बराबर हो जाय।

मि०—न लेना न देना, मगन रहना।

२६७ भणयोड़ैरे च्यार आंख्यां हुवै

पढ़े लिखेके चार आंख होती है

विद्याकी प्रशंसा।

२६८ भरम भारी, खीसा खाली

भरम बहुत पर जेब खाली

लोग समझते हैं कि इसके पास धन बहुत है पर वास्तवमें कुछ भी नहीं है।

२६९ भरी जवानी पइसा पल्लै, राम चलावै तो सीधो चालै

भरी जवानी हो और पासमें पैसा हो तो फिर राम चलावे तभी आदमी सीधे रास्ते चलता है।

भरी जवानीमें पैसा पास होने पर सुमार्गगामी होना संभव नहीं।

मि०—धन, जोबन, अर ठाकरी अर चौथो अविवेक।
ऐ च्यारूं भेला हुवै अनरथ करै अनेक॥

२७० भलाभली माता जमी है

(नीचेवाली कहावत देखो)

२७१ भलाभली माता जमी है जका सगळो सैवै

भली तो अेक माता पृथ्वी है जो सब कुछ सहती है।

२७२ भलां ही छुरी खरबूजै पर पड़ो, भलांही खरबूजो छुरी पर पड़ो

चाहे छुरी खरबूजे पर पड़े चाहे खरबूजा छुरीपर पड़े दोनोंका फल अेक ही होता है (अर्थात् खरबूजेको ही हानि पहुचती है)

(१) जब दोनों प्रकारसे अेक ही व्यक्तिको हानि पहुचे

(२) चाहे बलवान गरीबसे वैर करे चाहे गरीब वैर करे—दोनों अवस्थाओंमें गरीबको हानि होती है।

मि०—छुरी खरबूजेपर गिरी तो
खरबूजा छुरीपर गिरा तो

२८६ भाठो 'र न्याव बैठावै ज्यूं ही बैठै

पत्थर और न्याय बिठावे वैसे ही बैठते हैं

मकान बनाते समय पत्थरको जैसे चुना जाता है वैसे ही वह रहता है और न्याय जिधर किया जाय उधर ही हो सकता है।

२८७ भात छोड देणा, साथ नहीं छोडणा

भोजन छोड दो पर साथ मत छोडो

परदेशको जानेवाला साथी मिलता हो तो भोजन छोडकर भी उसका साथ कर लेना चाहिये।

परदेशकी यात्रामें अकेला नहीं रहना चाहिये।

२८८ भाभी लीपती ही जाय, कोडो खेलतो ही जाय

भाभी आंगन लीपती है और कोडा (अबोध बालक) आंगनपर खेलता जाता है, और इस प्रकार लिपाईको खराब करता जाता है।

जब अेक आदमी काम करे और दूसरा उसे बिगाडता चला जाय।

२८९ भाभी भोळी घणी जको भूतां मेळी सूवै

बालाक स्त्री के लिअे।

२९० भार हुवै तो बंटाय ही लेवै

भार हो तो बंटा भी लेवे (पर पीडा नहीं बटायी जा सकती)

रोगीको जब बहुत पीडा होती है तो मां-बाप और दूसरे सहानुभूति दिखाने वाले व्यक्तियोंका कथन।

२९१ भायां-तणो भीड भायलां भागै नहीं

भाइयोंका दुःख भाई ही मिटा सकते हैं, मित्र नहीं;

मित्र भाइयोंका काम नहीं दे सकते।

कह्यो
ने बता दिया
भाग्यवश अपने-आप मिल जाय तब ।

गतां पिंडत हु ज्याव
ंडित हो जाता है
नेसे बड़ा काम भी सिद्ध हो जाता है ।
करत-करत अभ्यासके जड़मति होत सुजान ।

। सीरी माताजी ही कोनी
की सहायक माताजी (देवी) भी नहीं होतीं
की सहायता कोई नहीं करता ।

टोरा वठ जठे पायांरा लेखा हुवै
हां भिटोरे बहते हैं वहां पायोंका हिसाब होता है ?
हां पानीकी तरह पैसा बहाया जाता है वहां आना पाईका हिसाब करनेसे कु
लाभ नहीं होता ।

३ भींटोरा बहै 'र पायांरा लेखा करै
भींटोरे बहते हैं और पायोंका हिसाब करता है
बड़े नुकसान पर ध्यान न देकर साधारण हानि का विचार करता है ।
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

१०४ भींतनै ग्यारै स्यालो, घरनै खावै साळो
भींतको ैं और घरको साले खाते हैं
भींतमें ेसे वह कमजोर हो जाती है और घरमें सालेके
चलन ज्याता है ।

२६२ भावना जिसी सिद्धि

जैसी भावना वैसी सिद्धि

जैसे हृदयके भाव होते हैं वैसा ही फल मिलता है।

मिलाओ—यादृशीभावनायस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

२६३ भावसूं भगती फलै

भावनासे भक्ति फलती है

भावना सच्ची हो तो भक्ति का फल मिलता है।

२६४ भांगणो भाखर, काढणो ऊंदर

तोड़ना पहाड़, निकालना चूहा

थोड़े-से लाभके लिये भारी परिश्रम करना।

थोड़ी-सी बातके लिये बड़ा हो-हल्ला करना।

२६५ भांगरै भाड़ै मारीजै

भांगके भाड़ेमें मारा जाता है

जब व्यर्थ ही हानि उठानी पड़े तब।

२६६ मांहीरै भैंसी डूबै जरां दोपारारो रिड़कै

मांहीके भैंसें होतो है तो डाहरको रंभाती है

(नीचेवाली कहावत देखिये)

२६७ मांहीरै भैंस्यां डुपारैरो डूमै

मांहीके बड़ी भैंसें डुपहरको डूबी जाती है

[illegible] (मदद करने पर) काम करना है।

२६८ मांहीरो भैंस्यां दोटारै कामरी

[illegible] ([illegible] काम देती है)

[illegible] काम है तब पर।

२९९ भांव्रतो'र वैद कह्यो
रुचि थी और वैद्यने बता दिया
मनचाही चीज भाग्यवश अपने-आप मिल जाय तब।

३०० भिणतां-भिणतां पिंडत हु ज्याव
पढ़ते-पढ़ते पंडित हो जाता है
अभ्यास करनेसे बड़ा काम भी सिद्ध हो जाता है।
मि०— करत-करत अभ्यासके जड़मति होत सुजान।

३०१ भोडूरी सीरी माताजी ही कोनी
डरपोककी सहायक माताजी (देवी) भी नहीं होती
डरपोककी सहायता कोई नहीं करता।

३०२ भींटोरा उठे जठै पायांरा लेखा हुवै
जहां भिंटोरे उड़ते हैं वहां पायोंका हिसाब होता है ?
जहां पानीकी तरह पैसा बहाया जाता है वहां आना पाईका हिसाब करनेसे कुछ लाभ नहीं होता।

३०३ भींटोरा उडै'र पायांरा लेखा करै
भींटोरे उड़ते हैं और पायोंका हिसाब करता है
बड़े नुकसान पर ध्यान न देकर साधारण हानि का विचार करता है।
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

३०४ भींतनै खावै आळा, घरनै खावै साळा
भीतको आले खाते हैं और घरको साले खाते हैं
भीतमें ज्यादा आले रखनेसे वह कमजोर हो जाती है और घरमें सालोंका चलन होनेसे घर नष्ट हो जाता है।

३०५ भींतांरै ही कान हुया करै है

भीतोंके भी कान हुआ करते हैं।

गुप्त रहस्य अेकांतमें भी नहीं कहना चाहिअे। कहना हो तो खूब देख
लेना चाहिअे कि कोई छिपा हुआ सुन तो नहीं रहा है। तनिक-सी
घानोसे गुप्तभेद दूसरोंके हाथ पड़ जाते हैं और भारी हानि उठानी पड़

३०६ भींटोरा जगै जठै दीयैरो उजास देखै

जहां भिंटोरे जल रहे हैं वहां दीपकका उजेला ढूंढ़ता है

(देखो कहावत नं० ३०२)

३०७ भुसै जिका कुत्ता खावै कोनी

भूंकनेवाले कुत्ते काटते नहीं

जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाते हैं और बकने लगते हैं वे नुकसान नहीं पहुंचाते, वे
प्राय: दिलके साफ होते हैं, बातको मनमें नहीं रखते।

३०८ भूख मीठी क लापसी ?

भूख मोठी है या लपसी ?

भूख मोठी है क्योंकि भूखमें सभी चीजें मीठी लगने लगती हैं।
भूखमें वस्तुके स्वादका ध्यान नहीं रहता।

३०९ भूखा उठावै पण भूखा सुवावै कोनी

(परमात्मा) भूखे उठाता है पर भूखे सुलाता नहीं (सबेरे सब भूखे
हैं पर रातको भोजन करके सोते हैं)

परमात्मा सबको खानेको देता है।

भूखा फकीर, धाया अमीर, मर्यां पीर

मुसलमान भूखा हो तो फकीर बन जाता है, धनी हो तो अमीर कहलाता है
और मर जाता है तो पीर हो जाता है।

३११ भूखा सो रूखा

भूखे आदमीको क्रोध जल्दी आता है।

३१२ भूखां भजन न होय, गोपाळा ! ले ले अपणी कंठी-माळा

(१) भूखा आदमी ईश्वर-भजन नहीं कर सकता भूखमें ईश्वर-भजन नहीं सूझता।

(२) भूखे आदमीसे काम नहीं हो सकता।

मि०—अल्लाहको भी याद दिलाती हैं रोटियां।

३१३ भूखो तो ही ईंदो, भागी तोई-डांग

गरीब है तो भी जातिकी ईंदो है और टूट गयी है तो भी लाठी है

३१४ भूखो मारवाड़ी गावै, भूखो गुजराती सूवै

भूखा मारवाड़ी गाता है और भूखा गुजराती सोता है

मि०- भूखा बंगाली भात-भात पुकारता है।

३१५ भूखो तो धायां ही पतीजै

भूखेको तो पेट भरने पर ही विश्वास होता है, खाली भाजन देनेके वायदेमें नहीं।

मि०—भूखा खाये ही पतियाय।

३१६ भूत का मारै नी, भैसाण मारै

भूत नहीं मारता, भय मारता है

मृतके भूटे भयसे डरकर बहुतसे मर जाते हैं। झूठा भय मनुष्यको मारता है।

३१७ भूतरो भाईबदोमें जीवरो जोखम

भूतको भाईबदोमें जानको जोखिम

दुष्टके मेलसे हानि होती है।

भूल गया रागरंग, भूल गया छकड़ी।
तीन चीज याद रही तेल, लूण, लकड़ी॥
गृहस्थीमें प्रवेश करनेके बाद पहलेके सब रागरंग भूल जाते हैं। दैनिक आवश्यकताओंकी पूर्त्तिकी ही दिनरात चिंता लगी रहती है। गृहस्थाश्रम-की चिंताओंके लिये।

भूल-चूक लेणी-देणी
भूल चूक लेनी-देनी
हिसाब करते समय यह कहावत कही जाती है कि कोई गलती रह गयी तो मालूम होने पर ठीक कर ली जायगी।

भूआ उघाड़ी फिरै भतीजैनैं खलको-टोपी जोयीजै
फूफी नंगी फिरती है, भतीजेको कुर्त्ता-टोपी चाहिये
टि०—फूफी भतीजेको कुर्त्ता-टोपी दिया करती है।
जब अपने पास कुछ नहीं हो और दूसरे मांगे तब
मि०—आप मियाँ मंगते बाहर खड़े दरवेश

भूआजी आपता सासरै जाय कानी, भतीजीनैं सीख देवै
फूफीजी खुद तो ससुराल जाती नहीं, भतीजीको जानेका उपदेश देती हैं।
जब कोई दूसरोंको उपदेश दे पर स्वयं उसके अनुसार काम न करे।
मिलाओ—(१) पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
(२) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।
(३) खुदरा फजीहत दीगरा नसीहत।
(४) आप व्यासजी बेंगण खावै, दूजानैं परमोध बतावै।

भूआजीरै सोनैरा सींठ अकेरो भतीजीनैं काई ?
फूफीके सोनेके गहने हैं तो उनसे भतीजीको क्या ?
दूसरेके पास बहुत-कुछ भी हो पर हमारे पास कुछ न हो तो हमें क्या ?

३२३ मेढ़ ओखर कियां ही धापै पण ऊंट कियां न धापै ?

विष्ठासे भी मेढ़ तो पेट भर सकता है पर ऊंट कैसे भरे ?

छोटोंका थोड़ेमें ही गुजारा हो जाता है अतः उनके लिअे तो उपाय हो सकता है पर बड़ोंका गुजारा उतनेसे नहीं हो सकता, उनके लिअे क्या किया जाय ?

३२४ भेळा पड़्या वासण ही खड़बड़ावै

साथ रखे बासन भी खड़खड़ाते हैं

साथ रहनेसे बोलचाल या झगड़ा हो ही जाता है, साथ रहनेवाले झगड़ते ही हैं ।

३२५ भेळा बैठा जका भाई

जो अेक साथ रहें वे ही भाई

(१) पड़ोसी भी साथ रहनेके कारण भाईके समान हैं।

(२) जिनमें प्रेम है वही भाई हैं ।

३२६ भेरू मठमें कोयनी

भैरव मठमें नहीं है

रूठे हुअे व्यक्तिके लिअे ।

३२७ भैरूंजी घटमें आयाया

भैरव घटमें आ गये (भैरवका आवेश हो गया)

३२८ भैसूं भूत भागै

भयसे भूत ... है

... जाता । डरसे बड़े-बड़े घबराते हैं ।

गुण दिखाना व्यर्थ है

... गे ... पशुराय ।

३३० भैंस बोरो देख'र चमकै !
भैंस बोरा देखकर चौंकती है !
जो स्वय कुकर्मी हो वह दूसरों के कुकर्मों पर चौंके तब

३३१ भैंसरी-भैंस सगी हुवै
भैंस भैंसकी सगी होती है
जातिवाले अपने जातिवालों को ही चाहते हैं।

३३२ भैंसरै गाय कांई लागै ?
भैंसके गाय क्या लगे ?
जब दो व्यक्तियोंमें कोई रिश्ता न हो।

३३३ भैंसरो सींग लफोदर नांव
भैंसका सींग और 'लफोदर' नाम
साधारण चीजका अद्भुत और अपरिचित नाम रखा जाय तब

३३४ भीत गयी, थोड़ी रही, सो भी जावणहार
(देखो ऊपर कहावत नं० २४४)

३३५ भोगो मठमें कोयनी
भोग मठमें नहीं है
रूठे हुओ व्यक्तिके लिओ।
(ऊपर कहावत नं० ३२६ देखो)

३३६ भोळांरा भगवान
भोले आदमियोंके सहायक भगवान होते हैं।

३३७ भोळै बामण भेड़ ग्यायी, अब ग्यावै तो राम-दुहाई
ब्राह्मणने धोखेमें भेड़ खा ली, अब कभी खावे तो रामकी दुहाई है
धोखेमें या भूलसे बुरा काम हो गया, अब कभी नहीं होगा।
कोई धोखेमें बुरा काम कर लेता है और पीछे पछताता है तब।

म

३३८ मकड़ी जाळैमें फँसगी

मकड़ी जालेमें फँस गयी

जब कोई व्यक्ति आफतमें फंस जाता है तब

३३९ मकर-चकररो पाणी, आधो तेल'र आधो पाणी

मकर चकरका पानी, आधा तेल और आधा पानी

धूर्त्तता और मक्कारीसे भरा व्यापार।

३४० मजा मजेमें लड़का-लड़की नफेमें

विषय-वासना की तृप्तिके साथ साथ संतान की प्राप्ति भी होती है

३४१ मजूरीरो मैणो कोनी, चोरी-जारीरो मैणो है

मजदूरीका ताना नहीं, चोरी-जारीका ताना है

मजदूरी करना कोई बुरा काम नहीं।

३४२ मठी सांकड़ी, मोडा घणा

मठ छोटा और मोडे बहुत (मोडा=मुंडित, साधु)

जगह थोड़ी, बैठनेवाले बहुत

जगह थोड़ी, रहनेवाले बहुत

३४३ मणभररो माथो* हलावै पण टकेभर० जीभ को हलावैनी

(पाठान्तर—सिर; पईसेरो)

मन भरका सिर हिलाता है पर टके भरकी जबान नहीं हिलाता।

जब कोई व्यक्ति किसी बदलेका टस्स बदलनेको न देवे

३४४ मणमें पाळीत सेरई मेंगो !

मनमें पाळीत सेर मैदा है ।

सर्वांश में हठ

३४५ मणमें पाळीत सेर रो घोगो !

३४६ मणमें आठ पंसेरी री भूल !

मनमें आठ पंसेरीकी भूल !

सर्वांशमें झूठ, रत्ती भर भी सच नहीं ।

३४७ मणमें पंसेरीरी भूळ

मनमें पंसेरीकी भूल

बहुत बड़ो भूल । बहुत बड़ा झूठ

३४८ मन खटाईमें दीसे है

मन खटाईमें दिखायी पड़ता है

मनमें कपट जान पड़ता है ।

३४९ मन चंगा तो कठोतरीमें गंगा

मन शुद्ध है तो कठौतीमें ही गंगा है

मन शुद्ध है तो तीर्थ-पूजा आदि बाहरी आडंबरोंकी आवश्यकता नहीं, और मन ही शुद्ध नहीं है तो ये सब आडंबर व्यर्थ हैं ।

३५० मन चालै पण टट्टू को चालैनी

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता

(१) इच्छा होती है पर साधन नहीं ।

द्रव्य न होनेसे इच्छाके अनुसार कार्य नहीं होता ।

(२) वृद्ध और शक्तिहीन पुरुषोंकी विषय-वासनाके लिये ।

३५१ मन टट्टू चालै पण पईसा कठै ?

मनका टट्टू तो चलता है पर पैसे कहां ?
मन तो इच्छा करता है पर द्रव्य नहीं।
(ऊपरवाली कहावत देखो)

३५२ मन ना मिलै ज्यांसूँ मिलवो किसोरे ?
लागी प्रीत ज्यांरो तजवो किसो रे ?

जिनसे मन नहीं मिलता उनसे मिलना कैसा और जिनसे प्रेम हो गया उनको छोड़ना कैसा ?
जिनसे मन न मिले उनसे नहीं मिलना चाहिअे
और जिनसे प्रेम कर लिया उनको कभी छोड़ना नहीं चाहिअे।

३५३ मन बिनारा पावणां, घी घालूं क तेल ?

बिना मनका मेहमान है उसे घी परोसूं या तेल ?
बिना मनका काम कभी अच्छी तरह नहीं किया जाता।

३५४ मन मिलियांरा मेळा, नहीं तो चल अकेला

मन मिले तो मेला (साथ) करो, नहीं तो अकेले चल दो
जिनसे मन मिल जाय अैसे लोगोंसे हेलमेल रखना चाहिअे,
नहीं तो अकेले रहना अच्छा।

३५५ मन मिळियां पवसूं भला अकेला

३५७ मनरा लाडू खावै

मनके लड्डू खाता है

(१) झूठी आशाओं करना

(२) पूरे न हो सकनेवाले ऊँचे-ऊंचे मनोरथ करना

मि०—To build castl es in the air

३५८ मनरा लाडू खावणा तो कसर क्यूं राखणी ?

मनके ही लड्डू खाना तो फिर कमी क्यों रखना (फिर तो पेट भर खाना चाहिये।

(नीचेवाली कहावत देखिये)

३५६ मनरा लाडू खावणा तो पेट भर खावणा

मनके लड्डू ही खाना तो फिर भरपेट खाना चाहिये

जब मनोरथ करना ही है तो फिर तुच्छ मनोरथ क्या करना।

३६० मनरै हार्यां हार है, मनरै जीत्यां जीत

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत

जय-पराजय या सफलता-असफलता मन पर ही निर्भर है।

मनमें उत्साह हो तो सफलता मिलती है और मन ही हिम्मत हार जाय तो असफलता निश्चित है। इसलिये मनोबल रखना चाहिये।

मि०—(१) मनके हारे हार है मनके जीते जीत।
पारब्रह्मको पाइये मनहीको परतीत॥

(२) मन एव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयोः॥

३६१ मनसूं ही गपैरो नांव गोबनियो !

मनसे ही (जबर्दस्ती) गधेका नाम गोबनिया !

३६२ मन होय तो माळवै जाय परो

मन हो तो मालवे चला जाय

काम करनेको मन हो तो फिर मनुष्य कठिन काम भी कर लेता है।

३६३ मनै न म्हारै जायैनै, दे ग्याटरै पायैनै

यदि मुझे या मेरे लड़केको नहीं देते तो चाहे खाटके पायेको दो

कोई चीज अपने काम न आवे तो अपनी बलासे चाहे जहां जाय।

३६४ मर ज्याणो पण बात राखणी

मर जाना पर बात रखनी चाहिये।

(१) वचनसे कभी नहीं टलना चाहिये चाहे मरना ही पड़े

(२) कीर्त्ति कर जाना चाहिये चाहे प्राण देना पड़े

३६५ मर ज्यावणो पण दळियो नहीं खावणो

मर जाना पर दलिया नहीं खाना

चाहें मरना पड़े पर पेट भरनेके लिये नीच काम नहीं करना चाहिये

मि॰—(१) लंघण कर लंकाल, सादूलो भूखो सुवै।
कुल-वट छोड़ कराल, पैंड न देत, प्रतापसी ॥

(२) सिंह-बचा औ लंघणा तोय न घास चरत

३६६ मरणनै ही वखत* कोनी (पाठान्तर—फुरसत ,

मरनेको भी समय नहीं

जब कोई बहुत काममें लगा होता है तब

३६७ मरणरा किसा गाहा जुनै है ?

मरनेको कौनसे गाहे जुतते हैं ?

मौत न जाने कब आ जाय। उसके लिये कोई तय्यारी नहीं की जाती।

३६८ मरतां किसा गाटा गूंथै ?
मरते हुओ कौन गाने पुनते हैं ?
(ऊपर की कहावत देखिये)

३६९ मरतां मौत बिगाड़ीजै
मरते-मरते मौत बिगाड़ी जाती है
जब कोई बिना सामर्थ्यका काम करता है तब।

३७० मरती क्या न करती ?
मरती हुई क्या नहीं करती ?
(१) मरता हुआ मनुष्य क्या नहीं करता—बुरे-से-बुरा काम भी कर डालता है
(२) जो मरनेको तय्यार है वह कठिन-से-कठिन कार्य से भी नहीं डरता

३७१ मरतैआळी डाचल्यां मारै
मरते हुओ मनुष्यके (समान) मुंह मारता है
थोड़ी बातके लिओ बहुत लालच करना।

३७२ मरतैनै सै मारै
मरते हुओको सब मारते हैं
दुर्बल या गरीबको सब सताते हैं।

३७३ मरतैरै सागै मरीजै कोनी
मरतेके साथ मरा नहीं जाता

३७४ मरतै मोडै मारिया चोटीआळा च्यार
मरते हुओ मोडे (सन्यासी) ने चार चोटीवालों (अमुंडितों) को मार डाला
जब कोई अपनी हानिके साथ दूसरे कइयोंकी हानि करा दे तब।

३८५ मर्‌योड़ा दाव तो ढेढ ही घीसैला

मरे हुओ जानवरोंको तो ढेढ़ (चमार) ही घसीटेंगे

(१) कुत्सित कार्य नीच पुरुष ही किया करते हैं

(२) जो जैसा होता है वह वैसा ही कार्य करना पसन्द करता है।

३८६ मरयोडां लारै मरीजै थोड़ो ही

मरे हुओंके पीछे मरा थोड़े ही जाता है

कोई आदमी किसी मृत संबधीके पीछे बहुत दुःख करे तब।

३८७ मसाणां गयोड़ा मुड्दा आगै ही पाछा आया हा ?

श्मशान गये हुओ मुर्दे आगे भी कभी लौटे थे ?

श्मसान पर गये मुर्दे फिर नहीं जीते।

३८८ मसाणां गयोड़ा लाकड़ा कदे ही पाछा आया हा ?

श्मशान पर गया हुआ काठ कभी लौट कर आया ?

नीचों को सौंपी हुई वस्तु कभी वापिस नहीं मिलती।

३८९ मसाणां में मोटैरो सवाद जायीजै

श्मसानमें मोटेका स्वाद चाहिओ

जो कुछ मिल गया उसे ही गनीमत समझो।

३९० मसाणां रै लाडवांमें इळायचीरा सवाद जोयीजै

श्मसानके लड्डुओंमें इलायचीका स्वाद चाहिओ

(ऊपर की कहावत देखिये)

३९१ मंगतैसूं कोई गळो छानो कोनी

मगते से कोई गलो छिपी नहीं

बहुतसे रास्तों का जानने वाले मनुष्य के प्रति ईसो में ऐसा कहा जाता है।

३९२ मा आवै, दही-बाटियो लावै

मा आवेगी, दही-बाटी लावेगी

किसीकी प्रतीक्षा करते रहना।

इसका निकास इस कहानीसे है—अेक स्त्री थी जिसके अेक छोटा बच्चा था। अेक बार भयंकर अकाल पड़ा तो उसके लिअे बच्चे को पालना कठिन हो गया। तब वह जंगलमें गयी और बच्चे को अेक पेड़के खोखलमें लिटा दिया और कहा—बेटा! मैं तेरे लिअे दही-बाटी लाने जाती हूं। यह कहकरचली गयी। बच्चा बराबर पुकारता रहता—माँ आवेगी, दही-बाटी लावेगी। भगवानने उसकी पुकार सुनी और उसके अंगूठेमें दूध उत्पन्न कर दिया जिसे वह चूसता रहता। यों करते अकाल बीत गया। माँने सोचा कि बच्चेको देख आऊं—जीता है या मर गया। माँ आयी तो उसने बच्चे को ज्यों-का-त्यों पाया। बच्चे ने कहा—माँ! दही बाटी लायी? माँने कहा-बेटा! लायी तो नहीं, अब लाती हूं। यह कहकर दही-बाटिया लाने चल दी। मनमें सोचा—जब इतने दिन नहीं मरा तो अब दो-चार दिनमें क्या मरेगा? भगवानने सोचा देखो, मैंने इसके बालकको इतने दिनों तक पाला पर इसे अभी भी कोई पर्वाह नहीं, अब तो सुकाल आ गया, अब मैं क्यों पालू? बस दूधका आना बंद हो गया और बालक मर गया। माँ कुछ दिनोंके बाद दही-बाटी लेकर आयी तो बच्चेको मरा पाया।

केसरदेसर गांवके मार्ग में 'बालकिये रो धोरो' प्रसिद्ध है जहां इसी प्रकार की घटना घटी थी "मावो आसो, दही बाटियोलासो" वह बच्चा मरकर पितर हुआ जो बड़ा सात्विक और पथिकों का मार्गदर्शक था।

३९३ माईतांरी गाळ्यां घीरी नाळ्यां

मा-बापकी गालियां घीकी नालियोंके समान हैं

बड़ोंकी गालियां (कठोर वचन) हितकारी होती हैं

१६४ माई नांऊसूं नाई प्यारी

माता की अपेक्षा खाया हुआ ज्यादा प्यारा होता है

जो खिलाता है वह मातासे भी अधिक प्यारा लगता है।

जिससे स्वार्थ निकले वह संबंधियोंसे भी अधिक प्यारा होता है—उसीक लोग सबसे ज्यादा ध्यान रखते हैं।

१६५ माई ! माई ! भोत वियाई

ए माई ! ए माई !" अन्यत्र बहुत वियाई हुई है (तुम्हारे अतिरिक्त औ बहुत सी माताओं ने पुत्र जने हैं)

एक जगह से कार्य सिद्धि नहीं हुई तो और बहुत सी जगहोंसे हो सकती है

१६६ मा करै सो धी करै

जो माता करती है वही बेटी करती है

सन्तान माताके अनुसार होती है।

१६७ मा खेतमें, पूत जनेतमें

माता खेतमें, बेटा बरातमें

कुसुम या कसुमेक लिये जिससे कुसुमी रंग बनता है।

कुसुमका पौधा खेतमें होता है और इसके द्वारा कुसुमी रंग काम आता है, बराती कुसुमी रंगके वस्त्रादि पहनते हैं।

१६८ माख्यां मार'र तीसमारखां बण्या है

मक्खियां मारकर तीसमारखां बने हैं

व्यर्थ शेखी मारने वाले पर।

१६९ माडपुरा मथुरा नगरी, आधा मोडी आधा मगरा

माडपुरा मथुरा जैसा नगर है, इसमें आधे साधु और आधे पत्थर हैं

माडपुरा—बीकानेर के एक कस्बे ([illegible]) का [illegible]।

४०० माणे जकांरा माल

जो भोगते हैं उन्हींके माल हैं

संपत्ति उन्हीं की है जो भोगते हैं, कमानेवालोंकी नहीं।

४०१ माताजी मठमें बैठी ही गटका करया है, बाणियैरै धर्कै कोनी चढै

माताजीने मंदिरमें बैठे-बैठे ही मौजसे बलि-भोजन को गटका है, कि बनियेके धक्के नहीं चढ़ी।

भोले-भाले व्यक्तियों को सतानेवाले के प्रति

इसका निकास इस कहानी से है—

एक बनिये ने किसी कार्यके लिए भैरूजी को मान्यता की, कार्य सिद्ध होने पर संकल्पित भैंसेको बलि के लिये लाकर भैरवमूर्त्ति से बांध दिया क्योंकि अहिंसावादी पशुवध कैसे करता। भैंसा भैरव मूर्त्ति को लेकर भगा, पास में माताजी का मठ (देवी का मन्दिर) था, देवी हँसी, भैरव ने रुष्ट होकर उपर्युक्त कहावत कही। किसी जबरदस्त से पाला पड़ने पर इस कहावत का उपयोग किया जाता है।

४०२ मातो देख'र डरणो नहीं, पतलो देख'र अड़नो नहीं

मोटा ताजा आदमी देखकर उससे डरना नहीं चाहिये और पतले आदमीको देखकर उससे अड़ नहीं आना चाहिये।

मोटे आदमी हमेशा बलवान् नहीं होते और न पतले आदमी हमेशा कमजोर।

४०३ माथेमें गिज, कांकरांमें कलाबाजी खावै

माथेमें गज और कंकरोंमें गुलांचियां खाता है

असमर्थ व्यक्ति शक्ति से ऊपर कार्य करनेकी चेष्टा करे तब।

४०४ माथेमें दियां गांड बोलै

माथे पर मारनेसे गांड बोलती है

पासमें कुछ भी नहीं है।

४०५ माथै रो भार पगां नै
सिरका भार पैरों को ही ढोना होता है
करजा लेने वाले को चेतावनी ।

४०६ माथैरी पागड़ी बगल में लियाँ पछै काई डर ?
माथेकी पगड़ी बगलमें लिये पीछे क्या डर ?
लज्जा छोड़ देनेपर किसी बातका भय नहीं रहता ।

४०७ माथो ऊखली में दियां पछै घावों रो काई डर
सर ऊखली में डाल देने पर घावों का क्या डर
खतरे के काम में हाथ डालने पर नुकसान से नहीं डरना चाहिए ।

४०८ माथो मसाला मांगै है
माथा मसाले मांगता है
मार खाना चाहता है, मार खानेकी मनमें आ रही है ।

४०९ माथा मूंड्या तो मनमें मूंड नहीं ता पड़सी नरक को कूंड
माथा मुंडाया है तो मनका भी मुंडा नहीं तो नरक कुण्डमें पड़ोगे
मन बशमें नहीं किया तो साधु होनेसे क्या लाभ ।

४१० माथा मोटा, घरमें टोटा
सिर मोटा, घरमें टोटा
मोटे सर वाला व्यक्ति भाग्यवान समझा जाता है, जब बेसे पुरुष के घरों भी टोटा हो तब ऐसा कहा जाता है ।

४११ माथो मूंड्यां जती नहीं, भगवा ओढ्यां सती नहीं
माथा मुंडवा देनेसे ही कोई यती नहीं हो जाता और भगवा वस्त्र ओढ़ लेनेसे ही कोई सती नहीं हो जाती ।

४१२ मादलियो मार्यो'र गोठ बिखरी

मादलिये को मारा और गोष्ठी बिखर गयी

जब किसी व्यक्ति के न रहने पर कार्य अस्तव्यस्त हो जाय तब।

टिप्पणी—मादलिया अेक भील सरदार था।

४१३ मान मनाया खीर न खाया, अैंठा पातल चाटण आया

सम्मानके साथ मनाया तब तो खीर भी नहीं खायी और अ

चाटनेको आ पहुंचे

आदरपूर्वक करनेको कहा तब तो काम नहीं किया, अब बेइज्ज

वही काम करता है।

४१४ मानै तो देव, नहीं तो भींतरा लेव

यदि कोई (देवताओंको) माने तो देवता हैं नहीं तो भींतके लेव

४१५ मा पर पूत, पितापर घोड़ा बो'त नहीं तो थोड़ा-थोड़ा

पुत्र माता जैसा होता है और घोड़ा पिता जैसा।

४१६ मा-पोटी कहो भावैं, बाप-पोटी कहो

मां-पोती कहो चाहे, बाप-पोटी कहो

दोनोंका तात्पर्य अेक ही है, केवल कहनेका फर्क है।

४१७ मा-बाप। थारो बेटो म्हारो बेटेने परणाय दो

अेक महतरानीका अपने मालिक से कथन—मां-बाप! अपने

लड़केको ब्याह दो।

धनकी गर्मीसे साधारण आदमी का भी हौसला बढ़ जाता है।

धन पाकर छोटा आदमी अनुपयुक्त बातें कहने या करने लगे तब।

इस कहावतका विवरण इस

अेक गांवमें अेक ठाकुर था। उसके यहां अेक महतरानी थी जो बड़ी सीधी थी पर जब वह द्वार पर आकर खड़ी होती तो बड़े ठाठसे कहती —मां-बाप*! अपनी लड़की मेरे लड़केको ब्याह दें। जब वह उस जगह से हटती तो फिर वैसी ही सीधी हो जाती। अेक दिन ठाकुरने कहा—बात क्या है? इस जगहमें कोई विशेषता होनी चाहिअे, इसको खोदो। खोदा तो नीचे मुहरोंसे भरा अेक चरु निकला। ठाकुरने कहा बस, यही कारण है, इसीकी गर्मीसे महतरानी अैसी बातें करती है। ठाकुरने चरु उठवा कर भीतर रख लिया। तबसे महतरानीका वैसा बोलना भी बंद हो गया।

'१८ मा-बाप मीठा मेवा है

मां-बाप मीठे मेवे हैं मां-बाप बड़े हितकारी हैं।

'१६ मा भठियारी, पूत फमेदां

मां भठियारी और बेटा पतदगी

हैसियतके प्रतिकूल कार्य करनेवाले व्यक्तिके लिअे।

२० मा मरी, बेटी हुई, रह्या लेन-रा लेन

मां मर गयी तो बेटी जनम गयी, इस प्रकार लेन-देन बराबर हो गई

अेक आदमीका घाटा दूसरी आनेसे पूरा हो जाता है।

मि० (१) बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसने भरा।

(२) बाबा मरे, [illegible] जनमे, रही लेन-के-लेन।

(३) [illegible] मरी [illegible] [illegible] लेन रा लेन।

'२१ मामेरो ब्याह मा पुरसगारी, खोसा बेटा रात अंधारी

मामेका ब्याह, मां परोसनेवाली और [illegible], [illegible] फिर क्या कहिअे,

बेटा! खूब खोसो।

जब सभी बातें अनुकूल हैं।

* [illegible]

४२२ मायेरै कानां मुरकी, भाजणां आणी मरै

मायेके कानोंमें बाली और भावजकी जान मरे
जो दूसरेके धन पर डाह करे उसके लिये।
मि॰ – सासूके कानां व लियां, भावजां आंका-बांका हीं।

४२३ मायड़का मन पोवड़ां, पावड़का मन पोतामें

माताका मन (प्रेम) बेटामें और बेटाका मन शोहदोंमें।
मि॰—(१) मा चाहै बेटाको, बेटो चाहै माटे पोतको।

४२४ माया कनै माया आवै

मायाके पास माया आता है
धनवानके पास धन आता है।
मि॰—Money breeds money.

४२५ माया गंठ, विद्या कंठ

माया (धन) जो गांठमें हो और विद्या जो कंठमें हो (वही काम आता है) ।
मि॰—(१) पुस्तकस्थातु या विद्या परहस्तगतं धनम् ।
(२) नाणो आंट'र विद्या कंठ

४२६ माया थारा तीन नाम, परस्या परसू परसराम

हे धन, तेरे तीन नाम हैं—अेक परसिया, दूसरा परसू और तीसरा परशुराम
मनुष्यका आदर धनके अनुसार होता है—जब धन नहीं होता तो लोग परसिया कहकर पुकारते हैं, जब कुछ धन हो जाता है तो परसा कहने लगते हैं और जब और ज्यादा धन हो जाता है तो परसराम कहा जाता है।

४२७ मायानै भें, कायानै भें नहीं

धनको भय होता है, शरीरका कोई भय नहीं
पासमें धन हो तो हर समय और हर स्थान पर भय बना रहता है कि कहीं चोर-डाकू छीन न लें पर जिसके पास कुछ नहीं उसको कोई भय नहीं होता—वह सब जगह निर्भय आ-जा सकता है।

४२८ मायासूं माया मिलै कर-कर लांबा हाथ

मायासे माया लंबे हाथ कर-करके मिलती है।

धनवान, धनवानका आदर करते हैं, गरीबोंका नहीं।

४२६ मारणों तो मीर ही मारणो

मारना हो तो किसी मीर (बड़े व्यक्ति) को ही मारना चाहिये।

काम करना हो तो बड़ा ही करना चाहिये।

४३० मारवाड़ मनसोवे डूबो

मारवाड़ मनसूबोंमें डूबी।

मारवाड़के लोग मनसूबे ही बांधते रहते हैं, करके कुछ भी नहीं दिखाते।

मिलाओ—मारवाड़ मनसोवे डूबी पूरब डूबी गाणे सें।

खानदेस खुर्दे सें डूब्यो दक्खण डूबी खाणे सें।

४३१ मार, विद्या-सार

(गुरुकी) मार विद्याका सार है।

(१) गुरुकी मार विद्या देनेवाली होती है इसमें उसका बुरा नहीं मानना चाहिये।

(२) बिना मारके विद्या नहीं आती।

मिलाओ—*Spare the rod & spoil the child.*

४३२ मारसूं भूत भागे

मारसे सब डरते हैं।

मार पड़नेसे बड़े-बड़े बदमाश भी सीधे हो जाते हैं।

४३३ मारै र रोवण को दे नी

मारता है और रोने नहीं देता

जबर्दस्त का अन्यायके लिये।

४३४ मारै सो मीर

जो मार लेता है वही मीर है।
जो काम कर लेता है वही श्रेष्ठ है।

४३५ मांरै पेटमें सीख र कोई को आयो नी

माताके पेटमें सीखकर कोई नहीं आया।
काम सीखने ही से आता है अपने-आप नहीं।

४३६ माल माथै जगात है

माल पर जकात है (जिसके पास माल होता है उसीको जकात देनी पड़ती है)

४३७ मालैरा मढै वीरमरा गढै

मालाजीके वंशज मढ़ियोंमें और वीरमजीके गढ़ोंमें रहेंगे।
राव मालोजी या मल्लीनाथजी मारवाड़के राजा थे और वीरमदेवजी उनके छोटे भाई। मालोजीके बाद उनका राज्य तो उनके वंशजोंमें बंटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया और वीरमजीके पुत्र चूंडोजीने मंडोर जीत कर अेक नया राज्य कायम किया। वर्त्तमान जोधपुरके महाराजा राव चूंडोजीके वंशज हैं। इस प्रकार मारवाड़ अधिपति तो वीरमजीके वंशज हुअे और मालोजीके वंशज झोंपड़ियोंके निवासी बन गये।

४३८ माला फेरयां हर मिलै तो हूं फेरूं झाड

माला फिरानेसे ही यदि भगवान मिल जायँ तो मैं माला क्या, झाड़को ही फेरने लगूं, जिसके फूलोंसे माला बनती है।
मन शुद्ध और पवित्र नहीं तो माला फिराना व्यर्थ है।
मिलाओ—माला फेरै हरि मिलै बंदा फेरै झाड़।

४३९ माली' र मूला छीदा ही भला
माली और मूली विरल ही अच्छे।
खेतमें मूली बिल्कुल पास बोनेसे फसल अच्छी नहीं होती और माली अेक साथ रहें तो अनर्थ करते हैं।

४४० माली सींचे सो घड़ा रुत आयां फल होय
धीरे धीरे ठाकरां धीरे सब कुछ होय
माली चाहे सौ घड़े ही पानी क्यों न सींचे पर फल ऋतु आने पर ही लगता है।
काम धीरे-धीरे ही होता है, अनावश्यक उतावली करनेसे वह अच्छी नहीं हो जाता।

४४१ मांगण गया स मर गया, मरया स मांगण जाय
उणसे पहले वो मुआ जो होते ही नट जाय
जो मांगने गये वे मर गये, जो मरे हुअे (मनविना-हीन) हैं वे ही मांगने जाते हैं पर वह उससे पहले मर गया जो होते हुए भी न दे।
मांगनेकी एवं सूमकी निंदा।
मिलाओ—(१) मांगन मरन समान है मत कोई मांगो भीख।
(२) मांगन गये सो मर गये, मरे सो मांगन जाहिं।

४४२ मांग-तांग छाछ लायी, सिवजीनै छांटो
मांग-तूंगकर छाछ लाई और शिवजीको छींटा

४४३ मांग्या मिळै रे माल, जकांरै कांई कमी रे लाल !
जिनको माल [illegible] से मिल जाता है उनको क्या कमी हो सकती है !
[illegible] को क्या कष्ट हो सकता है ! कष्ट तो उन्हें होता है
[illegible] ने हैं।

४४४ मांगणासूं तो मौत ही को आवै नी
मांगनेसे तो मौत भी नहीं आती
इच्छा की हुई मृत्यु नहीं मिलती।

४४५ मांग्याही मौत ही को मिलै नी
मांगी हुई मौत भी नहीं मिलती।
(१) जब कोई बहुत निराश हो जाय या जीनेसे ऊब जाय
(२) मांगनेसे और तो क्या मौत भी नहीं मिलती अतः मांगना बुरा है।
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४४६ मांटीहो निरभाग, ज्यांरी घैर रो अभाग
पति भाग्यहीन है तो उसकी स्त्रीका अभाग्य है
पति भाग्यहीन होता है तो स्त्रीको कष्ट उठाने पड़ते हैं।

४४७ मांटीनै रोवै बैठी-बैठी, रिजकनै रोवै ऊभी-ऊभी
पतिको बैठी-बैठी रोती है और रिजकको खड़ी-खड़ी
पतिसे भी जीविका प्यारी होती है।

४४८ मांटी मरयैरो फिकर नहीं, सपनो साचो हुयो जोयीजै
पतिके मरनेका फिक्र नहीं, पर सपना सचा होना चाहिये
अपनी बुराई भले ही हो पर हठ नहीं छोड़ना।

४४९ मांटीरी मारी और राजरी डंडी रो कांई मैणो ?
पतिने मार दिया और राजने दण्ड दिया तो इसमें क्या ताना।

४५० मांय-रा-मांय, बारै-रा-बारै
भीतर-के भीतर और बाहर-के-बाहर
(१) जो दोनों ओर मिला रहे
(२) जो दोनों ओरसे लाभ उठावे।

४५१ मिनकी दूध पीवै नहीं तो ढोळ तो देवै

बिल्ली दूध पीती नहीं तो गिरा तो देती है

दुष्ट आदमी व्यर्थ दूसरों को हानि करते हैं ।

४५२ मिनकी दूध पीवती आंख्यां मींचै

बिल्ली दूध पीते हुअे आँखें मूंदती है

४५३ मिनकीरै पेटमें घी थोड़ो ही खटावै

बिल्लीके पेटमें घी थोड़े ही खटता है (रह सकता है, पच सकता है)

छिछोरे व्यक्तियोंके पेटमें बात नहीं रहती, वे उसे सबसे कहते फिरते हैं ।

४५४ मिनकीरै भागरा छींको टूट्यो

बिल्लीके भागका छींका टूटा

(१) जब संयोगसे कोई कार्य हो जाय ।

(२) जब संयोगसे तुच्छ आदमीको कोई बड़ी वस्तु मिल जाय ।

४५५ मिनख कमावै च्यार पोर, ब्याज कमावै आठ पोर

मनुष्य केवल चार पहर (अर्थात् केवल दिनमें) कमाता है पर ब्याज आठों पहर (अर्थात् दिन-रात) कमाता रहता है ।

ब्याज दिन-रात बढ़ता रहता है अतः रकमको ब्याज पर लगाना अधिक लाभ-दायक है ।

मिलाओ—(१) ब्याज और भाड़ा दिन-रात चलता है ।

(२) ब्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता ।

४५६ मिनख मजूरी देत है, क्या देवेगो राम ?

मजदूरी तो मनुष्य भी देता है परमात्मा क्या देगा ? अर्थात् सब कुछ देगा ।

४५७ मिनख मनखरो देव है, कदा करै रो काम ?

अब मनुष्य ही मनुष्यका देव है तो फिर क्या नहीं देता ?

४५८ मिनख मार हाथको धोवैगो

मनुष्यको मारकर हाथ नहीं धोना।
जिंदगी ना दुरके मिलो।

४५९ मिनखरो काम मिनखसूं पड़ै

मनुष्यका काम मनुष्यसे पड़ता ही है, इसलिये किसी मनुष्यको तुच्छ समझकर उपेक्षा नहीं करना चाहिये। सभीकी सहायता करनी चाहिये क्योंकि इसीको सहायताकी आवश्यकता खुदको भी पड़ेगी।

४६० मिनखरो मिनखसूं सौ वार काम पड़ै

मनुष्यका मनुष्यसे सैकड़ों बार काम पड़ता है।
(ऊपरवाली कहावत देखिये।)

४६१ मिनखांमें नाई, पखेरुवांमें काग
पाणी मायलो काछबो, तीनूं दगैबाज

मनुष्योंमें नाई, पक्षियोंमें कौआ और जलवालोंमें कछुआ- तीनों दगाबाज होते हैं।

मिलाओ—नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।

मिनखांरी माया, रूंखांरी छांवा (पाठान्तर—दरखतरी)

ष्योंकी ही सब माया है और रूखों ही की छाया है।
योंके कारण ही सब चहल पहल है। घरमें ...
... है।

४६९ मिनक्यांरी दुरासीसां छींका थोड़ा ही टूटै है ?

बिल्लियोंकी दुआओंसे छींके थोड़े ही टूटते हैं ?
बुरा चाहनेवालोंकी इच्छासे ही बुराई नहीं हो जाती ।
मिलाओ—ढेडांरी दुरासीसां ढांढा थोड़ा ही मरे ?

४७० मिलै तो ईद, नहीं तो रोजा

हाथमें आ जाय तब तो हाथ-का-हाथ उड़ा देना और कुछ न रहे
मरना ।

४७१ मिलै मुफतरो माल, सांड रैवै सारा

मुफ्तका माल मिलता है और सांड बने हुअे मौज उड़ाते हैं ।
आधुनिक साधु-संन्यासियोंके लिअे ।

४७२ मिसरी कह्यांसूँ मूं मीठाको हुवै नी

मिश्रीका नाम लेनेसे ही मुंह मीठा नहीं हो जाता ।
केवल बातोंसे ही काम नहीं चलता ।

४७३ मियांजी-मियांजी थारी जिलंपतरी
दाढ़ी-मूछ्यां कैण कतरी ?

अजी मियांजी ! तुम्हारी जन्मपत्री, तुम्हारी दाढ़ी-मोंछ दोनोंको किसने कतर डाला ?

(१) अपने आपको बहुत होशियार समझने वाला जब ठगा जाय तब ।
(२) बालकोंका खेलमें अेक-दूसरेको चिढ़ाना । हास्यमें

४७४ मियां ! थारी बुझाऊं कै म्हारी ?

मियां । तुम्हारी आग बुझाऊं या अपनी ?
पहले अपना दुख दूर किया जाता है, पीछे दूसरोंका ।

४७५ मियां-बीबी राजी तो क्या करैला काजी

मियां-बीबी (पति-पत्नी) राजी तो फिर काजी बीचमें क्या करेगा ?
जब दो आदमी आपसमें निबट लें तो दूसरोंका बीचमें पड़ना व्यर्थ है ।
जब दो आदमी आपसमें मिल जायँ तो दूसरे बीचमें दखल देकर क्या लेंगे ।

४७६ मियां भी नूंवा'र कायदा भी नूंवा

मियां भी नये और कायदे भी नये ।
(१) नये हाकिमके आने पर नये कायदे बरते जाते हैं ।
(२) स्वेच्छाचारी हाकिमों पर ।

४७७ मियां जी ! मरो हो काईं ? कै झख मारकै

किसीने पूछा -मियांजी मर रहे हैं क्या ? तो कहा—
झख मारके (मरना पड़ता है)
जब कोई काम अनिच्छा से बरबस करना पड़े तब

४७८ मियां मरग्या क रोजा घटग्या ?

(अब) मियां मर गये या रोजे घट गये ?
जो बात पहले थी वह अब भी है । अब भी काम हो सकता है ।

४७९ मियां मुट्ठी भर, दाढ़ी हाथ भर

नाटे कद और लंबी दाढ़ी वाले व्यक्ति के लिए हास्यमें ।

४८० मियां, रोते क्यूं हो ? कै बंदेकी सकल ही ऐसी है

किसी रोनी-सूरतवालेको देखकर एक आदमीने पूछा—मियां रोते क्यों ?
तो कहा—बंदेकी सूरत ही ऐसी है ।
जो मनहूस और रोनी सूरत बनाये रहे उसके लिये ।

४८१ मियांजीरी दौड़ मसीत तांणी

मियांकी दौड़ मसजिद तक

जिस आदमीमें थोड़ी ही सामर्थ्य हो उसके लिये।

४८२ मियांजी जिलमरा गोदू

मियांजी जन्मके डरपोक

डरपोक या कमजोर आदमीके लिये।

४८३ मियांजी मरग्या पण टांग ऊँची रही

मियांजी मरे पर टांग ऊँची ही रही

अन्त तक अपना हठ रखना।

४८४ मीठाखाऊ मेद-कमाऊ

मीठा खानेवाला और थोड़ा कमानेवाला

जो कमाता नहीं और मौज करना चाहता है उसके लिये।

४८५ मीठी छुरी जहरसूं भरी

कपटीके लिये।

४८६ मीठाबोला लोक नै कड़वो-बोली मां

मीठा बोलनेवाले लोग और कडुवा बोलनेवाली माता

(१) कुपथमें जानेपर लोग तो उत्साहित करते हैं पर माता फटकारती है

४८७ मीठी रोटी तोड़े जठीनै ही मीठी

मीठी रोटीको जिधरसे तोड़ो उधर ही मीठी होगी

सज्जन सब प्रकारसे भले होते हैं

कोई काम जो सभी प्रकारसे लाभदायक हो।

४८८ मीठी वाणी दगाबाजरी निसाणी
मीठा बोलना यह दगाबाजका लक्षण है
दगाबाज मीठी-मीठी बातें करके अपने फंदेमें फँसाता है।

४८६ मीठैरै लालच ऍंठो खावै
मीठेके लालचसे जूठा खाता है
(१) जिह्वाके स्वादके लिये बुरा काम करता है
(२) स्वार्थके लिये खुशामद करनी पड़ती है

४६० मीठो खासी जका खारो ही खासी
जो मीठा खावेंगे वे खारा भी खावेंगे।
(१) जो आनंद मनाते हैं उन्हें दुख भी भोगना पड़ता है
(२) जो लाभ लेते हैं उन्हें हानि भी सहन करनी पड़ती है

४६१ मींडकीनै जुकाम हुयो
मेंढकीको जुकाम हुआ
(१) जब छोटा आदमी भी नजाकत दिखावे

४६२ मुखमें राम बगलमें छुरी
कपटी के लिये।

४६३ मुखे मिष्टा, हिरदे दुष्टा, बात-बात ठगोसरी
बणिकपुत्र महापापी, बीस बिस्वा म्हेसरी
मुखमें मीठे पर हृदयमें दुष्ट और बात-बात में ठगोंके सरताज-इस प्रकार बनिये महापापी होते हैं और उनमें भी माहेश्वरी तो बीस बिस्वे।
मि०—(१) आण मारै बाणियो, सिरण मारै चोर।
(२) बाण्यो मित्र न वेस्या सती।

(३) सब आदरा मिलिया अरे मिलिया आनंद संगात
बिन का आदरा भांगरो पूगा पाईं पार
(४) दरसावे अपनी दसा पग उठावै चोट
दिनों पितों हाथों [illegible] [illegible] थाट
(५) कूड कपट माही भरी, स्वारथ को अत सीच
बिधि कर रखी मुंड दे, बेस भांति जग बीच

४६४ गुदराने आदेस है

मुद्रा (साधु-वेश) को नमस्कार है।
यदि कोई व्यक्ति साधुपनसे रहित हो पर साधुका वेश धारण किये हो तो भी उसका आदर किया हो जाता है।

४६५ मुफतका चंदन घस ले लाला तूं भी घस, तेरे बापको बुलाला।

(१) जो मुफ्तके मालका बेरहमीसे उपयोग करे उसके लिये !
(२) मुफ्त मिले मालका उपयोग लोग बेरहमीसे करते हैं।

४६६ मुफत माल बेरहम

मुफ्तका माल मिलने पर दिलमें दया नहीं रहती।
मुफ्तकी चीजको खूब उड़ाया या काममें लाया जाता है।
मि०—(१) माले मुफ्त दिले बेरहम।
(२) मुफत का चंदन घस, ले लाला!
तू भी घस तेरे बापको बुलाला।

४६७ मुफतरी मुरगी काजीजीने हलाल

मुफतकी मुर्गी काजीजीको हलाल।
मुफ्तकी चीज सभी ले लेते हैं।

४९८ मुफतरो खावणो, मसातमें सोवणो

मुफ्तका खाना, मसजिदमें सोना।

निकम्मोंके लिअे।

४९९ मुनी जिता ही मत

जितने मुनि उतने ही मत।

(१) सबकी राय भिन्न-भिन्न होती है !

(२) अनेक सम्प्रदाय हैं, धर्म अनन्त हैं।

(३) जब किसी जातिमें या समाजमें अेकता न हो।

मि०—(१) भिन्नरुचिर् हि लोकः

(२) मुंडे-मुंडे मतिर् भिन्ना

(३) श्रुतिर् विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना।

नैको मुनिर् यस्य वचः प्रमाणम्।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां।

महाजनो येन गतः स पन्थाः॥

५०० मुंजेवड़ो बळ ज्याय, पण वट को नीकळेनी

मूंज जल जाती है पर उसका बल (अैंठन) नहीं जाता।

स्थिति बिगड़ जाने पर भी हठ या अैंठको न छोड़ना।

५०१ मूतशीनै माधोसाही लाधो

मूतती हुईको माधोसाही (अेक सिक्का) मिला।

बिना परिश्रम काम हो गया या काम बन गया।

५०२ मूतरी किसोक निझास ?

मूतकी कितनी गर्मी ?

अस्थायी वस्तुके लिअे या ज्यादा देर नहीं टिकती।

५०३ मूरख खाय मरै, का उठाय मरै

मूर्ख खाकर मरता है या उठा कर मरता है (मूर्ख जब खाता है तो मूर्खतामें बहुत ज्यादा खा जाता है या कोई काम करता है तो दुःसाहससे शक्ति न होने पर भी उसे करता है)।

(१) जो अति करके हानि उठावे उसके लिअे।

(२) मूर्ख अति करके हानि उठाता है

५०४ मूरखनै मारणो सोरो, समझावणो दोरो

मूर्खको मारना सहज, समझाना कठिन

मूर्ख समझानेसे बातको नहीं मानता। मूर्ख मारनेसे ही समझता है।

५०५ मूरखनै समझावतां ग्यान गांठरो जाय,

मूरखको समझावते ज्ञान गांठका जाय

मूर्खको समझानेका प्रयत्न करनेसे कष्टके सिवाय कोई फल नहीं होता।

५०६ मूरख मिलतो ही मारै

मूर्ख मिलते ही मारता है

मूर्ख मिलते ही हानि पहुचाता है।

५०७ मूरखांरा किसा न्यारा गांव बसै?

मूर्खोंके कोई अलग गांव थोड़े ही बसते हैं?

मूर्ख और बुद्धिमान सभी साथ ही रहते हैं। मूर्ख सब जगह पाये जाते हैं।

५०८ मूरखांरै किसा सींग लागै?

मूर्खोंके कोई सींग थोड़े ही लगे रहते हैं?

मूर्खों और बुद्धिमानोंमें आकृतिका कोई अन्तर नहीं होता किन्तु लक्षणोंसे पहचाने जाते हैं। मूर्खोंकी पहचान उनके कार्योंसे होती है और कोई विशेष पहचान नहीं होती।

५०९ मूलमें मूलजी कँवारा, साळैरा लगन पूछै !

असलमें मूलजी खुद ही कुँवारे और सालेके विवाहका लग्न पूछते हैं !

५१० मूळसूं व्याज प्यारो

मूलकी अपेक्षा व्याज प्यारा होता है

(१) रुपया उधार देनेवाले व्याजके लोभमें मूलके डूबनेको नहीं देखते—ऐसे लोगोंको भी रुपया दे देते हैं जहां उसके डूबनेकी सम्भावना होती है।

(२) बेटा-बेटीकी अपेक्षा नाती-पोते अधिक प्यारे लगते हैं।

५११ मूसळ जठै खेमकुसळ

जहां मूसल वहां क्षेम-कुशल

उस मस्त व्यक्तिके लिए जो हमेशा निश्चिन्त रहता है

५१२ मूँगोरै भरोसै काळी-मिर्च ना चाब लियै

मूंगोंके धोखेमें काली मिर्च मत चबा जाना

(१) लाभदायक समझकर हानिकारक काम न कर बैठना।

(२) कमजोरके भरोसे जबर्दस्तसे न भिड़ जाना।

५१३ मूँघो रोवै एक बार सूँघो रोवै बारबार

महँगा रोवे ओक बार सस्ता रोवे बारबार

महँगी चीज लेनेसे अेकबार दाम तो ज्यादा लग जाते हैं पर चीज अच्छी मिल जाती है। सस्ती लेनेसे पहले तो दाम कम लगते हैं पर वह बारबार खराब होती है।

५१४ मूँड्योड़ै माथैरो अर कूट्योड़ी ओखदरो कांई ठा पड़ै ?

मुँडे हुअे माथे (बाले) का और कुटी हुई औषधिका क्या पता चले ?

कुटी हुई औषधमें कौन-कौनसी दवाएँ मिली हैं इसका पता नहीं चल सकता और सिर मुँडाने पर यह पता नहीं चल सकता कि मुंडित व्यक्ति ज्ञानी है या अज्ञ पशु।

५१५ मूंडा जित्ती बातां

जितने मुँह उतनी ही बातें

सब लोगोंकी बातें अलग-अलग होती हैं।

सब आदमी अलग-अलग बात कहते हैं!

५१६ मूंडा देख'र टीका काढै

मुँह देखकर टीके निकालता है।

(१) बाहरी वेश देखकर उसके अनुसार आदर करना

(२) सबके साथ अेक व्यवहार न करना

५१७ मूंडै चढाया माथै चढ़ै

मुँह चढ़ाये सिर चढ़ते हैं

मुँह लगानेसे लोग सिर चढ़ जाते हैं

५१८ मूंडमें कवो माथैमें जूती

मुँहमें ग्रास, सिरमें जूती

तिरस्कारके साथ भोजन करना या तिरस्कार पूर्वक कुछ देना

५१९ मूंडैमें बत्तीस दांत है

मुँहमें बत्तीस दांत हैं

जिस व्यक्तिके अशुभ वचन सत्य हो जायँ उसके लिए

५२० मूँ देख' टीको काढै

मुँह देखकर टीका निकालता है

(ऊपर कहावत नं॰ देखिये)

५२१ मूँ देख्यांरी प्रीत है

मुँह देखेकी प्रीति है

जब तक सामने रहे तभी तक प्रेम करना। दिखाऊ प्रेम।

५२२ मूं में राम बगलमें छुरी

सामने मीठा बोलता है पर पीछेसे बुराई करता है

ऊपरसे मीठी बातें करता है पर हृदयमें कपट रखता है !

५२३ मूं मीठो, पेट खाटो

मुख मीठा, पेट खोटा

कपटीके लिये जो ऊपरसे मीठा बोले पर हृदयमें कपट रखे ।

५२४ मूं सुई-सो पेट कुई-सा

मुँह सुई जैसा (छोटा) पर पेट कुंई जैसा (मोटा)

देखनेमें दुबला पर बहुत खानेवाला ।

५२५ मेह और पावणा किणरें घर

मेह और पाहुन किसके घर ?

मेह और पाहुने भाग्य से ही आते हैं ।

मेह और पाहुने स्थायी होकर नहीं रहते ।

५२६ मेह और पावणा किता दिनारा ?

मेह और पाहुने कितने दिनोंके ?

ये अधिक नहीं ठहरते ।

५२७ मैं पियो, म्हारे बळद पियो, अब कुवो ढुह पड़ो

मैंने पिया, मेरे बैलने पिया, अब कुँआ गिर पड़ा

...ान ।

...। रोग

... कि पोलिया रोग है

... और दूसरे को सुदरनामें भी दोष निकाले

५२९ मैं ही कियो'र मैं ही ढायो

मैंने ही किया और मैंने ही ढहाया (मिटाया)

खुद ही बनाना और बिगाड़ना ।

५३० मौकै माथै हाथ आवै जको ही हथियार

मौके पर हाथमें आ जाय वही हथियार

मौके पर जिससे काम बन जाय उसे ही वास्तव में रक्षक व सहायक समझना चाहिए ।

५३१ मोटा* कानांरा काचा (*पाठान्तर राजा)

बड़े आदमी कानोंके कच्चे होते हैं

जो सुनते हैं वही सच मान लेते हैं जाँच नहीं करते ।

५३२ मोटी रातांरा मोटा ही झाँझरका

लंबी रातोंके लंबे ही तड़के

बड़ोंकी सभी बातें बड़ी होती हैं ।

५३३ मोटांरी गांडमें बड़नो सोरो, पण निकळनो दोरो

बड़ोंकी गाँड़में घुसना सहज पर फिर निकल आना कठिन

बड़ोंसे मेल-जोल करना कठिन नहीं पर मेलजोल हो जानेके बाद उनके चंगुल से छुटकारा मिलना कठिन है ।

५३४ मोटांरी पंसेरी ही भारी

बड़ोंकी पंसेरी भी भारी होती है

(१) बड़ों की हरेक बात बड़ी ।

(२) बड़ोंकी तुच्छ-से-तुच्छ बात बड़ी समझी जाती है ।

५४१ मोथा बुरी बलाय, लूण घतावै खीरमें

मोथे (हठी मूर्ख) बुरी बला हैं जो खीर में नमक डलवाते हैं

हठी मूर्ख अपने अनुचित हठपर भी डटा रहता है। हठी मूर्ख के लिअे।

५४२ मोर बोलै मीठो, खा ज्यावै सरपनै

मोर बोलता मीठा पर खा जाता है सांपको

कपटीके लिअे।

५४३ मोर बागमें बोल्यो, कण दीठो ?

मोर बागमें बोला, उसे किसने देखा ?

जब कोई गुणी अपना गुण ऐसी जगह दिखाये जहां समझनेवाला कोई न हो

५४४ मोरियो पांखां देख'र राजी हुवै पग देख'र झुरै

मोर पांखे देखकर खुश होता है, पर पैर देखकर रोता है

सब सुख होने पर भी अेक दुख अैसा होना जिससे सब सुखों पर पानी फिर जाय।

५४५ मोरया करै मलार परी परायी ऊपरै

पराये भरोसे मोर मलार गाते हैं

जो दूसरोंके धनपर या दूसरोंकी कमाई पर मौज करे।

५४६ मोरयो पगां कानी देख'र झूरै

मोर पैरोंकी ओर देख कर रोता है

(ऊपर कहावत नं० ५४४ देखिये)

५४७ म्याऊँरो माथो कुण पकड़ै

म्याऊँको ठौर कौन पकड़े ?

अर्थात् खतरेका सामना या दाव कौन करे ?

अं०—Who is to bell the Cat.

५४८ म्हारी-म्हारी छाळियां दूधो-दहियो पाऊं

मेरी-मेरी बकरियोंको दही-दूध पिलाऊं

अपने घरवालों को आराममें रखना और दूसरोंकी कोई पर्वा न करना।

५४९ म्हारै बापनै धान मती मिलज्यो, मनै बळीतै मेलसी

मेरे बापको धान न मिले नहीं तो वह मुझे ईंधन चुगनेको भेजेगा

आलसी व्यक्ति को लज्जित करने के लिए व्यंगोक्ति।

५५० म्हां बैठां ही पाड़ासणरो बेटो सासरै जाय!

हमारे बैठे ही पड़ोसिनको बेटो ससुराल चली जाय।

हमारे रहते यह काम हरगिज नहीं हो सकता

५५१ म्हारै-थारै सात सुख

हमारे और उनके सात सुख हैं

हममें और उनमें पूरा प्रेम-भाव है।

५५२ रांधियो पण जांचियो नहीं

रचा पर जंचा नहीं

काम हुआ पर अच्छा नहीं हुआ।

५५३ रजपूतनै रेकारेरी गाळ

राजपूतके लिये रेकार गालीके बराबर है

राजपूतको अपमानजनक संबोधन जरा भी सहन नहीं होता।

मि०—तगा, तगाई मत करे कहे मूंछ संभाळ।
नाहरने रजपूतने रेकारो गाळ॥

५५४ रजपूतरी जात जमी, घोड़ैरी जात घास

राजपूतकी जाति उसकी जमीन है, और घोड़ेका अन्न उसका···

राजपूतके पास जमीन है तो नीच कुलका होनेपर भी वह ऊंचा हो जाता है।

५५५ राजपूती धोरोंमें रळगी, ऊपर रळगी रेत

राजपूती टीबोंमें मिल गयी और ऊपर रेत फिर गयी

अब राजपूती नहीं रही ।

५५६ रजपूती रैयी नहीं, पुगी समँदां पार

राजपूती नहीं रह गयी, वह तो समुद्र पार पहुंच गई (अलोप गयी) ।

५५७ रतन सेठ बेटा २ करतो मरग्यो बेटा रॉड़ रा अे मरै

सेठ रामरतनजी हाग बेटे की लालसा लिअे हुअे ही मरे परन्तु कपूत बेटे कमी नहीं है ।

कुपुत्र होने की अपेक्षा अपुत्र रहना अच्छा

बीकानेर निवासी स्वनामधन्य परम भगद्भक्त सेठ रामरतनदासजो वर्तमान सुविख्यात फर्म 'वंशीलालजी अबीरचंद' के मालिकों के पुरखे आपने संतान नहीं थी जिसकी उन्हें बड़ी लालसा थी। जब किसी कुपुत्र फटकारना तथा लज्जित करना हो तब उपयुक्त कहावत प्रयुक्त की जाती है 'अर्थात् वे अपुत्र ही मरे तो अच्छा हुआ तुम्हारे जैसा कुपुत्र उनके उत्प हुआ होता तो वंशको कलंक ही लगता ।

५५८ रमो-खेलो, अे छोकरियां ! लूहारी डोरी

खब आनँद करो, कौन टोकनेवाला है (व्यंगसे)

५५९ रळियांरा जाया, गळियांमें रुळिया

जो आनंदोत्सव में जनमे थे वे गलियोंमें भटक रहे हैं ।

दैव-गति पर ।

५६० रवै तो आपसूँ, नहीं तो जाय सगे बापसूँ

स्त्री रहती है तो स्वयं ही रहती है नहीं रहती है तो सगे बापको छोड़कर चली जाती है (भाग जाती है) ।

५६१ रस्तै आवणो, रस्तै जावणो

रास्ते आना, रास्ते जाना
अपने कामसे काम रखना।

५६२ रंगमें भंग

शुभकार्यमें विघ्न पड़ना।

५६३ रंगरूड़ो गुण-न्नायरो राहीड़ैरो फूल

रोहीड़ेका फूल सुंदर रंगका पर गुण रहित अर्थात् निर्गन्ध होता है
गुणोंसे रहित सुंदर या धनवान पुरुषके लिये।

५६४ राई घटै न तिल वधै, रह रे, जीव ! निसंक

(१) भाग्यमें जो कुछ लिखा है वह होगा ही !
(२) भाग्यमें जितना मिलना लिखा है ठीक उतना ही मिल जायगा।

५६५ राईनै परवत करै, परवत राइ्रो मान

राईको पर्वत कर देता है, और पर्वतको राईके बराबर
ईश्वरकी कुदरत सब कुछ कर सकती है।

५६६ राखणहार भया भुज च्यार तो क्या बिगाड़े भुज दो के बिगाड़े

यदि चार भुजावाला (परमात्मा) रक्षक है तो दो भुजावाला (मनुष्य) क्या बिगाड़ सकता है ?
परमात्मा जिसकी रक्षा करता है उसका मनुष्य कुछ नहीं बिगाड़ सकता।
मि० जाके रखवाल गोपाल धनी ताको भरभट कहा डर रे

५६७ राखपत रखापत

(दूसरोंकी) पत रखो, (दूसरोंसे अपनी) पत रखाओ
दूसरोंके साथ जैसा बर्ताव करोगे वैसा ही बर्ताव दूसरे तुम्हारे साथ करेंगे

५६८ रागरो घर वैराग

रागका घर वैराग्य

५६९ रागो हालै रगमग, तीन माथा दस पग

रागा रगमग करता हुआ चलता है, उसके तीन माथे

यह एक पहेली है, बैलगाड़ी के दो बैल और हां

मस्तक और १० पैर होते हैं।

५७० राज पोपांबाईरो, लेखो राई-राईरो

पोपांबाओका राज्य है जिसमें राई-राईका लेखा होता है

अव्यवस्था और कुशासनके लिये।

५७१ राजरी आस करणी, पण आसंगो नहीं करणो

राज्यकी आशा करनी चाहिये पर सामना नहीं करना चाहिये

राज्यसे विरोध करना अच्छा नहीं।

५७२ राज-रीत आवै जठै राज आयो रेवै

जहाँ राजोचित व्यवहार आ जाता है वहां राज्य अवश्य आता है

५७३ राजरा मारग माथै ऊपर

राज्यका मार्ग सिरके ऊपर (होकर भी जाता है)

राजा चाहे जो कुछ कर सकता है।

५७४ राजा* करे सो न्याव, पांसो पड़ै सो दाव (*पाठान्तर—

राजा करता है वही न्याय, पांसा पड़ता है वही दाव है

५७५ राजा मानै अको रागी, और भरो पाणी

जिसे राजा माने वही रानी, [illegible] पानी भरे

[illegible] जिसको चाहता है, मूर्खका आदर होता है।

५८४ रांड ! भातो मोड़ो लायी, कै-खोज-गया ! हमै ही खेगो है

रांड ! भाता देर से लायी ? तो कहती है--खोज-गये ! अभी भी बन्दी है।

५८५ रांड, भांड अर बुलड़ग्यो गाडो कैरे सारै थोड़ा ही रैवै है ?

रांड, भांड, और उलटती हुई गाड़ी किसी के वश में थोड़े ही रहते हैं !

५८६ रांडरी दुराशीससूँ टाबर को मरै नी

रांड की दुराशीष से बच्चे नहीं मरते

अकारण दुराशीष देने से कोओ अनिष्ट नहीं हो सकता।

मिलाओ—ढेडरो दुराशीससूं किसा दाव मरै !

५८७ रांड रोवै, कवारी रोवै, साथ लगी सतखसमी रोवै

आवश्यकता से अधिक सहानुभूति दिखाने पर।

५८८ रांड, सांड, सोड़ी, संन्यासी, अिणसूं बचै तो सेवै काशी

काशी बास करना हो तो अिन चारों से बचकर रहें।

५८६ रांड हुओरो धोको नहीं, सपनो तो साचो करणो

रांड (विधवा) होने का धोखा नहीं, सपना सच्चा करना है।

(रांड चाहे हो जाअूं पर सपना तो सच्चा करना ही चाहिये)

नुकसान सह लेना पर अपना हठ कायम रखना।

५६० रांडां तो रँडापो काढै, पण रंडुवा काढण को दैनी

विधवाअें तो विधवापन बिता दें पर पुरुष नहीं बिताने देते

पुरुष ही विधवाओं के चरित्र को ज्यादातर बिगाड़ते हैं।

५६१ रांडां रोवती ही जाय, पावणा जीमता ही जाय

५६२ रांडां ! रोवो क्यूँ छो ? खसमांनै

खसम तो जीवै है नी छे ? तो घाटो ही क्यांरो

रांडों ! रोती क्यों हो ? पतियों को ?

पति तो जीवे हैं न ? यदि ऐसा होता तो फिर घाटा ही किस बात का ?

पौरुषहीन पति या मालिक या किसी अन्य पौरुषहीन व्यक्ति पर

५६३ रांडां ! रोवो क्यूँ हो छ ? मोटा मरग्या ?

जीवा होनी ? जणा ही तो रोवां हां।

प्रश्न पतियों का—रांडों ? क्यों रोती हो री ?

उत्तर स्त्रियों का—पति मर गये इस लिये।

पतियों का कथन—अरी हम तो जी रहे हैं ?

स्त्रियों का प्रत्युत्तर—तभी तो रोती हैं (कि मरे हुये पति अभी जीवित हैं, इससे तो अच्छा था कि सचमुच मर जाते)

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५६४ राणीनै काणी कह दी

रानीको कानी कह दिया ?

अपनेको बड़ा समझनेवाला व्यक्ति सच्ची बात कही जाने पर जब नाराज हो जाय तब।

५९६ राणोजी थरपै जठे ही अुदैपर

राणाजी स्थापित करें वहीं अुदयपुर

एक प्रतापी पुरुष जो बात निश्चित कर दे उसे मानना पड़ता है।

५९७ राणोजी थापै जकी ही राणी

राणाजी स्थापित करें वही रानी

(देखो ऊपरवाली कहावत)

५९८ राणोजी रूठसी आपरो अुदैपुर राखसी

राणाजी रुठेंगे तो अपना अुदयपुर रखेंगे

बड़े आदमी के रूठनेसे इतनी ही हानि होगी कि वह अपने स्थान आ[ने]

रोक देगा (और क्या करेगा)

मिलाओ —फूफोजी रूठसी तो भूवाजी नै राखसी !

५९९ रात गयी, ब्रात गयी

६०० रात थोड़ी, सांग घणा

रात छोटी पर, नाटक खेल बहुत

मि०—रात थोड़ी, कहानी बड़ी

६०१ रात राणी, बहू काणी

रात रानी बहू कानी

६०२ रात्यूँ रोया पण मरयो अेक ही कोनी

रातभर रोये पर मरा अेक भी नहीं

(१) बिना कारण के बहुत आडंबर किया जाय तब

(२) बहुत परिश्रम करने पर भी फल प्राप्त न हो तब।

६०३ रावड़ी कै-मनै ही दांतांसूँ खाओ

रावड़ी, कहती है कि मुझे भी दांतों से खाओ
जब कोओ छोटा व्यक्ति बड़ोंकी बराबरी करने चले।

६०४ राब ना रावड़ी, ऊं झुठै खावडी

न कहीं राब, कहीं रावड़ी, फिजूल ही खाबड़ी लेकर झुठ दौड़ता है

६०५ राम कह दियो, अबै रहीम थोड़ो ही कहसी ?

राम कह दिया, अब रहीम थोड़े ही कहेगा ?
(१) हठी आदमी के लिअे जो अेक से दो नहीं होता।
(२) बातपर कायम रहनेवालेके लिअे।

६०६ राम कै'र रहीम नहीं कैणो

राम कहकर रहीम नहीं कहना
बात पर कायम रहना।

६०७ रामजीरी मानी ! देख टाबरां कानी

रामजीकी मानो, बच्चोंकी ओर देख

६०८ रामजीरो आसरो है

रामजीका सहारा है
भगवानका भरोसा है।

६०९ रामजीरा दीन है

रामजीके दिये हुअे (सब पदार्थ) हैं
अच्छी अवस्था है। अजब मंगल है।
घर बालबच्चों से भरा-पूरा है।

[illegible] पड़

रिवाज का रायता करना ही पड़ता है
रिवाजके अनुसार चलना ही पड़ता है।

६२५ रीस मार्‌यां रेसाण ऊपजै
क्रोधको दबानेसे रसायन उत्पन्न होती है
क्रोधको दबा लेना बड़ा हितकारी है।

६२६ रुत बिन रायण ना फळै, मांग्या मिळै न मेह
बिना ऋतु पेड़ नहीं फलते, मांगनेसे मेह नहीं मिलता
सब काम अपने समय पर ही हो सकते हैं।

६२७ रुपियोंरी खीर है
रुपयों की खीर है (रुपया हो तभी खीर बनती है)
धनसे सब काम होते हैं।
मि०—पैसोंकी खीर है।

६२८ रुपिया हुवै जद टट्टू चालै
रुपये हों तब टट्टू चलता है
धन हो तभी अभीष्ट कार्य हो सकता है।
मिलाओ—Money makes the mare go

६२९ रुपियै कनै रुपियो आवै
रुपयेके पास रुपया आता है।
रुपयेसे रुपया कमाया जाता है।
Money brings money.

६३० रुपियो मां, अर रुपियो बाप, रुपियै बिना घणो सन्ताप
रुपया मां है और रुपया ही पिता है, रुपये बिना बहुत संताप होता है।

६३१ रुपियो हाथरो मैल है

रुपया हाथका मैल है (जो आता जाता रहता है)

धन आता जाता रहता है अतः उसको खर्च करनेमें आगापीछा नहीं सोचना चाहिये ।

६३२ रूखा सो भूखा

जो रूखा अन्न खाता है वह जल्दी भूखा हो जाता है (जल्दी भूख लग आती है) ।

६३३ रूठ्योड़ो भूपाळ, तूठ्योड़ो वाणियो

रूठा हुआ राजा और प्रसन्न हुआ बनिया बराबर है

बनिया तुष्ठकर भी कुछ नहीं देता ।

६३४ रूप-रूड़ो गुण वायरो रोहीड़ैरो फूल *(पाठान्तर—रूपाळो)*

रूपसे सुन्दर पर गुणोंसे हीन रोहीड़ेका फूल

सुन्दर, पर गुणहीन, पुरुषके लिये ।

मि०—सभा मध्ये न शोभन्ते निर्गन्धामिव किंशुकाः ।

६३५ रूप रोवै, भाग खावै

रूप (वाला) रोता है, भाग (वाला) खाता है

रूप रोवै करम खाय

रूप री थिरांणी पाणी ने जाय

भाग्य बड़ा है । बिना भाग्यके गुण निरर्थक हैं ।

मि० रूपको रोय करम को खाय ।

बिधि-करतूत न जानो जाय ॥

६३६ रूपलाळजी गुरु, बाकी सब चेला

रुपया गुरु है, बाकी सब चेले हैं

रुपया सबसे बड़ा है ।

१३७ रूसणो पत्नी मा रोटीसे [illegible] ([illegible])
[illegible]
[illegible]

१३८ रेगमें रेग मारे
रेगमें रेग [illegible] है
[illegible] को [illegible] है।

१३९ रैतनो माघलिये, हुओ भलो ही बैर ही
[illegible], हो चाहे बैर हो
विरोध होनेपर भी भाभी-बहुओंके साथ ही रहना चाहिये।

१४० रोगरो घर घांसी, लड़ाईरो घर हांसी
रोगका घर खांसी, लड़ाईका घर हंसी
खांसी अनेक रोगोंका मूल है, हंसी-मजाक लड़ाई का कारण।

१४१ रोज करै आव-जाव, जकैरो कोयी न पूछै भाव
जो रोजाना आना जाना करता है, अुसका कोअी आदर नहीं करता
अिसलिये बिना मतलब आव-जाव नहीं रखना चाहिये।
मि०—अतिपरिचयाद् अवज्ञा भवति।
मान घटै नित-हीं-नित जाये।

१४२ रोजा छुड़ावणने गया निवाज गळै पड़ी
रोजे छुड़ाने गये, नमाज गले पड़ी
साधारण दुखसे छूटनेकी कोशिश करते हुअे बड़े दुखमें पड़ना।

रोट खावै सौटीरा, गीत [illegible] वीरैरा
रोटी [illegible]

६४४ रोटी खाणी सक्करसूँ, दुनिया ठगणी मक्करसूँ

रोटी खाना शक्करसे, दुनिया ठगना मक्कारीसे

दाम्भी तथा धूर्त पुरुषों की ऐसी कुनीति होती है।

६४५ रोटी खावतां-खावतांने मोत आवै

रोटी खाते-खातोंको मौत आती है

६४६ रोटी मोटी बात, जाळा काटै जीवरा

रोटी बड़ी बात है जो जीवके जाल काट देती है

सबसे बड़ी चीज रोटी है।

६४७ रोयां किसा राज मिलै ?

रोनेसे कौन-सा राज्य मिलता है ?

६४८ रोयां राज को आवै नी

रोनेसे राज्य नहीं आ जाता

(१) जब कोअी रोता है तब समझाने के लिये कहते हैं।

(२) रोनेसे कुछ नहीं मिलता, परिश्रम करना चाहिअे।

मि० रोनेसे दान नहीं मिलता।

रोनेसे रोजी नहीं बढ़ता।

६४६ रोयां विना मा ही बोबो को देवै नी

रोये बिना मा भी दूध नहीं पिलाती

चुपचाप रहनेसे कोअी ध्यान नहीं देता।

मि० बोलै जकोरा बोर बिकै।

६५० रोळ में घोळ हुवै

६५१ रोव्रतीनै राखी तो कै सागै ही ले चालो
रोती हुई को आश्वासन देकर रोना बंद करवाया तो कहती है कि साथ ही ले चलो
कोओ थोड़ो-सी सहायता करे तो अुसीके पीछे पड़ जाना।
मि० अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना

६५२ रोव्रतो जाव्रै जको मरयाँरी खबर लाव्रै
जो रोता हुआ जाता है वह मरे की खबर लाता है
(१) बिना मनके कोओ काम करे तब कही जाती है
(२) बेमन काम करने से असफलता ही मिलती है
(३) जो भींखता जाता है उसको सफलता नहीं मिलती

६५३ रोहण वाजै मग तपै, गैला ! खेती क्यांनै खपै ?
रोहिणी नक्षत्रमें हवा चले और मृगशिरमें गर्मी पड़े तो बावले ! किसलिओ खेती को महनत अुठाते हो ?

६५४ रोहण तपै मिरगला व्राजै, आदरा अणपूछ्या गाजै
रोहिणी नक्षत्रमें गर्मी पड़े और मृगशिर नक्षत्रमें हवा चले तो आर्द्रा नक्षत्रमें बिना पूछे ही बादल गरजेंगे (और पानी बरसेगा)

६५५ लक्ष्मी बिन आदर कुण करै ?
लक्ष्मी के बिना कौन आदर करे ?
धनहीन का आदर कोई नहीं करता।

६५६ लछमी बिनारो लपोड़
लक्ष्मी के बिना लपोड़
धन न होने पर आदमी लपोड़—गवार, मूख—कहलाता है।

६५७ लड़नरी बखत करै बिछुड़न वेला मत करै

लड़ने का वक्त करना, बिछुड़ने का मत करना

साथ २ रहकर लड़ते रहना मर कर बिछड़ने से अच्छा होता है

६५८ लड़ाईमें किसा लाडू बँटै है ?

लड़ाईमें कौन-से लड्डू बँटते हैं ?

लड़ाई करने से या लड़ाईमें आनेसे, कोई लाभ नहीं होता।

६५९ लड़ाईमें लाडू थोड़ा हो बँटै है• (पाठान्तर—वञ्छ़ै है)

लड़ाईमें लड्डू थोड़े ही बँटते हैं।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

मि•—Keep aloof from quarrels, be neither a witnees nor a party

६६० लड़ै सिपाही जस जमादारने

लड़ै सिपाही, नांव सिरदाररो

लड़ते हैं सिपाही, नाम होता है सरदार का।

युद्धमें सिपाही लड़कर विजय प्राप्त करते हैं पर नाम होता है सेनापतिका कि अमुक सेनापति ने विजय प्राप्त की।

जब काम कोई करे और प्रशंसा की जाय किसी और की।

मि• —The blood of the soldier makes the glory of the general

६६१ लहणो बापरा ही खोटा

लहना (ऋण) बापका भी बुरा

ऋण सदा बुरा है, चाहे निकट सम्बन्धी का ही क्यों न हो।

१६७ लाग लगी जद लाज किसी ?

लगन लग गई तब लाज कौन-सी ?

प्रेम हो गया तो लज्जा का क्या काम ? किसी काममें हाथ डाल दिया तो फिर क्या शरमाना ?

१६८ लागै जकैरै दूखै

जिसके (चोट) लगती है उसीके दुखती है [दूसरेके नहीं दुखती]।

मि॰ जाके पैर न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई।

१६९ लाग्योड़ीमें लाग्या करै

लगी हुई में लगा करती है

विपत्तिमें विपत्ति आती है।

मि॰—(१) छिद्रेष्वनर्था बहुली भवंति।

(२) Misfortune never comes alone.

१७० लाजवाळांनै ओरम है

लाजवालेको जोखिम का भय है

अपनी लज्जा का ध्यान रखनेवाले को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। निर्लज्ज सदा सुखी रहता है।

मि॰—एकां लज्जां परित्यज्य

१७१ लाठी जकैरी भैंस

जिसकी लाठी उसकी भैंस

सब कुछ बलवानका है। बलवान मनुष्यके जो किसी वस्तु पर अधिकार जमा ले तो उसे कौन रोक सकता है ?

मि॰ -Might is right

६७२ लाडूरी कोरमें कुण खारो, कुण मीठो ?

लड्डूकी कोरमें कौन (सा भाग) खारा और कौन (सा भाग) मीठा

सबको एक समान मानना।

पक्षपात रहित रहना।

सबको अच्छा समझना।

६७३ लातांरो देव बातांसूं थोड़ो ही मानै ?

लातोंका देव बातोंसे थोड़े ही मानता है।

दुष्ट दुष्टता करनेसे ही मानता है या सीधा रहता है।

उसको समझाना व्यर्थ है।

मि॰ शठे शाठ्यम् समाचरेत्

६७४ लाद दो, लदाय दो, लादनवाळो साथ दो

(बोझा ऊँट पर) खुद लाद दो, लदवा दो, और एक [illegible]

साथ दे दो।

अनुचित मांग पर। जब किसीको कोई चीज दो और वह कहे कि [illegible]

पहुंचा भी दो।

जब किसीको कोई लाभका काम बताया जाय और वह कहे कि [illegible]

चलकर करवा दो।

६७५ खायो माल खायो

खाया माल खाया

जो खाने में पड़ा हुआ [illegible]

६७६ खा म्हारी पो [illegible]

[illegible]

६७७ ला म्हारी सागी रोटीरी कोर

ला मेरी बड़ी रोटीकी कोर (टुकड़ा)

७८ लांबा हेला, ओछा पीक

लम्बे हेले और थोड़ा स्नेह

दिखावा बहुत और अन्तस में प्रेम नहीं

हेला आवाज देना, पुकारना, बुलाना।

७६ लांबा तिलक, माधरी बाणी, दगेबाजरी आई निसाणी

लम्बे तिलक लगाना और मीठा बोलना—यही दगाबाजकी पहचान है।

धोखा देनेवाला ऊपरसे बड़ा महात्मा बनता है और मीठा बोलता है।

मि॰—Too much courtesy, too much craft

६८० लाठेरा डोका (डाका सूखा हुई डाली का टुकड़ा) सांगन फाड़

जबर्दस्तका डोका भी लाठी का फाड़ डालता है

जबर्दस्तकी सब चलती है। उससे सब डरते हैं।

६८१ लायनें दीयो ले'र देखें है

लगी हुई आगको दिया लेकर देखता है।

आगको देखनेके लिए दियेकी आवश्यकता नहीं-वह तो बिना दियेके दिखाई दे सकती है।

जब कोई स्पष्ट बात को (मूर्खतावश) जानने की चेष्टा करे तब

६८२ लाय मोड़ै, वो काम कद पार पड़ै ?

तो वह काम कब पार पड़े

रर दराव सोचे तब

लाल किताब में लिक्खा यूँ—
तेली बैल लड़ाया क्यूँ ?
खळी खवायकै किया मुसंड,
बैलका बैल और साठ रुपिया डंड ।

पक्षपातपूर्ण न्याय। अपने स्वार्थ के लिअे न्याय का गला घोंटना इसका निकाम
इस कहानी से है :– किसी तेली के बैल ने एक काजी के बैल को मार डाला।
इस पर काजी ने तेली से कहा कि तुमने अपने बैल को क्यों
खला पिलाकर मुसंड किया , जिससे मेरा बैल मारा गया। इस अपराध में
हें बैल और जुर्माना दोनों देना होगा। अन्त में जब काजी को मालूम पड़ा
मेरे ही बैल ने तेली के बैल को मार डाला है तब उन्होंने अपना दोष
करने के लिअे कहा कि फिर जानवर ही तो था अर्थात् पशु को भले
विचार नहीं होता। इस पर तेली ने अपने मन ही मन कहा, "वाह जी
ाहब, एक ही अपराध में अपने लिअे खास अेक का
दूसरा ही"

ुरो बलाय

बुरा है। पूरा दोहा इस प्रकार है—
बैठो पहरसर, पंख गया चपटाय।
अर गिर पुणै, लालच बुरी बलाय ॥
vice like avarice

रे पानै, सेठजी रोवै छानै-छानै
पन्ने पर सेठजी छिप-छिपकर रोते हैं
ना निकले तब।

६८७ ला-ला मिटियां घर मांड्यो है, मूरख कह घर म्हारो

मिट्टी ला-लाकर घर बनाया है और मूर्ख कहता है कि घर मेरा है
शरीरके लिये कहावत। शरीर मिट्टीका बना है पर अज्ञानी मनुष्य
उसे अपना समझता है। धन-दौलत मकान आदिके लिये भी
यह कहावत प्रयुक्त होती है।

६८८ लिख-लिख भेजूँ पत्तर में, तू सित्तर में न बहत्तर में

(बार २) पत्र में लिख दिया है कि तेरा नाम सत्तर और बह
नहीं है।

जब कोई किसीसे मेलजोल करना चाहे और वह उसकी ओर ध्यान
इसका निकास इस कहानी से है :—दो मित्र थे, एक परदेश
था और लम्पट था उसने अपने देशस्थ मित्र को एक दोवड़
भेजी और उसे अपनी प्रेयसी किसी वेश्या को देने के लिए लिखा
बुद्धिमान। वह उस वेश्या के घर गया और उससे कहा कि मि
प्रेमी ने एक दोवड़ी मेरी मार्फत भेजी पर मैं तो भेजनेवाले का
गया। वेश्या अपने प्रेमियों के नाम बतलाने लगी। सत्तर
बतलाये तब तक तो उसके मित्र का नाम नहीं आया। तब उसने
अपने मित्र की बहू को दे दी और उसे लिख भेजा कि तुम क्यों
गंवाता है। वहां तेरी गिनती सत्तर बहत्तर तक तो नहीं है
वेश्या के सैकड़ों प्रेमी हैं तेरी तो वहां गिनती ही नहीं है।

६८९ लि ... आवे

... आवें)

... क्यों खावणी ?

मान ?

६६१ लीलटांस कीड़ा भखै, मुखै विराजै राम
करणी सूं क्या काम है, दरसण सूं है काम

नीलकंठ पक्षी कीड़ोंको खाता है पर उसके मुखसे राम-नाम रहता है।
हमें उसकी करनी से क्या ? हमें तो दर्शनसे काम है (नीलकंठका दर्शन शुभ माना गया है)।
बुरे की बुराई से काम न रखकर उसकी भलाई से काम रखना चाहिये।

६६२ लुगाईरी अकल एडी में हुया करै [पाठान्तर – खेडी मोथै]
स्त्रीकी बुद्धि एड़ीमें हुआ करती है
स्त्री कम अक्लवाली होती है।

६६३ लुखा ल्याड़, घणी खमा
रूखा प्यार, घणी खमा
कोरे सूखे प्यारसे क्या ? कुछ देने-लेने की तो कहो, नहीं तो दूर से प्रणाम।

६६४ लूँकड़ी पाद दियो, सिसियै साख भर दी
लोमड़ीने पाद दिया, सशे ने साक्षी दे दी
जब किसी की हां में हां मिलाओ जाय तब

६६५ लूँठैरो होको डांगनै फाड़ै
जबरदस्त की लाल आंखों के तौर सहने पड़ते हैं।

६६६ लूँठाई रा लाल तुरी
जबर्दस्त मारता है और रोने नहीं देता।
बलवान् सताता है और चूँ नहीं करने देता।
बलवानके अत्याचारको चुपचाप या कारो प्र

६६७ लूटीज्यां पछै कांई डर ?

लुट जानेके पीछे क्या डर ?

जिस बातका भय हो वह हो जाय तो फिर उसका क्या भय !

६६८ लूण बिना पूण रसोई

नमक बिना रसोई अधूरी है

भोज्यवस्तुओं में नमक प्रधान और सबसे उपयोगी है।

६६९ लूली झाड़ दें अद अेक टांग पकड़नाळो चाहीजे

लँगड़ी स्त्री झाड़ दे तब अेक आदमी उसकी टांग को पकड़े रहनेके लिअे चाहिअे।

जब कोई किसी को बिना सहायता के काम न कर सके तब।

७०० लेके दिया, कमाके खाया

झख मारणे जगतमें आया

यदि (किसीका कुछ) लेकर (लौटा) दिया और कमा करके खाया तो वह मनुष्य झख मारनेके लिअे ही जगतमें आया।

दुष्टोंका या आलसियोंका कथन।

७०१ लेणां अेक न देणा दोय

लेना अेक न देना दोय

निकम्मे व्यक्ति के लिअे। सारहीन बात पर।

७०२ लेवण गयी पूत, गमा आयी खसम

लेने गयी पुत्र और गँवा आयी खसम को

लाभके बदले हानि होना

मि०—(१) चौबेजी गये छब्बे होने, दुबे होकर आये।

(२) चौबेजी गये छब्बे होने दो बारके खोय चले होने।

७०३ लोभी गरू लालची चेला, दोऊँ नरक में ठेलमठेल
गुरु यदि लोभी हो और चेला यदि लालची हो तो दोनों न

७०४ लोभे लाग्यो वाणियो चाटे लागी गाय,
हिली हिली लोंकडी अड़क मतीरा खाय
लोभ लगा हुआ वनिया और चाटे लगी हुई गाय और हिली
मतीरा खाने अवश्य आती है।

७०५ लोहैसूँ लोहो घसीजतां आग नीकळै
लोहेसे लोहा घिसने पर आग निकलती है
समान शक्तिशाली पुरुषों की भिड़न्त से नुकसान ही होता है

७०६ लोह जाणै लोहार जाणै, म्हातोरी बलाय जाणै
लोहा जाने लुहार जाने, म्हातो की बला जाने
जिसकी जो वस्तु हो उसे ही उसका ध्यान रखना होता है। अगम्यद्द म
भला दूसरे की वस्तु का क्यों ध्यान रखने लगेगा।

७०७ लोहो लकड़ी चामड़ो, पहली किसा बखाण ?
बहू बछेरो छोकरो नीवड़ियाँ परवाण
लोहा, लकड़ी और चमड़ा प्रयोग में आने पर ही अच्छा बुरा कहा जा
सकता है। बहू बछेड़ा और सन्तान बड़े होने पर अच्छे हों तभी अच्छे
समझने चाहिए।
मिलाओ: Never praise a ford till you are over

व

७०८ वकारयो ढेढ सीटी को दें नी

कहनेसे ढेढ़ सीटी नहीं बजाता (वैसे दिन भर बजाता रहता है)।

नीच आदमी प्रार्थना करने से जिद्दी होता है।

७०६ वकारयो भूत बोलै

पुकारने से भूत बोलता है।

आवाज देते ही कोई तुरन्त बोल उठे तब हंसी में कहा जाता है।

७१० वखत जाय परो, वात रह ज्याय

समय चला जाता है, बात रह जाती है।

भली-बुरी बात रह जाती है (समय किसी का एक सा नहीं रहता)।

७११ वखत-वखतरा रंग जुदा

भिन्न-भिन्न समयों के भिन्न-भिन्न रंग होते हैं।

सब समय अेक-सा नहीं होता।

७१२ वखत-वखतरी रागण्यां है

समय-समय की अलग-अलग रागिनियां हैं।

भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न बातें होती हैं।

प्रत्येक बात का अपना समय होता है और वह तभी अच्छी लगती है।

७१३ वखत देख नहीं विणजै जको वाणियो गँवार

जो वक्त का व्यापार नहीं करता वह बनिया गँवार है।

वक्त के अनुसार काम करना चाहिये। जो नहीं करता वह मूर्ख है।

मि०—जैसी चले बयार पीठ तैसी ही दीजे।

७१४ बखतरा बाया मोती नीपजै
समय पर बोने से उसमें मोती पैदा होते हैं।
(१) समय पर खेती बोने से फसल अच्छी होती है।
(२) समय पर काम करने से बड़ा भारी लाभ होता है।

७१५ बडा कैवै ज्यूँ करणो, करै ज्यूँ नहीं करणो
बड़े लोग कहें वैसे करना चाहिअे, व करें वैसे नहीं करना चाहिअे
बड़ोंके उपदेशोंका अनुसरण करो, आचरणोंका नहीं।
बड़ोंके बुरे आचरणोंका अनुसरण मत करो
बड़ोंकी बराबरी मत करो

७१६ बडा तो भाठा ही घणा हुवै
बड़े तो पत्थर ही बहुत होते हैं
अगर गुण नहीं तो खाली उम्रमें बड़े होनेसे क्या ?
बड़ा वही है जो गुणोंमें बड़ा है।

७१७ बडा बडाई ना करै, बडा न बोलै बोल
बड़े आदमी अपनी बड़ाई स्वय नहीं करते और न व बड़ी बातें बनाते हैं
(या और न किसीको बुरा लगनेवाली बात कहते हैं)
बड़े आदमियोंका लक्षण। बड़े आदमी शेखी नहीं मारते।
मि०—(१) हीरा मुखसे ना कहै लाख हमारा मोल
(२) Saith a false diamond, "what a jeman I.
I doubt its value from its boostful cry.

७१८ बडा लाजरा खातर मरै
बड़े लाजके लिअे मरते हैं।
बड़े आदमी लाज की रक्षा करते हैं

७१६ बडांरा बडा ही काम

बड़ोंके काम भी बड़े ही होते हैं।

(१) बड़े आदमी बड़े काम ही हाथमें लेते हैं।

(२) कोई बड़ा आदमी नीच काम करे तब भी व्यंगसे कहा

७२० बडांरी गांडमें बडनो सोरो, निसरणो दोरो

बड़ोंकी गांदमें घुसना सहज, पर वापिस निकलना कठिन है

बड़े लोगोंसे हेलमेल करना आसान है पर हेलमेल होनेके छुड़ाना चाहे तो बहुत कठिन है।

७२१ बडांरे कान हुवे, आंख्यां का हुवैनी

बड़े आदमियोंके कान होते हैं, आंखें नहीं होती

बड़े आदमी निकट रहनेवालोंकी सुनी बातों पर विश्वास कर स्वयं छानबीन नहीं करते।

७२२ बडी आंख फूटणनें, घणो हेत टूटणनें

बड़ी आंख फूटनेके लिये और अधिक प्रेम टूटनेके लिये हो

७२३ बडा बहू बडा भाग, छोटो लाडो घणा सुहाग

वरसे वधू बड़ी हो तो उसके बड़े भाग हैं क्योंकि छोटा दूल बहुत दिन रहेगा।

बड़ी कन्या का छोटे वरसे विवाह करनेवालोंकी उक्ति

७२४ बड जिसा टंटा, बाप जिसा बेटा

जैसा बड़ वैसे उसके टेंटे (फल), और जैसा बाप वैसे उसके संतान मा-बापके अनुसार ही होती है

७२५ बडां पहलां तेल कढ़ईं पीस्या हा

बड़ोंसे पहले तेल कभी पी गये थे

बालको पहले ही समझ ली थी

र बड़ो सूँ तेल पहली पीवै ... कहावतां

बड़ोंसे भी पहले तेल पीता है

बातको पहले ही समझ लेता है

पहले अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेने वाले पर।

७२७ बड़ा, पकाड़ो, वाणियो, ताता लीजे तोड़

बड़ा, पकौड़ा और बनिया—इनको गरमागरम ही तोड़ लेना चाहि

बड़ों और पकौड़ोंको गर्मागर्म खानेमें ही मजा आता है। और

काबूमें आ जाय तो तुरत उससे काम बना लेना चाहिये, नहीं तो

बाहर होते ही अगूठा दिखा देता है।

७२८ वणज्या अेक बार तो रतन

अेक बार तो 'रतन' बन जा

इस कहावत का निकास इस प्रकार है:—स्वनामधन्य एवं परम भगवद्भक्त

सेठ रामरतनजी द्वारा वर्तमान सुविख्यात फर्म—'बंसीलालजी अबीरचन्द' के

मालिकोंके पुरखे थे। आप जाति के माहेश्वरी डागा थे। आप महादेव के पूर्ण

भक्त थे और दानी तो ऐसे थे कि लोग उनको दूसरा 'कर्ण' ही कहा करते थे।

उनके जीवन के महत्वपूर्ण संस्मरण विस्तार पूर्वक समय मिलने पर लिखे

जायेंगे। उनकी दानशीलता से लोग इतने प्रभावित हो गये कि वे उन्हें

'रत्न' ही कह कर पुकारते थे। उनके द्वार से कभी कोई याचक खाली

हाथ नहीं लौटा। कंजूस व्यक्ति को लज्जित करनेके लिए कहा जाता है कि

एक बार के लिए तो सेठ रामरतन बनजा।

७२९ बनी बनाई सो बाणियो, बगी बिगाड़ै जाट

बनिया बनी [illegible] बनाता है, जाट बनी को बिगाड़ता है

(१) [illegible]। बनिया समयानुसार काम करके काम बनाता है और जाट

समयानुसार काम न करके काम बिगाड़ता है

(२) बुद्धिमान काम बनाता है, मूर्ख बिगाड़ता है।

७३० व्रणी वणावै सो व्राणियो
बनीको जो बनाता है वही बनिया
बनिया समयानुकूल काम करता है

७३१ व्रणीरा किसा मोल ?
बनीका कौन-सा मोल ?
कुसमयमें जो काम सुधर जाय वही अच्छा ।

७३२ वणीरा सै सीरी* (पाठान्तर—साथी)
काम बनने पर सब साथी बन जाते हैं ।

७३३ वणी-बणीरा सै संगाती, बिगड़ीरा कोइ नांय
बने कामके सब साथी हैं, बिगड़ेका कोई नहीं
(१) संपत्तिमें सब साथ देते हैं, विपत्तिमें कोई नहीं देता ।

७३४ वध-वध, रे चंदणरा रूँख ! ऊँचो व्रध
बढ़, रे चंदनके रूख और ऊँचा बढ़
बहुत लंबे आदमीके प्रति हँसी में कहा जाता है ।

७३५ वढ्योरा वढै, नहीं जका काँई वढै !
जो काटे गये हैं वे ही कटते हैं, जो नहीं काटे गये वे क्या काटेंगे
जो दान करते हैं (उदार हैं) वे ही कुछ दे सकते हैं जो दान नहीं ।
वे क्या देंगे ?

७३६ वन-वनरा काठ भेळा हुया है
बन-बन के काठ एकत्र हुये हैं
जगह-जगह के लोगोंका सम्मिलन हुआ है ।

७३७ बहू सो बहू, घर थारो है, ढक्योड़ो मती उघाड़ये

बहू री बहू, घर तेरा है पर ढके हुओ को मत खोलना (बहूके प्रति सास कथन) जब कोई केवल दिखावटी अधिकार दे पर वास्तवमें कुछ न दे जब अेक हाथसे अधिकार देकर दूसरे हाथ से वापिस ले ले ।

७३८ बहू कनांसूं चोर मरावै चोर बहूरा भाई

चोरोंको बहूके द्वारा मरवाती है और बहूके भाई ही चोर हैं (बहूके भाई चोरी करते हैं और चोरोंको दण्ड देनेका काम बहूको सौंपा जाता है)

जिनको काम सौंपा जावे वे ही विपक्षियों से मिले हुओ हों तब

७३९ बहू बछेरा, डीकरा, नीव्रड़ियां परवाण

(१) बहू, बछेरा और संतान को पहले अच्छा नहीं समझना, जब आगे चल कर अच्छे सिद्ध हों तभी अच्छा समझना ।

(२) कोई व्यक्ति या अवस्था या काम आगे चल कर अच्छा सिद्ध हो तभी अच्छा समझना चाहिअे । कोई व्यक्ति या बात अच्छी है या बुरी यह पहलेसे नहीं कहा जा सकता । न जाने आगे चल कर वे कैसे निकलें ।

७४० बहू भोळी घणी जको भूतां भेळी सोवै

बहू भोली बहुत है न, जो भूतोंके साथ सोवे ! (अर्थात् इतनी भोली नहीं) किसीका वास्तवमें इतना भोला न होना जितना कि उसे लोग समझें ।

७४१ बहूरा लखण बारणेसूं ओळखीजै

बहूके लक्षण द्वारसे पहचाने जाते हैं (मालूम पड़ते हैं)

प्रथम द्वार-प्रवेशके समय बहूके

मि०—पूतरा पग पालणै बहूरा बारणै ।

७४२ बाज्या ढोल परणीज्या गोल

ढोल बजे और गोलोंका विवाह हुआ

७४३ बाजे पर पग उठै

बाजे (की ताल) पर पैर उठते हैं

आमदनीके अनुसार ही खर्च किया जा सकता है ।

७४४ बाड़ में मूत्यां किसो बैर निकळे ?

बाड़में मूतनेसे कौन-सा बैर निकलता है ?

सैद्धान्तिक विरोध होते हुओ भी साधारण हेल-मेल तथा शिष्टाचार में फर्क नहीं लाना चाहिये

७४५ बाढी आंगळी पर ही को मूतै नी

कटी हुई उँगलीपर भी नहीं मूतता

आवश्यकता के वक्त मदद न देने वाले के लिये

७४६ बाणियांरा पखाणिया चाट्योड़ांसूं काम को हुवै नी

बनियोंकी कटोरियां चाटनेवालोंसे काम नहीं हो सकता

जिन्होंने बनियोंके घर रह कर माल उड़ाये हैं उनसे मेहनत का काम नहीं हो सकता (विशेषतया बनियोंके यहां रहनेवाले नौकर-चाकरों पर) ।

७४७ बाणियेंरी बेटीनै मांसरी कांई ठा ?

बनियेकी बेटीको मांसके स्वादका क्या पता ?

किसी काम से वास्ता न रखनेवाले के लिये

मि०—बंदर क्या जाने अदरकका स्वाद !

७४८ बाण्यो मित्र न वेस्या सती, कागो हंस न गुधो जती

बनिया कभी किसीका मित्र नहीं हो सकता, वेश्या कभी सती नहीं हो सकती, कौआ कभी हंस नहीं हो सकता और (केश-लुंचन होने पर भी) बगुला कभी यति नहीं हो सकता है ।

बनियेको कभी अपना न समझे (जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर) ।

७३७ बहू थं बहू, पर भारो है, टमकोड़ो मतो बगाड़ये

बहू तो बहू, पर तेरा है पर हके हुये को मत खोलना (बहूके प्रति कथन) अब कोई केवल (दिखावटी) अधिकार है पर वास्तवमें कुछ न दे अब ओक हाथों अधिकार देकर दूसरे हाथ से वापिस ले ले।

७३८ बहू कमाई चोर मराई चोर बहूरा भाई

चोरोंको बहूके द्वारा मरवाती है और बहूके भाई ही चोर है (बहूके भाई चोरी करते हैं और चोरोंको दंड देनेका काम बहूको सौंपा जाता है)

जिनको काम सौंपा जावे वे ही विरोधियों से मिले हुये हों तब

७३९ बहू बछेरा, छोकरा, नीव़ड़ियाँ परवाण

(१) बहू, बछेरा और सतान को पहले अच्छा नहीं समझना, जब आगे चल कर अच्छे सिद्ध हों तभी अच्छा समझना।

(२) कोई व्यक्ति या अवस्था या काम आगे चल कर अच्छा सिद्ध हो तभी अच्छा समझना चाहिये। कोई व्यक्ति या बात अच्छी है या बुरी यह पहलेसे नहीं कहा जा सकता। न जाने आगे चल कर वे कैसे निकलें।

७४० बहू भोळी घणी जको भूतां भेळी सोव़ै

बहू भोली बहुत है न, जो भूतोंके साथ सोवे ! (अर्थात् इतनी भोली नहीं) किसीका वास्तवमें इतना भोला न होना जितना कि उसे लोग समझे।

७४१ बहूरा लखण बारणैसूँ ओळखीजै

बहूके लक्षण द्वारसे पहचाने जाते हैं (मालूम पड़ते हैं) प्रथम द्वार-प्रवेशके समय बहूके

मि०—पूतरा पग पालणै बहूका बारणै।

७५५ बासी रहै न कुत्ता खाय

न बासी रहे न कुत्ते खावें

(१) बाकी कुछ न बचना ।

(२) गरीब आदमी के लिये जिसके पास बचत कुछ नहीं होती हो ।

(३) जब काम थोड़ा सा रहे तो कहा जाता है कि अब इतना क्या छोड़ते हो

७५६ बास्ती कनै घी थाड़ो ही खटावै

आग के पास घी थोड़े ही टिकता है

स्त्रियों के लिये पुरुषों के पास अकान्त में बैठना ठीक नहीं होता क्योंकि इसमें उनके चरित्र में दोष आ जाता है ।

७५७ बांझ कांई जाणै जिणनरी पीड ?

बांझ प्रसव की पीड़ा को क्या जान सकती है

(१) जिसने कभी कोई कष्ट नहीं सहा वह उसकी पीड़ा को क्या जाने ?

(२) जिस पर बीतता है वही जानता है

मि॰ बन्ध्या पीर प्रसूत की कहा बतावें खेद

मि॰—नहिबन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसव वेदना ।

७५८ बांट खाय वैकूंठां जाय

जो बांटकर खाता है वह बैकुंठको जाता है

कोई अच्छी चीज मिले तो उसे दूसरों को बांटकर खाना चाहिये, अकेले नहीं

७५९ बांदरी हो'र बिच्छू खायग्यो

बदरा थो हो, फिर ऊपरसे बिच्छू खा गया

बंदरिया पहलेही बहुत चंचल होती है फिर बिच्छू खा जाय तब तो उसके उछलने कूदनेका कहना ही क्या ?

साधन पाकर दुर्गुण अधिक तीव्र हो उठें तब ।

... कहावतां
... वाण्यां लिखै, पढै करतार
बनिये की लिखावट परमात्मा ही पढ़ सकता है
वाणीका या महाजनी लिपि को पढ़ना बड़ा कठिन होता है।

७५० बात करणरी गुनैगारी है
बात करने की गुनहगारी (सजा) है
चर्चा करने पर नुकसान उठाना पड़े तब।

७५१ बात थोड़ी, वैंदा घणो
(असली) बात थोड़ी विवाद बहुत
ना कुछ बात पर विवाद छिड़ जाने पर।
मि० Much ado about nothing.

७५२ बातांसूँ किसो पेट भरीजै
बातों से कौन-सा पेट भरता है ?
(१) कोरी बातों से भूख नहीं मिटती
(२) खाली बातों से काम नहीं चल सकता
मि० भूख मिटे नहि पेट की थोथी बातां मांय।

७५३ बादळ में दिन दीसै न फूड दळै ना पीसै
दिन उग गया पर बदली के कारण दिखाई नहीं दिखाई देता। फूहड़ समझती है कि अभी रात है इसलिओ वह न उठती है न दलने-पीसने का काम शुरू करती है।
फूहड़ और आलसी के लिये जो अपना काम नहीं करते।

७५४ वारी आयां बूढ्ली ही नाचै
बारी आने पर बुढ़िया भी नाचती है
बारी आते ही अनाक आदमी भी कार्य करने को ...

७५५ बासी रहै न कुत्ता खाय

न बासी रहे न कुत्ते खावें

(१) बाकी कुछ न बचना ।

(२) गरीब आदमी के लिये जिसके पास बचत कुछ नहीं होती हो ।

(३) जब काम थोड़ा सा रहे तो कहा जाता है कि अब इतना क्या छोड़ते हो

७५६ बास्ती कनै घी थाडो ही खटावै

आग के पास घी थोड़े ही टिकता है

स्त्रियों के लिये पुरुषों के पास एकान्त में बैठना ठीक नहीं होता क्योंकि इसमें उनके चरित्र में दोष आ जाता है ।

७५७ बांझ काई जाणै जिणनरी पीड़ ?

बांझ प्रसव की पीड़ा को क्या जान सकती है

(१) जिसने कभी कोई कष्ट नहीं सहा वह उसकी पीड़ा को क्या जाने ?

(२) जिस पर बीतता है वही जानता है

मि० बन्ध्या पीर प्रसूत की कहा बतावें खेद

मि०—नहिबन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसव वेदना ।

७५८ बांट खाय वैकूंठा जाय

जो बांटकर खाता है वह बैकुंठको जाता है

कोई अच्छी चीज मिले तो उसे दूसरों को बांटकर खाना चाहिये, अकेले नहीं

७५९ बांदरो हो'र बिच्छू खायग्यो

बदरा थो हो, फिर ऊपरसे बिच्छू खा गया

बंदरिया पहलेही बहुत चंचल होती है फिर बिच्छू खा जाय तब तो उसके उछलने कूदनेका कहना ही क्या ?

साधन पाकर दुर्गुण अधिक तीव्र हो उठें तब ।

७४६ बाण्यो लिखे, पढै करतार

बनिये की लिखावट परमात्मा ही पढ़ सकता है

बाणीका या महाजनी लिपि को पढ़ना बड़ा कठिन होता है।

७५० बात करणरी गुनैगारी है

बात करने की गुनहगारी (सजा) है

चर्चा करने पर नुकसान उठाना पड़े तब।

७५१ बात थोड़ी, बैंदा घणा

(असली) बात थोड़ी विवाद बहुत

ना कुछ बात पर विवाद छिड़ जाने पर।

मि० Much ado about nothing.

७५२ बातांसूँ किसो पेट भरीजै

बातों से कौन-सा पेट भरता है ?

(१) कोरी बातों से भूख नहीं मिटती

(२) खाली बातों से काम नहीं चल सकता

मि० भूख मिटे नहि पेट की थोथी बातां मांय।

७५३ बादळ में दिन दीसै न फूहड़ दळै ना पीसै

दिन उग गया पर बदली के कारण दिखाई नहीं दिखाई देता। फूहड़ समझती है कि अभी रात है इसलिये वह न उठती है न दलने-पीसने का काम शुरू करती है।

फूहड़ और आदमी के लिये जो अपना काम नहीं करते।

७५४ बारी आयाँ बूढली ही नाचै

बारी आने पर बुढ़िया भी नाचती है

बारी आते ही अशक्त आदमी भी कार्य करने को तैयार हो जाये तब।

मि०—कटै सिर काऊका, बेटा सुधरै नाऊका।
कटैगा बटाऊका, सीखेगा नाऊका।
कटेगा काऊका, सीखेगा नाऊका।

६५ विच्छूरो झाड़ो को आवैनी, हाथ घालै सरपनै

झाड़ा (मंत्र) तो बिच्छूका भी नहीं आता और हाथ डालता है साँपको
अपनी योग्यतासे बाहर काम करना।
मि० —बिच्छूका मंत्र न जाने साँपके पिटारेमें हाथ दे

६६ विचारनै मार है

विचारको मार है
विचारवानको भुगतना पड़ता है।
मूर्खको कोई कुछ नहीं कहता
मिलाओ—खर घग्घू मूरख पशु सदा सुखी प्रिथुराज।
चाकर चकवो चतर नर निसदिन रहत उदास॥

६७ विणज करैला वाणिया, और करैला रीस

वनिज करेगा बनिया और करेंगे रीस
व्यापार बनिया कर सकता है दूसरे नहीं क्योंकि उसमें सहनशीलता
आवश्यक है।

६८ विणज करो रे वाणिया कंई विणज सूं धाया।
अबके टोवणिया विणज कमावै तो गंगाजी में न्हाया॥

बनिये लोग तो व्यापार करें, हमें तो एक बार टोटेके लिए अब तो
गंगा न्हाये जितना ही काम है यहाँ उसे सफलता में कर सकता है
दूसरा नहीं।

७६० बांदरै गळैमें फूलांरो हार

(१) बंदरके गलेमें फूलोंका हार ! (अयोग्य है)

(२) बंदरके गलेमें फूलोंका हार (बहुत देर नहीं टिकता, वह तुरंत ही खराब हो जायेगा)

जब किसीको ऐसी चीज मिले जिसकी कद्र वह न जानता हो

उसके अयोग्य हो

७६१ बिगड़ी खेती'र सुधरी चाकरी बराबर है

बिगड़ी खेती और सुधरी चाकरी बराबर हैं

खेती का बिगड़ जाना और नौकरी का करना ये दोनों एकसी ही बुराई है

७६२ बिगड़ी ने काईं बिसरावणो सुधरी ने काईं सरावणो

बिगड़ी को क्या भूलना और सुधरी हुई को क्या तारीफ करना

बिगड़ी बात को याद रखना चाहिये और सुधरी बात को सराहना करनी चाहिये ।

७६३ बिगड़ीरा तीवण कदे आगै ही सुधर्‌या हा ?

बिगड़ीके तेवर कभी आगे भी सुधरे थे ?

बिगड़ी बात फिर नहीं बनती ।

मि०—बिगड़ी तह फिर नहीं बैठती ।

७६४ बिगड़ैगा तो काऊका, सुधरैगा तो नाऊका

किसीका बिगड़ेगा सिर और नाईका बेटा हजामत बनाना सीखेगा

काम बिगड़ेगा तो दोष दूसरे किसीके सिर, पर सुधरेगा तो नाम नाईका होग

(१) दूसरेकी हानि करके फायदा उठाना ।

(२) काम बिगड़ जाय तो दोष दूसरेके सिर डालना और सुधर जाय तो यश खुद ले लेना ।

७७४ बीती मां वैद

जिस पर बीती है वही वैद्य है

जिस पर बीतती है उसे उस बातका पूरा-पूरा अनुभव होता है औ

उपाय भी उसे मालूम होता है।

जो बीमार हुआ है उसे बीमारीका उपाय भी मालूम है।

७७५ बींद, बींदरो भाई, तीजो बामण, चोथो नाई

अेक दूल्हा, दूसरा दूल्हेका भाई, तीसरा ब्राह्मण, और चौथा नाई

चार आदमी बरातमें गये हैं)

बहुत थोडी सख्याके लिये।

७७६ बींद-बींदणी जोड़े-ताड़े, ले पंसेरी माथो फोड़े

दूल्हा और दुलहिन दोनों अेकही जोड़-तोड़ के हैं (अेक-से हैं),

पंसेरी लेकर माथा ही फोड़ते हैं

जब दो दुष्टोंकी जोड़ी मिल जाय।

जब दो व्यक्ति अेक-से दुष्ट हों।

मि॰ दो घर डूबना एक ही घर डबा

७७७ बींद बींदणी सावधान, घरमें नहीं है पाव धान

हे दूल्हे और दुलहिन सावधान हो जाओ क्योंकि घरमें अनाजका पाव भ

भी नहीं है।

दूल्हा, दुलहिन दोनों बड़े होशियार बने फिरते हैं पर घरमें अनाजका प

धान भी नहीं।

७७८ बींद मरो बींदणी मरो, बामणरो टक्को त्यार

दूल्हा मरो या दुलहिन मरो, पर ब्राह्मण को दक्षिणा का टका चाहिये

दूसरेका नुकसान की परवाह न करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवालेके लि

इस पर एक कहानी है—एक ब्राह्मण ने देखा कि पंचांगों को बे
लोग खूब नफा कमाते हैं मैं भी क्यों न ऐसा करूं ? उसने पंच
लिये पर उसके पास बिक्री नहीं होती, वर्ष बीतने पर उसका
नहीं क्योंकि यह तो वर्ष के आरंभ में बिकने वाली वस्तु है।
होकर ब्राह्मण की उक्ति।

७६९ विण पूछ्यो मूरत भलो, क्या तेरस क्या तीज

तेरस और तीज निश्चय ही अच्छे मुहूर्त हैं, किसीको पूछने की ज

७७० बिना आटै रोटी करै

बिना आटेके रोटी करता है

चालाक और चलते-पुर्जे व्यक्ति के लिये।

७७१ बिना विचारयाँ जो करै सो पाछै पछताय

पहले अच्छी तरह सोच-समझ कर पीछे कार्य करना चाहिये।

मि०—बिना विचारे जो करै सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हसाय॥
जगमें होत हसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान राग रंग मनहिं न भावै॥

७७२ विलायतमें किसा गधा को हुवैनी ?

विलायतमें कौन-से गधे नहीं होते

(१) अच्छे और बुरे सभी स्थानोंमें होते हैं

(२) अच्छे स्थानके भी सभी व्यक्ति या पदार्थ अच्छे नहीं होते।

मि०—Learned fools are found every where.

७७३ बीती ताहि बिसारदे, आगेकी सुध लेय

(१) जो हो गया उसका फिक्र मत करो, भविष्यका ध्यान रखो

७८६ वेळा-वेळारी छियां है

वक्त वक्तकी छाया है (कभी घटती है, कभी बढ़ती)

मनुष्य की दशा समयानुसार बदलती रहती है।

७८७ वेळा-वेळारी राग है

(देखो ऊपर कहावत नं० ७८५)

७८८ वैकूंठ छोटो 'र भगतांरी भीड़

वैकुंठ छोटा और भक्तोंकी भीड़ (हो गई, सारे कहांसे समावें)

थोड़े स्थानमें बहुत व्यक्ति अेकत्र हों तब।

७८९ वैण, सगाई, चाकरी राजीपेरो काम

वादा, सगाई, और नौकरी अपनी खुशीसे की जाती हैं (जबर्दस्ती नहीं हो सकती)

७९० वेंते सौ हाथ, फाड़ें अेक हाथ ही कोनी

नापता है सौ हाथ, पर फाड़ता अेक हाथ भर भी नहीं

जो बड़ी-बड़ी बातें कहता है पर करता कुछ नहीं उसके लिअे

मि०—नापे सौ गज, फाड़े नौ गज

७९१ वेंवतां वेंवतां (पाठान्तर-पड़तरी) आंख्यांमें धूड़ घाल दे

चलते-चलते आंखोंमें धूल डाल देता है

चालाक आदमीके लिअे जो देखते-देखते धोखा दे दे।

७९२ वेंवतेंरी लकड़ी लांबी हु ज्याय

चलते-चलते की लाठी लंबी हो जाती है

चलते-चलते मार्गमें बढ़ईको बैठा देखा, और कुछ काम नहीं हुआ तो यही कह दिया कि जरा लाठी को काटकर छोटा कर देना।

जब किसीको अनावश्यक सताया जाता है तब।

७७९ बींदरे मूंडेसें दो लाळां पड़े अर जानी बापड़ा कांई करै?

दूल्हेके मुंहसे दो लारें टपकें तो बेचारे बराती क्या करें!

(१) जब मुखियेमें ही दम न हो तो सहायक क्या कर सकते हैं

(२) जिसका काम है वही जब पीछे हटता है तो दूसरे सहायक क्या कर सकते हैं?

७८० बूढलीरै कयां खीर कुण रांधै?

बुढ़ियाके कहनेसे खीर कौन रांधे?

(१) सामान्य आदमीके कहनेसे लोग काम नहीं करते (बादमें चाहे आप या दूसरों के कहे से वही काम करना पड़े) तब

(२) जब अेक आदमीके कहने पर दूसरा व्यक्ति काम करनेसे इनकार कर दे पर बादमें जाकर वही काम करे तब उस पहले आदमीका कथन।

७८१ बूढा सो बाळा

बूढ़े सो बालक

बूढ़े बालकवत् हो जाते हैं

७८२ बूढो बाबो आरड़ै, मनै चढायो टारड़ै

७८३ बेच'र बिसतावणो राख'र नहीं बिछतावणो

मालको बेचकर पछताना अच्छा है पर रख कर के पछताना अच्छा नहीं।

७८४ बेच'र जगात को भरै नी

बेचकर जकात भी नहीं चुकाता

धूर्त, चालाक और चलतापुर्जा व्यक्ति।

७८५ बेलड़िया बन छाया, जाट बखाने

बेलोंसे जंगल छाया और जाट काबू

८०० ब्यावरा गीत ब्यावमें गाईजे
विवाहके गीत विवाहमें गाये जाते हैं
प्रत्येक काम अपने स्थान पर ही तभी शोभा देता है।

८०१ ब्योपारे वधते लक्ष्मी
व्यापारसे लक्ष्मी बढ़ती है
व्यापारकी प्रशंसा।
मि॰—व्यापारे वर्धते लक्ष्मीः

८०२ ब्रह्मा आगे वेद बाँचै
ब्रह्माके आगे वेद बांचता है
जानकार आदमीको कोई बात बताना।

८०३ 'श्रीगणेशाय नम' में ही ढबको
'श्रीगणेशायनमः' में ही त्रुटि
आरंभमें ही गलती।
मि॰—(१) प्रथमे ग्रासे मक्षिकापात॰
(२) बिसमिल्ला ही गलत

८०४ 'श्री दाता धनकें' में ही खोट
'श्री दाता धनकें' में ही गलती
(ऊपरवाली कहावत देखो)

८०५ श्रीमाळयाँरी गोठमें गयो खटाज्यै है
श्रीमालियोंकी गोठ (गोष्ठी भोजन) में गया निभ सकता है
श्रीमाली ब्राह्मण भोजन-सामग्रीसे अधिक व्यक्तियों को निमंत्रण दे देते हैं और सामग्री खूट जाती है। ऐसी गोठ में नहीं शामिल होने पर ही उनको लाभ होता है, क्योंकि उतनी सामग्री तो दूसरों के लिए बच जाती है।

७६३ वैरागीरो जाम, कदै न आवै काम
वैरागीकी सतान कभी काम नहीं आती
नोट वैरागी गृहस्थ साधु होते हैं।

७६४ ब्याजनै घोड़ा ही को पूगै नी (पाठान्तर का नावडूंनी)
ब्याजको घोड़े भी नहीं पा सकते
ब्याज बड़ी तेजीसे बढ़ता है।
मि०—ब्याज और भाड़ा दिनरात चलता है
ब्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता।

७६५ ब्याज प्यारो है, मूळ प्यारो कोनी
ब्याज प्यारा है, मूल प्यारा नहीं
बेटे से उसको संतान अधिक प्यारी लगती है,

७६६ ब्याज ब्यापार रो गोला है
ब्याज व्यापार का दास है
ब्याज की अपेक्षा व्यापार करना अधिक लाभदायक है।

७६७ ब्याव कहै-मनै मांड जाय। घर कहै-मन म्हाल जाय
विवाह कहता है मुझे आरम्भ करके देखले, घर कहता है मुझे माल कर
(मरम्मत करवाना) देखले।

७६८ ब्याव बीगड़्या, पण घररा तो सीमा
विवाह तो बिगड़ा पर घरके व्यक्ति तो सीमा
काम बिगड़ गया पर जो काम उठाया जा सकता है वह तो उठाओ

७६९ ब्याव, (पाठान्तर - मौर)मगाई, चाकरी रामजीरा काम
विवाह, सगाई, और नौकरी भाग्य अनुसार हो सकते हैं स्वयं से नहीं
(देखो क्रम कहावत नं० ७८१)

२१ सब धान बाओीस पसेरी

सारा धान २२ पंसेरीके भाव

(१) अच्छे बुरे में कोओी अन्तर न करना

मि॰—टके सेर भाजी टके सेर खाजा

(२) जब चीजें बहुत सस्ती हों तब।

२२ सबसूँ भलो चुप्प*

सबसे भली चुप

चुप रह जाना सबसे अच्छा।

मि॰ मौन सर्वार्थसाधनम्

२३ सबसूँ मीठी भूख

सबसे मीठी भूख

भूख में जैसा कुछ मिल जाय वही मीठा लगता है।

२४ सबूरीरा फल मीठा

सब्र (धीरज) के फल मीठे

धैर्य रखना या सन्तोष कर लेना अन्त में लाभदायक होता है।

२५ सभागियाँरी जीभ, अभागियाँरा पग

सौभाग्यशालियों की जीभ (चलती है) और अभागियों के पैर

धनवान बैठे मौज अुड़ाते हैं—अुनकी अिधर अुधर की बातें करने का ही काम रहता है पर गरीबों को निर्वाहके लिओ अिधर-अुधर आना जाना और परिश्रम करना पड़ता है।

८१६ सदा दिवाळी सायनके, आठूं पोहर आणंद

साधु के सदा ही दिवाली (खुशी का दिन) और आठों पहर आनंद रहता है।

(१) सन्त सदा सुखी रहते हैं।

(२) सन्त दुख को भी सुख ही समझते हैं।

(३) जो हमेशा आनंदी रहे ऐसे पुरुष का कथन।

८१७ सदा-सदा चानणी रातां को हुवे नी

सदा-सदा चांदनी जैसी रातें नहीं होती

(१) हमेशा अच्छे दिन नहीं रहते

(२) हमेशा सुअवसर नहीं मिलते

८१८ सपने देखी सोवली ढींगसरीरा केर

हे सोवली ! अब [दूर ब्याही जाने पर] स्वप्न में ढींगसरी [गांव] के केरों को देखना।

इतना दूर चला जाना कि फिर सहज आनेकी आशा न रहे।

८१९ सपनेरा सात, प्रतखरा पांच

स्वप्नके सात से प्रत्यक्ष के पांच भले

८२० सब ठाठ पड़्या रह जावेंगा जब लाद चलेगा बणजारा।*

जब बनजारा (अपने बैलोंको) लादकर चल देगा तो फिर सब ठाठ पड़ा ही रह जायगा।

जब संसारसे चलना होगा तो सब ठाटबाट यहीं पड़ा रहेगा।

---

* यह कहावत कविवर नजीरकी निम्नोक्त कविताकी अेक पंक्ति है।

टुक हिरस हवाको छोड़ मियाँ मत देस-बिदेस फिरै मारा
कज्जाक अजलका लूटे है दिन-रात बजाकर नक्कारा
क्या भैंसा बधिया बैल शुतर क्या गौन औ पल्ला सिर भारा
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुवां क्या अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जावै जब लाद चलैगा बनजारा

८२१ सब धान बाओीस पसेरी

सारा धान २२ पसेरीके भाव

(१) अच्छे बुरे में कोअी अन्तर न करना

मि०—टके सेर भाजी टके सेर खाजा

(२) जब चीजें बहुत सस्ती हों तब।

८२२ सबसूँ भलो चुप्प*

सबसे भलो चुप

चुप रह जाना सबसे अच्छा।

मि० मौनं सर्वार्थसाधनम्

८२३ सबसूँ मीठी भूख

सबसे मीठी भूख

भूख में जैसा कुछ मिल जाय वही मीठा लगता है।

८२४ सबूरीरा फल मीठा

सब्र (धीरज) के फल मीठे

धैर्य रखना या सन्तोष कर लेना अन्त में लाभदायक होता है।

८२५ सभागियाँरी जीभ, अभागियाँरा पग

सौभाग्यशालियों की जीभ (चलती है) और अभागियों के पैर

धनवान बैठे मौज अुड़ाते हैं—अुनको अिधर अुधर की बातें करने का ही काम रहता है पर गरीबों को निर्वाहके लिअे अिधर-अुधर आना जाना और परिश्रम करना पड़ता है।

८२६ समझूनै भार है

समझदार के लिये भार है (समझदार मारा जाता
समझदार पर ही काम का भार डाला जाता है, मूर्ख
नहीं पड़ता।
काम बिगड़ जाय तो समझदार पर आफत आती है मूर्ख
दिया जाता है।
मि॰—समझदार को मौत है। समझदार की मिट्टी खराब

८२७ समझूरी मौत है

समझदार की मौत है
(ऊपरवाली कहावत देखिये)
मि॰—विचार नै मार है।

८२८ समरथकूं नहिं दोस, गुसांओी !

समरथको नहि दोस गुसांओी
बलवान या बड़ा आदमी कोओी बुरा काम भी कर दे तो भी लो
बुरा नहीं कहते।

८२९ समेररी गांडमें दो डारा हुवै

सुमेरको गांडमें (छेदमें दो डोरे) होते हैं
सुखियाको या बड़े आदमीको अधिक कष्ट अुठाने पड़ते हैं।

८३० समै-समैरी बात है

समय-समय की बात है
मि॰—समै करै नर क्या करै समै-समैरी बात।
केओी समै-रा दिन बड़ा कैओी समै रा रात॥
समै बड़ो नर क्या बड़ो, समै बड़ो बलवान।
काबां लूंटी गोपका वो अरजुन वै बाण॥

८३१ समंदर में रहणो'र मगर मच्छसूं वैर करणो

समुद्रमें रहना और मगरमच्छसे बैर करना

बलवान मालिक या साथी या सहयोगीसे बैर करनेसे हानि उठानी पड़ती है

८३२ सरग नरग कुण देख'र आयो है

स्वर्ग और नरक किसने देखा है ?

इसी लोक की करनी ही स्वर्ग नरक है।

८३३ सरपरै बच्चैरो कांओ छोटो कांओ मोटो ?

साँपके बच्चेका क्या छोटा और क्या बड़ा (दोनों अेकसे प्राणहारी होते हैं)

दुष्ट या दुश्मन छोटा हो चाहे बड़ा कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिअे।

८३४ सरपांरै किसी मासी ?

साँपोंके कौन-सी मौसी

दुष्ट रिश्तेदारी या मित्रताका लिहाज नहीं करते।

८३५ सरमरी मा गोडा रगड़े

शर्मकी माँ गोड़े रगड़ती है

८३६ सरमरी बहू भूखी मरै

शर्मवाली बहू भूखों मरती है

जो आहार-व्यवहारमें लज्जा करता है वह हानि उठाता है।

८३७ सराही खीचड़ी दांतां चढ़ै

सराही हुई खिचड़ी दाँतोंके चढ़ती है (चिपकती है)

(१) ज्यादा तारीफ करनेसे आदमी बिगड़ जाता है (घमंडी हो जाता है)

(२) जिस पदार्थकी तारीफ की जाय वह कम स्वादिष्ट हो जाता है।

८३८ सरावण वखत करै नहीं

सराहने का समय मत मत देना !
किसी उत्तम व्यक्ति को अविद्यमानता में प्रशंसा करने का
अर्थात् चिरायु हो !

८३९ सलाम सट्टे मियांजीनै विराजी क्यूँ करणा ?

केवल सलामके लिअे मियांजीको नाराज क्यों करना ?
कोअी साधारण बात करनेसे ही राजी रहै तो यह बात न करके अ
करनेसे क्या लाभ ?

८४० सठ् सट्टै भैंस मारै

चमड़ेके टुकड़ेके लिअे भैंसको मारता है
थोड़ीसी बातके लिअे बड़ी हानिकर बैठता है

८४१ सस्तो भाडो, पोकर जात

सस्ता भाड़ा और पुष्करकी यात्रा (फिर क्या चाहिअे ?)

८४२ सस्तो रोवै बारबार मूँघो रोवै अेक बार

सस्ता रोवै बारबार महगा रोवै अेक बार
सस्ती वस्तु अच्छी और टिकाऊ नहीं होती, महँगी वस्तु में अेक बार तो
खूब दाम लग जाता है पर वह अच्छी और टिकाऊ होता है ।

८४३ संख फेर, खीर भर्योहो

शंख और फिर खीरसे भरा (फिर क्या चाहिअे ?)

८४४ संग जिसा रंग

जैसा संग वैसा रंग

८४५ संगत जिसी रंगत

(ऊपरवाली कहावत देखो)

८४६ संगत जिसो असर

जैसी संगत वैसा असर
मि० तुकम तासीर सोहबते असर

८४७ संगत जिसो फळ

वैसी संगति वैसा फल

८४८ संगतरा फळ है

संगत के फल हैं
जैसी संगत की जाती है वैसा ही फल मिलता है।

८४९ संगतसार अनेक फळ लोहा काठ तिरंत

संगति के अनुसार अनेक प्रकार के फल मिलते हैं
काष्टके साथ लोहा भी तैरता है।

८५० संदेसां खेती को हुवैनी

संदेश द्वारा खेती नहीं होती (खुद करे तभी होती है)
जो खुद काम नहीं करता, दूसरों को सौंप देता है उसका काम नहीं होता।
मि० —आप मर्‍यां बिना सरग को मिलैनी

८५१ संपत थी जदी भूत कने ही धन ले आया

संपति (मेल) थी तब भूत के पास से भी धन ले आये
मेलजोल से सब कुछ हो सकता है

८५२ संपत होय तो घर भलो, नहीं भलो परदेस

यदि परस्पर प्रेम हो तो घरमें रहना अच्छा नहीं तो परदेश।

८५३ सास अक सिविदेरी

गधाड़ी अेक खरगोश की
चतुराओ से किसी वन को देखरेख देखा
जिस पर यह कहावत है—अेक बनिया धन कमाने को परदेश चला। रास्ते में
उसे ठग मिले। उनको देखकर बनिया बड़े जोर से कराह कर गिर आवे

खरो जमीन पर पैसाकर बैठ गया और रुपयोंको थैली पासमें रख कर तथा बही खोलकर बैठ गया। ठग भी अुसके पास आकर बैठ गये और बोले सेठजी, हमें रुपयोंकी जरूरत है, आप अुधार दे दीजिये। सेठने कहा— हमारा तो काम ही यही है, आप किसी साक्षीको ले आअिये ताकि लिखापढ़ी को रस्म पूरी हो जाय। अितनेमें अेक खरगोश वहांसे निकलता हुआ दिखायी दिया। ठगोंने कहा कि अिसीको साक्षी लिख लीजिये, अिस जंगलमें दूसरा साक्षी कहांसे आवेगा? बनियेने कहा-ठीक है। फिर १०) पासमें रखकर सब रुपये ठगोंको सौंप दिये और बहीमें अुनके नाम-धाम लिखकर नीचे लिख दिया—साख अेक सुसियेरी। फिर खुशी मनसे घर लौट आया। जिसके बाद वह बराबर अुनका ध्यान रखने लगा। अेक दिन वे शहरके दरवाजेमें जाते हुअे दिखायी दिये। बनियेने झट पुलिसको सूचना दी और ठग पकड़कर राजाके आगे पेश किये गये। मामला चला। ठगोंने कहा कि बनिया झूठ बोलता है, यदि रुपये हमने लिये होंगे तो कोओ साक्षी जरूर होगा क्योंकि बिना साक्षीके ये लोग रुपये नहीं देते। बनियेने कहा-हां अन्नदाता, साक्षी है, मेरी बहीमें लिखा है—साख अेक लूंकड़ीरी (गवाही अेक लोमड़ी की)। यह सुनते ही अुनमेंसे अेक मूर्ख ठग बोल अुठा— क्यों झूठ बोलता है, वह लोमड़ी कहां था, वह तो खरगोश था। बनिया बोला—हां, अन्नदाता, बेशक बोलनेमें भूल हो गयी, यह ठग ठीक कहता है मेरी बहीमें भी खरगोश ही लिखा है, देख लीजिये। राजाने सब समझ लिया और बनियेका धन अुसे दिलाकर ठगोंको अुचित दंड दिया।

८६४ सागी कुवाड़ा'र सागी डांडा

वही कुल्हाड़े और वही डंडे
फिर पहलेका-सा ढंग अख्तियार कर लेना
जैसा पहले किया वैसा ही करना

तूं है देवी बावली भैंस गयो है रावली।
हूं हूं कुंभार बांढो सागी कँवाड़ो'र सागी डांडो ॥१॥

८६० साच-कूड़ में च्यार आंगळरो फरक

सच और झूठमें केवल चार आंगुलका फर्क है

(आंख और कानमें चार आंगुलका अंतर होता है)

८६१ साच बोलणो लड़ाओी मोल लेवणी है

सच बोलना लड़ाओी मोल लेना है

सच बात कहनेसे लोग नाराज होते हैं और लड़ बैठते हैं।

८६२ साच बोलै सत्यानास जाय

जो सच बोलता है उसका सत्यानाश हो जाता है

सच बोलनेवालेके सब बैरी हो जाते हैं

मि०—साच कहै सो मारा जाय।

८६३ साची कैवूं जद मा ही माथै में देवै

सच्ची कहते हैं तब मां भी माथेमें देती है (मारती है)

सच्ची पर खरी बात कोओी नहीं सुनना चाहता

८६४ साचैरो बावड़ै, कूडैरी को बावड़ै नी

सच्चेकी (दशा) फिर लौट आती है, झूटेकी नहीं लौटती।

८६५ साजन जिसा भोजन

जैसे प्रियतम वैसे भोजन

८६६ साजन सांकड़ा ही भला

मित्र एक साथ रहें तो अच्छा चाहे स्थान संकुचित हो क्यों न हो।

८६७ सामो बापरो ही खोटो

सामना बापका भी खोटा

झगड़ेका काम कोओी अच्छा नहीं।

मि०—(१) साहेको मा गंगा न पावै
(२) साहेको हांडी चौराहे फूटे
(३) साझा भला न बापका बेटी भली न अेक
(४) साझे सझै न बापका है रासै की खाण
घर न्यारो कर, बालमा ! म्हारी मत तूँ मान
(५) सात मामांरो भाणजो भूखो मरै ।

८६८ साठ गांव बकरी चरगी
साठ गांव बकरी चर गयी

८६९ साठी, बुध नाठी
साठी पर पहुंचे और बुद्धि भागी
साठ बरसकी अवस्थाके बाद बुद्धि काम नहीं करती
साठी बुध नाठी सब कही है असीय किसी लोकोक्ति कही
मैं तो अठाणूं पर
देखूं मोमें स्मृति मति केय रही ।
(मस्तयोगी ज्ञानसार ९९ वीं शती)

८७० साठे कोसे पाणी, बारह कोसे बाणी
साठ कोस के बाद पानी और बारह कोसके बाद बोली (बदल जाते हैं)

८७१ साठे कोसे लापसी सौए कोसे सीरो
नहीं छोड़ेलो नणदल बाई रो बीरो
लापसी का भोजन साठ कोस व सीरेका सौ कोस की दूरी में भी ननंद का भाई
नहीं छोड़ेगा । भोजनभट्ट को स्त्री या लोगों का कथन ।

८७२ साणी कैरा पोहा बगस दे ?
साहनी किसके पोहे बदल दे ?

८७३ साण्यांरा बगसीज्या किसा घोड़ा बगसीजै ?

साहनियोंके बख्शे कौन-से घोड़े बख्शे जाते हैं (घोड़े तो मालिक बख्शे तो बख्शे जा सकते हैं)

जिसकी कोथी चीज दे देनेका अधिकार नहीं वह उसको नहीं दे सकता वह दे भी दे तो वह चीज दी हुअी नहीं समझी जा सकती।

८७४ सात-पांचरी लाकड़ी, अेक-जणैरो बोझ

सात-पांच आदमियोंकी अेक-अेक लकड़ीसे अेक आदमीका पूरा बोझा जाता है।

कओी आदमियोंके थोड़े-थोड़े सहारेसे अेक आदमीका सारा काम बन जाता है सब आदमी थोड़ा-थोड़ा सहारा दें तो अेक महान कार्य सिद्ध हो जाता है

मि०—पांचारी लकड़ी एकैरो भारो ।

पांचांरी लाल एकै रो गारो ॥

८७५ सात भायांरी बहन भूखी मरै

सात भाअियोंकी बहन भूखी मरती है

(१) सभी आदमियोंका काम किसीका भी काम नहीं होता

८७६ सात मामांरो भाणजो भूखो मरै

सात मामोंका भानजा भूखा मरता है

(अूपरवाली कहावत देखिये)

८७७ सात वार नव तिवार

सात बार नौ त्यौहार

हिन्दुओंमें दिनोंकी अपेक्षा त्यौहारोंकी संख्या अधिक है।

८७८ सातांरी मानै स्याळिया खाय

सातोंकी मांको सियार खाते हैं

(१) साझेका काम बर्बाद होता है

(२) सबका काम किसीका भी काम नहीं होता

(अूपर कहा

८७९ सादळिये पूरमें ठगिया

सादलिये ने पूरमें (मलवेमें) ठग लिया

चालाकीसे ठग लेना

कहानी-सादा या सादलिया नामका अेक बनिया था। अुसके पास मलवेका बड़ा ढेर हो गया। सबको फिंकवानेमें बहुत पैसा लगेगा यह सोचकर अुसने कुछ हिस्सा बाहर रख दिया और अेक मजूरसे कुछ पैसे देकर फिंकवानेकी बात तय की। मजदूर ढेरीमेंसे कुछ फेंकने गया जितनेमें सादेने कुछ और मलवा ढेरीमें मिला दिया। बेचारा मजदूर फेंकता रहा पर ढेरी खतम हो न हो क्योंकि जितना मजदूर ले जाता अुतना सादा और डाल देता। अंतमें हारकर मजदूर बोला—सादलिये पूरमें ठगिया।

८८० साधांरै किसा सवाद

साधुओं-फकीरों-के कौनसे स्वाद हैं

(नीचेवाली कहावत देखिये)

८८१ साधांरै किसा सवाद, खिलाया नहीं तो अणखिलाया ही सही

साधुओंके कौनसे स्वाद हैं, मये नहीं तो बिना मये ही सही

८८२ साधांरै किसा स्वाद (खिलोया है)

साधुओंके कौन-से स्वाद (मये) हैं

८८३ साफ कहणा, मगन रहणा

स्पष्ट बात कहना और मौज करना

सामी सरहा, बामण गरहा

८८४ सायजी सूरा, लेखा पूरा

सादकी सुरखेर हैं, हिसाब किताब बराबर

सारी आमदनी खरच हो जाने पर।

८८५ शाहजी, आप कांई ? चोपड़ा

पहला ही दीसै है नी

शाहजी, आपकी जाति क्या ?

चौपड़ा।

आपके पहले ही दीखते हैं न।

८८६ सारी उमर पीस्यों'र ढकणीमें उसार्यो

सारी उम्र पीसा और सारा ढक्कनीमें ओकट्ठा कर लिया

अत्यधिक परिश्रम करने पर भी कुछ न जोड़ सके तब।

८८७ सारी रात रोया मरग्यो ओक ही कोनी

(ऊपर कहावत नं० ८११ देखिये)

८८८ सारी रामायण बांच ली जद पूछे सीता कुण ही

(ऊपर कहावत नं० ८१२ देखिये)

८८९ साळसीपो सेत बाजा, कांई करैला रूठा राजा ?

शालिग्राम और सेत बाजा हो तो राजा रूठकर क्या करेगा ?

ये दो अलौकिक शक्तियोंवाली वस्तुअें हैं जो प्रायः सिंध में

मिलती हैं

८९० सावण बीकानेर

८९२ साव़ण तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ
साबनमें चन्द्रमा सोया उगे तो अच्छा और आषाढ़में खड़ा

८९३ साव़ण रे (जायोड़े) गधे नै हरियो हरियो दीसै
सावन में जन्मे गधे को हरियाली ही दीखती है
अनुभव हीन व्यक्ति के लिए।

८९४ साव़ळ करतां काव़ळ पड़ै
अच्छा करते बुरा होता है

८९५ साळी छोड़ सासू सूं ही मसकरी ?
साली छोड़ साससे ही मस्करी !

८९६ साळै बिना कांयरो सासरो ?
साले बिना क्या ससुराल ?

८९७ सावणरै आंधैने हरया-ही-हरया सूझै
सावनमें अंधे हुओ आदमीको सब हरा-हरा सूझता है
(जब अंधा हुआ तब सब हरा ही हरा था अुसीको स्मृति अुसे रह जाती
(अूपर कहावत नं० ८९३ देखिये)

८९८ सासरै जाव़तीनै छिनाळ कोअी को कैव़ैनी
ससुराल जाती हुअीको छिनाल कोअी नहीं कहता।
अच्छी जगह जानेसे कोअी बुरा नहीं कहता

८९९ सासरो कांई बिसास आवेर आवैअी कोयनी—
ससुरका क्या विश्वास ? आता आताही न आवे (बध हो जाय)।

९०० सासरो कोनी, भाया !
भाअी, यह ससुराल नहीं है
आनंद करनेकी जगह नहीं।

६०१ सासरो सुख वासरो

ससुराल सुखनिवास है

ससुराल में आनंद।

६०२ सासरो सुखवासरो, दो दिनांरो आसरो,

तीजे दिन रेवे तो मारै खासड़ो

ससुराल सुखका निवास है पर दो ही दिन तक तीजे दिन रहे तो जूते पड़ते हैं

ससुरालमें थोड़े दिन तो बड़ा आदर होता है पर ज्यादा रहनेसे अनादर होने लगता है।

मि०— तीन दिनों रा पावणा चौथे दिन अणखावणा।

६०३ सासरो सुख-वासरो, पण च्यार दिनांरो आसरो

रैसी मास दो मास, देसी दाती बढ़ासी घास

ससुराल सुखका वासा है पर चार ही दिन आश्रय मिलता है

एक व्यक्ति ससुराल गया, वहां की आवभगतसे प्रसन्न होकर ऐसा कहने पर साले ने कहा चार दिन का आश्रय है जंवाई ने कहा महीना दो महीना रहेंगे तो साले ने कहा दाती देकर घास कटायेंगे।

६०७ साहूकार रै वास्ते ताळो, चोररै वास्ते किसो ताळो ?

साहूकारके वास्ते ताला लगाया जाता है चोरके वास्ते क्या ताला ?
(चोर तो ताला तोड़ कर भी चोरी कर लेता है)

६०८ सांईरी कुदरत है

परमात्मा की कुदरत है

६०९ सांचनै आंच कोनी

सांचको आँच नहीं
सच्चेको कोई डर नहीं
मि० सत्ये नाऽस्ति भयं क्वचित्
सांचको क्या आँच

६१० सांप आंगळारा मेळ है (पाठान्तर—अंगूठैरा)

सांप अंगुलीका मेल है
बबी में हाथ डालना और सांपका डसना ।

६११ सांप नीकळग्या लोक पीटै है ।

सांप तो चला गया उसके चिन्ह को पीटा जाता है
किसी भी अनावश्यक रूढ़िके अस्तित्व पर ।
मि०—सरप तो गया लिसोळा रह्या

६१२ सांप मरै न लाठी टूटै

बिना किसी बिगाड़के काम हो जाय

६१३ सांपरै खायोड़ैनो अदीतवार कद आवै ?

सांपके खाये हुओ को इतवार कब आवे ? (अुसका मिलाज तो तुरन्त होना चाहिये ।)

९१४ सांपरो सोवै बिच्छूरो रोवै
सांपका (काटा) सो जाता है, बिच्छूका काटा रोता है

९१५ सांपारै किसा सास ?
सांपोंके कौन-से रिश्ते
दुष्ट रिश्तेका लिहाज नहीं करते।

९१६ सांभर जाय अलूणो खाय
सांभर जावे और फिर भी अलोना (भोजन) खाये
मि०—कुंए जाकर प्यासा आवे

९१७ सांभरमें पड़ै सो सांभर हुवै
जो सांभर में पड़ता है वह भी सांभर (नमक) हो जाता है

९१८ सांभरमें लूणरो टोटो !
सांभरमें नमकका टोटा !

९१९ सांभी हांडो चौवटै फूटै
सम्हाली हुई हंडिया बीच बाजार फूटती है।
जिसको ज्यादा सम्हाल रखते हैं वह ज्यादा नष्ट होती है।

९२० सांस जितै आस
जब तक सांस तब तक आशा
(१) मरने तक आशा पिंड नहीं छोड़ती
(२) जब तक आंखें बंद न हो जाय तब तक मनुष्यके मनकी आशा रहती है
(३) जब तक दोनों आंख बन्द नहीं हो जाती तब तक मनुष्यके दोनों आशा बनी रहती है।

९२१ लिड़क देख'र गधा लिड़कै
दलक देखकर गधे भड़क उठते हैं

६२२ सिकाररी वखत कुतिया हँगायी

शिकार के समय कुतिया हँगासी

ठीक मौके पर बहानेबाजी करनेवाले पर।

६२३ सित्तर-मित्तर हूं समझू कोय नी, तीन बीसी पूरी लेसूं

सित्तर-मित्तर तो मैं समझता नहीं, पूरा तीन बीसी रुपये लूंगा

कहानी एक भोला जाट बीस से ऊपर गिनती नहीं जानता था, ऊंट बेचने के लिये आने पर खरीददार ने कीमत सत्तर रुपये कही तो उसने कहा सित्तर मित्तर मैं नहीं जानता मुझे तो पूरे तीन बीसी (साठ रुपये) चाहिये।

६२४ सिधश्री में ही खोट

'सिद्धश्री' में ही गल्ती

आरम्भ में ही खराबी

मि० श्रीगणेशायनमः में ही दबको

बिसमिल्ला ही गलत

६२५ सिरपर भींटकांरी लेई. तंबू में बड़न री

माथे पर भींटोरों (बांटों) का भार और तम्बू में प्रवेश करने की इच्छा, अयोग्य व्यक्ति पर।

६२६ सिर बडो सपूतरो, पग बडा कपूतरा

सिर बड़ा सपूतका, पैर बड़े कपूतके

बड़ा सिर अच्छा समझा जाता है और लंबे पैर बुरे।

६२७ सिर बडो सरदा ग वडो गँवार रा

f रंके

को चाहिए।

ी ए

६३० सिंघ पकड़ियो स्याळियै तो छोड़ै तो खाय

सिंहको सियारने पकड़ तो लिया पर अब यदि छोड़ दे तो सिंह उसे खा ज

बिना परिणाम सोचे किसी काममें हाथ डाल देनेवालेपर ऐसा कार्य करके वि

परिस्थिति में पड़ जाने पर जिसे निभाने और छोड़ने में नुकसान उठाना पड़े

६३१ सिंघ-बचा जो लंघणा तोय न घास चरंत

सिंहका बच्चा यदि भूखा हो तो भी घास नहीं खाता

स्वाभिमानी पुरुष विपत्तिमें भी पड़नेपर भी स्वाभिमान का त्याग नहीं कर

महापुरुष विपत्तिग्रस्त होकर भी अनुचित कार्य नहीं करता।

६३२ सिंघारै किसी मास्यां हुवै

सिंहों के कौन-सी मौसियां होती है ?

जो रिश्तेका लिहाज नहीं रखते अनुचर।

६३३ सीता-किसना कह्यो कोनी

सीता-कृष्ण नहीं कहा

६३४ सीयाळो सोभागियां

शीतकाल भाग्यवानोंके लिये अच्छा

दोहा—सीयालो सोभागियां हेरो

आधो हाली बालदी, सारो

६३५ सीरख देख'र पग पसारणा चा

सौड़ देखकर पैर फैलाना चाहिये

सामर्थ्य के अनुसार काम करना चाहिये

मि॰—तेते पांव पसारियै जेती लांबी

६३६ सीररी मानै स्याळिया खाय

साझेकी मांको सियार खाते हैं

६३७ सीररी होळी हुवै

मामेकी होली होती है

(१) साझेका काम बिगड़ता है

(२) साझेकी होली अच्छी

६३८ सीररो धन स्याळिया खाय

साझेका धन सियार खाते हैं

साझेका काम सदा बुरा

[ऊपर कहावत नं० ६३६ देखिये]

६३९ सीर, सगाई चाकरी राजीपैको काम

६४० सींग पूँछ गांडमें वड़ग्या गज बंदूक समेत

राजपूती रुळती फिरै ऊपर फिरगो रेत।

गज बदूक समेत सींग पूँछ गांडमें घुस गये, रजपूती धूल में मिल गयी।

कायर राजपूतों पर।

६४१ सीरोड़ वादी करै देख देही रा खेल।

सीरा भी वायुकारक हो गया, देखो देह का खेल

अमीरी आ जाने पर।

दोहा छुखा धान न धापता स्यास पलासां तेल।

सीरोड़ बादी करै देख देही रा खेल॥

६४२ सींगरी कसर पूँछमें निकळी

सींगकी कसर पूँछमें निकली पूरी हुओ.

अेक स्थानकी कमी दूसरे स्थानमें पूरी हुओ।

मरो जोड़ो है

र दुख जीवनमें आते ही रहते हैं।

६४४ सुगन गांठड़ी बांधो

६४५ सुण, भाभी सूजा ! जोधाणै राज करै जकां जोधा दूजा

भाभी सूजा सुन, जोधपुरमें राज्य करनेवाले जोधे दूसरे हैं

६४६ सुथारनै देख'र चॅन्नतेरी लाठी लांबी हु ज्याय

खातीको देखकर चलते हुअे की लाठी लंबी हो जाती है

६४७ सुधरी ने कंइ सरावणी, बिगरी ने कंइ बिसरावणी

निंदा स्तुति न करके समभाव रखना चाहिअे ।

६४८ सुसियैरो चौथो पग ही नहीं

खरगोश का चौथा पैर ही नहीं

६४९ सुसियै साख भर दी

खरगोश ने साक्षी भर दी

पक्षपाती साक्षी पर ।

६५० सुंआळी लेमड़ी माथे से चढ़ै

चोपे लोमड़ीके पेड़ पर खाते चढ़ जाते हैं

चोपेको लंबी [illegible] हैं

६५१ सूंनै संभार कोनी

[illegible] मर जाने पर

६५२ सूंठै साथै आमो पळै

सूंठ के साथ [illegible] है

६५३ सूका सांग [illegible] बाळै

सूखे संग [illegible] हैं

६५४ सूंठो काढ टूट [illegible] हो जावे, [illegible] कोनी

[illegible]

[illegible]

९६१ सूधैनै सौ दुःख
सीधे को सभी दुःख
सीधेको सभी सताते हैं ।

९६२ सूधै माथै दो चढै (पाठान्तर-डरै)
सीधे (जानवर) पर दो सवारी करते हैं
सीधे को लोग ज्यादा सताते हैं

९६३ सूनेमें न्हार जरूर पड़ै
सूने में नाहर जरूर पड़ता है

९६४ सूरज अस्त, मजूर मस्त
सूर्यास्त होते ही मजदूर मस्त हो जाते हैं
क्योंकि अुस समय अुन्हें छुट्टी मिल जाती है ।

९६५ सूरज सामी धूड़ अुछाळै जको आपरै माथै पड़ै
सूरज के सामने जो धूल अुछाली जाती है वह अपने ही
महापुरुष को निंदा करनेसे अपनी ही हानि होती है,
नहीं बिगड़ता ।

९६६ सूरज सामै थूक्योड़ो आपरै ही माथे पड़ै
सूरजको ओर थूका हुआ अपने ही सिर पर पड़ता है
[अूपरवाली कहावत देखो]

९६७ सूरदास काळी कामळ पर चढै न दूजो रंग
काली कमली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता
(१) जिसका स्वभाव नहीं बदलता अुस पर

९७७ सेर जठै सवा सेर

जहां सेर (खर्च किया) वहां सवा सेर सही
जहां ज्यादा खर्च होता है वहां थोड़ा और सही

९७८ सेरनै सवा सेर त्यार है

सेर को सवा सेर तय्यार है
(१) बलवान को उससे अधिक बलवान अवश्य मिल जाता है
(२) जो किसीको सताता है उसे सतानेवाला भी मिल जाता है
(३) जो चालाकी करता है उसके साथ चालाकी करनेवाला भी मिल जाता है
(४) जो सताता है वह ज्यादा सताया जाता है

९७९ सेर नै सवा सेर पूग्यो

सेर को सवा सेर पहुँच गया (मिल गया)
सतानेवालेको सतानेवाला मिल गया
चालाकको चालाक मिल गया।

९८० सेरमें पँसेरी रो धोखो

सेरमें पंसेरीका धोखा
बहुत बड़े धोखेबाज पर
ठग दुकानदार पर।

९८१ सेरमें पूणी ही को कती नी

सेरमें पौना भी नहीं कता
अभी काम का बहुत थोड़ा हिस्सा हुआ है।
मि॰ मण में कण।

९९६ सौक माटी री ही खोटी
सौत मिट्टीकी भी बुरी

९९७ सोटी बाजै चमचम, विद्या आवै घमघम
सोंटी चमचम बजती है तो विद्या घमघम करती आती है
गुरुके पीटनेसे विद्या जल्दी आती है
पाठां० चोटी करै चमचम विद्या आवै घमघम

९९८ सोढीजी-आळो सिणगार करै
सोढीजीवाला सिंगार करता है
देर करता है।

९९९ सोढीजी सिणगार करसी, जितै राव्ळजी पोढ ज्यासी
सोढीजी सिंगार करेंगी तबतक राजाजी सो जायेंगे
देर करनेवाले पर।

१००० सोनार आपरी मांरा ही दांवळ काट लेवै
सुनार अपनी माँके भी रतन काट खाता है
सुनार अपने घरवालोंको भी नहीं छोड़ता।

१००१ सोनार सागी मांरा दांवळ काटै
(ऊपर वाली कहावत देखिये)

१००२ सोनैनै काट को लागै नी
सोनेको जंग नहीं लगता
अच्छे आदमीमें बुराई नहीं पैदा होती
अच्छे आदमी को बदनामी करने से भी नहीं होती।

९८९ सो आप-आपरी रास्या मांय न्यारा हैं
सभी अपनी-अपनी रोटियां में अलग अलग रहते हैं
पर अपना काम पड़ने देखते हैं।

९९० सेजे पूड़ा फूटियो'र हळका टूटाया हाथ
बाई रा बंधण कट्या, भली करी रघुनाथ
सहजहीमें पूड़ा फूट गया और हाथ हल्के हो गये
सहज ही किसी कार्य का हो जाना।

९९१ सेणपमें फिरकिर पड़ै
सयानपमें किरकिर (धूल) पड़ती है
जो ज्यादा सयाना बनता है वह काम बिगाड़ता है।

९९२ सेणपमें भीजै है
सयानपमें भीगता है
ज्यादा सयानप दिखानेवाले पर।

९९३ सैयाँ भये कुतवाल, अब डर काहेका ?
प्रियतम हो कोतवाल हो गये अब किस बातका डर ?

९९४ सैंधो कुत्तो घररानै खावै
परिचित कुत्ता घरवालोंको ही खाता है

९९५ सैंधो सगो सूठरो गांठियो (पाठान्तर-सामी)
परिचित समधो सोंठकी गांठ (के बराबर)
अधिक परिचय से अनादर होता है।
मि० अति परिचयादवज्ञा

१०११ सोम साजा न मंगळ मांदा
न सोमवारको अच्छे न मंगलको बीमार
हमेशा अेक-सा रहनेवाले पर

१०१२ सोमोती अमावस अर सुकरवार
सोमवती अमावस और शुक्रवार

१०१३ सोरै खूंट माथै सै-कोअी बैठै
आरामदेह खूँट पर सब कोअी बैठते हैं
सीधेको सब सताते हैं
भलेको सब तंग करते हैं।

१०१४ सोळह आना साचो।
सोलह आने सच्चो !
बिलकुल सत्य (व्यंग में)

१०१५ सोवै सो खावै
जो सोता है सो खोता है
मि० सुता रेह विगूता सहो आगता नै डर भय नहीं

१०१६ सौअे कोसे निरवाळा
सौ कोस दूर
जो जिम्मेदारीके कामसे सदा बचता रहे।

१०१७ सौअे कोसे लापसी साठे कोसे सीरो,
कदे न छोड़े भूलसु, नणदलबाई को बीरो।
सौ कोस पर लपसी और साठ कोस पर हलुआ हो तो भी
मेरो ननदका भाई (पति) नहीं छोड़ता
भोजनभट्ट और मिष्टान्नप्रेमी पर

१००३ सोनैरी कटारी पेटमें को मारीजै नी
सोनेकी कटारी पेटमें नहीं मारी जाती
(नीचेवाली कहावत देखिये)

१००४ सोनैरी कटारी पेट में खावणनै को हुवै नी
सोनेकी कटार पेटमें खानेकी नहीं होती

१००५ सोनैरी थाळीमें लो'री मेख
सोनेकी थालीमें लोहेकी मेख
अमेल संबंध पर।

१००६ सोनैरो सूरज ऊगो
सोनेका सूर्य उगा
अत्यन्त हर्षका कार्य हुआ।

१००७ सोनो उछाळता जावो
सोना उछालते जाओ
जहां चोर डाकूका भय न हो ऐसे स्थानके।

१००८ सोनो गयो करणरै साथ
सोना राजा कर्ण के साथ गया

१००९ सोनो देखर मुनीरो मन डाले
सोना देखकर मुनिका मन भी डिग जाता है
धन देखकर कौन नहीं डिग जाता ?

१०१० सोनो'र सुगंध
सोना और सुगंध
जब दो अच्छी बातोंका संयोग हो

१०११ सोम साजा न मंगळ मांदा

न सोमवारको अच्छे न मंगलको बीमार

हमेशा अेक-सा रहनेवाले पर

१०१२ सोमोती अमावस अर सुकरवार

सोमवती अमावस और शुक्रवार

१०१३ सोरै अूंट माथै सै-कोओ बैठै

आरामदेह अूंट पर सब कोओ बैठते हैं

सीधेको सब सताते हैं

भलेको सब तंग करते हैं।

१०१४ सोळह आना साची।

सोलह आने सच्चो !

बिलकुल सत्य (व्यंग में)

१०१५ सोवै सो खोवै

जो सोता है सो खोता है

मि० सूता देह बिगूता सहो जागता ने डर भय नहीं

१०१६ सौमे कोसे निरवाळा

सौ कोस दूर

जो जिम्मेदारीके कामसे सदा बचता रहे।

१०१७ सौमे कोसे लापसी साठे कोसे सीरो,

कदे न छोड़े भूलसु, नणदलबाई को वीरो।

सौ कोस पर लापसी और साठ कोस पर हलुआ हो तो भी

मेरी ननदका भाई (पति) नहीं छोड़ेगा

भोजनभट्ट और मिष्टान्नप्रेमी पर

१००३ सोनेरी कटारो पेटमें का मारोजै नी
सोनेकी कटारी पेटमें नहीं मारी जाती
(नीचेवाली कहावत देखिये)

१००४ सोनैरी कटारी पेट में खाम्रणने का हुवे ?
सोनेकी कटार पेटमें खानेको नहीं होती

१००५ सोनैरी थाळीमें लो'री मेख
सोनेकी थालीमें लोहेकी मेख
अमेल संबंध पर।

१००६ सोनैरा सूरज ऊग्यो
सोनेका सूर्य उगा
अत्यन्त हर्षका कार्य हुआ।

१००७ सोनो अुछाळता जावो
सोना अुछालते जाओ
जहां चोर डाकूका भय न हो अैसे स्थानके। ६

१००८ सोनो गयो करणरै साथ
सोना राजा कर्णके साथ गया

१००९ सोनो देखअर मुनीरो मन ढाल
सोना देखकर मुनिका मन भी डिग जाता है
धन देखकर कौन नहीं डिग जाता ?

१०१० सोनो'र सुगंध
सोना और सुगंध
जब दो अच्छी बातोंका सयोग हो

१०२५ सौ दिन चोररा, अेक दिन साहूकार रो
सौ दिन चोर के अेक दिन साहूकारका
जो आदमी कभी बार दोष करके बच जाता है तो, अेक दिन पकड़ा भी जाता है और अुस दिन सब दिनोंकी कसर अेक साथ निकल जाती है

१०२६ सौ दिन सासूरा, अेक दिन बहूरो
सौ दिन सासके अेक दिन बहूका
(अूपरवाली कहावत देखिये)

१०२७ सौ धान बाओीस पसेरी
सब धान बाओीस पंसेरी (बेचता है)
भले बुरेको अेकसी कदर करना

१०२८ सौ नार, अेक सोनार
सौ स्त्रियाँ और अेक सुनार
सौ स्त्रियोंमें जितनी चालाकी होती है अुतनी अेक सुनारमें होती है।

१०२९ सौ नीच, अेक आंखमीच
सौ नीच और अेक काना

१०३० सौ पछै ही सायजो क्यूँ ?
सौ के पीछे साहजो क्यों
सौ मर जायँ तो भी साहजो क्यो मरें
जो आदमी सदा सशंक रहता हुआ किसी तरहका खतरा न ले अुस पर।

१०३१ सौबत जिसो असर
जैसी सोहबत वैसा असर

१०१८ सौमें घरसे सभीको हुवै
सौ बरस पर शताब्दी होती है
अवसर हमेशा नहीं मिलता

१०१९ सौ का रहग्या सठ, आधा गया नट, दस देंगे, दस दिलावंगे,
दसका देणा क्या ?

१०२० सौगन र सीरणी खावणनै हुवै
सौगंद और सीरनी खानेको ही होती हैं
बहुत सौगंद खानेवाले पर।

१०२१ सौ गुंडा, अेक मुछमंडा
सौ गुंडे और अेक मुछमुंडा (बराबर हैं)

१०२२ सौ गोलां घर सूनो
सौ गोलोंके होते हुअे भी घर सूना
केवल नौकरों से ही घर नहीं शोभता।
मि० घणां गोलां कोटडी सूनी

१०२३ सौ जठै सवा सौ
जहां सौ वहां सवा सौ
जहां अधिक खर्च हो रहा है वहां थोड़ा खर्च और हो जाय तो क्या ?

१०२४ सौ ज्यूं पचास, गोगो ज्यूं हरदास
जैसे सौ वैसे पचास, जैसे गोगा वैसा हरदास
जहां सौ खर्च हुअे वहां पचास और सही
जहां जितना गया वहां जितना और सही।

१०२५ सौ दिन चोररा, अेक दिन साहूकार रा

सौ दिन चोर के अेक दिन साहूकारका

जो आदमी कभी बार दोष करके बच जाता है तो,अेक दिन पकड़ा [illegible]

है और अुस दिन सब दिनोंकी कसर अेक साथ निकल जाती है

१०२६ सौ दिन सासूरा, अेक दिन बहूरा

सौ दिन सासके अेक दिन बहूका

(अूपरवाली कहावत देखिये)

१०२७ सौ धान बाअीस पसेरी

सब धान बाअीस पंसेरी (बेचना है)

भले बुरेको अेकसी कदर करना

१०२८ सौ नार, अेक सोनार

सौ स्त्रियां और अेक सुनार

सौ स्त्रियोंमें जितनी चालाकी होती है [illegible]

१०२९ सौ नीच, अेक मंसमीच

[illegible] और अेक काना

यजो क्यूं ?

[illegible] पड़े

१०३२ सौबतरो असर है
(ऊपर की देखिये)

१०३३ सौ में सूर सत्रामें काणो, सत्रा लाखमें ओंचाताणो
सौ मनुष्योंमें अंधा, सत्रासौ में काना, और सवा लाख में अेंचाताना अेक
बदमाश होता है।

१०३४ सौ रांडाने भांग'र अेक रँडवो घड़्यो
सौ रांडोंको भांगकर अेक रँडुआ बनाया
रँडुवा सौ रांडोंके बराबर बदमाश होता है।

१०३५ सौ वातांरी अेक वात
सौ बातोंकी अेक बात
तात्पर्य यह है। मुख्य बात यह है।

१०३६ सौ सुजाण, अेक अजाण

१०३७ सौ सोनाररी, अेक लोहाररी
सौ सुनारकी अेक लुहारकी

१०३८ सौ स्याणा अेक मत
सौ सयाने अेक मत
सब सयानोंकी अेक ही राय होती है।

३९ स्याणां स्याणां अेक मत
सयाने सयानोंकी अेक बुद्धि होती है
(अूपरवाली कहावत देखिये)

१०४० स्यामसूँ किसो संग्राम ?
स्वामीसे कैसा संग्राम
बलवानसे विरोध नहीं करना चाहिये ।

१०४१ स्याळियैआळी घुरी है
सियारवाली मांद है

१०४२ स्याळियैरी मौत आवै जरां गांव कानी भाजै
सियारको मौत आती है तब गाँवकी तरफ भागता है
जब होनहार अच्छी नहीं होती तब बुद्धि विपरीत हो जाती है ।

१०४३ स्याळियैआळी बुधनेड़ा आयां घटती जावै
सियारवाली बुद्धि ज्यों-ज्यों निकट आते हैं घटती जाती है
कामके पहले डींग मारनेवाले और कामके समय पीठ दे जानेवाले पर ।

१०४४ हकूमतरो डोको डांग फाड़ै
हुकूमत की सींक लाठीको फाड़ डालती है
हुकूमत या अधिकार पास होनेसे निर्बल भी बलवान हो जाता है ।

१०४५ हम पिया, हमारा बैल पिया, अब कूवा दुड़ पड़ो
हमने पी लिया, हमारे बैलने पी लिया, अब कुँआ गिर पड़े
स्वार्थी व्यक्ति के लिये ।

१०४६ हम चवड़े, गळी सांकड़ी
हम चौड़े, गली तंग
अभिमानी या गर्विष्ठ के लिये ।

१०४७ हम बडा गळी सांकड़ी बाजारका रस्ता किधर ?

हम बड़े, गली तंग, बाजारका रास्ता किधर ?

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१०४८ हर विना ही गांवतरो ?

बिना आशा के क्यों गामान्तर जाना

१०४९ हरी करी सो खरी

हरिने की सो खरी है

भगवान का किया होता है। भगवान की की हुई को कोई नहीं टाल सकता

१०५० हळदीरो गांठियो ले'र पंसारी बण्यो है

हल्दीका टुकड़ा लेकर पंसारी बना है

५१ हवेली हुवै जठै सारतखानो ही हुवै

महल होता है वहां पाखाना भी होता है

बड़ेके साथ छोटा—भलेके साथ बुरा भी होता है।

मि० ? गांव हुवै अकुरड़ी ई हुवै।

no garden without its weeds

हांडी जिसा ठीकरा, मा जिसा बीकरा

सी हांडी वैसे उसके ठोकरे, जैसी मां वैसी उसकी संतान

...नमें माता के गुण आते हैं।

१०५३ हांडी में ढकणी खावै

थोड़ी वस्तु में से भी अधिकांश उड़ा लेना

१०५४ हांतो थोड़ो, हल्हल घणो

हांतो थोड़ो, हलचल बहुत

थोड़ी बात पर बहुत हो-हल्ला ...

१०५५ हाडरो बांई लाद ?

हाड़का वर्या लाद ?

कहानी—एक बूढे मियां सादी करके बीबी लाये। मियां के दांत एक था उसने कहा—मर्द तो इकदंता भला तो बीबी ने कहा—हड़ क्या लड़ सफसफा ही भला। तब मियां ने समझा कि बीबी तो मेरे से भी बूढी है

१०५६ हाडो तीरसूँ डरै क्यूँ डरै

कौवा तीरसे डरता है वैसे डरता है

बहुत डरता है

१०५७ हाडो ले ढूब्यो गणगोर

हाड़ा (राजपूत) ले डूबा गनगोर

१०५८ हाथ कमाया कामणा किणने दीजे दोस ?

हाथ से कमाये काम हैं, किसको दोष दिया जाय ?

अपने ही किये कामोंका फल भोग रहे हैं।

१०५९ हाथ पोलो, जगत गोलो

हाथ पोला (ढीला) हो तो ससार भर गोला (दास) हो जाता है।

रुपया देने से सब वश में हो जाते हैं।

१०६० हाथ में माला, पेट कुदाला

हाथ में माला और पेट में कुदालो

ऊपरसे धर्मात्मा बनना और पेटमें कपट रखकर हानि पहुंचाना

धोखेबाजके लिये।

१०६१ हाथ में लिया कासा, मांगण का क्या सासा ?

जब हाथमें भिक्षापात्र ले लिया तो मांगनेका क्या डर ?

निर्लज्जता धारण कर ली फिर लज्जा कैसी ?। निर्लज्जके लिये।

१०६२ हाथरै आळस मूँछ मूँडै में आवै
हाथके (=जरा-से =) आलस्यके कारण मोंछ मुंहमें आती है।
जरा-से आलस्यके कारण अधिक हानि होना।

१०६३ हाथरो दियो आडो आवै
हाथका दिया हुआ काम आता है
दानकी महिमा।

१०६४ हाथ सुमरनी, पेट कतरणी
हाथमें माला और पेटमें कतरनी
कपटीके लिये।
[देखो ऊपर—हाथ में माला पेट कुदाला]

१०६५ हाथसूँ दियो दूध बराबर
हाथसे दिया दूधके समान है
स्वेच्छासे दी हुई वस्तु निर्दोष है।
मि०—आप मिलै सो दूध बराबर, मांग मिलै सो पाणी।
कहै कबीर, सो रकत बराबर ज्यांमें खंचाताणी।

१०६६ हाथ सूको, टाबर भूखा
हाथके सूखते ही बच्चा (फिर) भूखा हो जाता है
बच्चों को दिनभर भूख लगती है—वे दिन भर खाते हैं।

१०६७ हाथसूँ हाथ और पग सूँ पग नेड़ो
हाथ से हाथ और पैर से पैर निकट

१०६८ हाथ ही बळ्या, होळा ही हाथ को आया नी
हाथ भी जले और होले (आगमें भुने गीले चने) भी हाथ नहीं आये।
हानि भी उठाई, या कष्ट भी सहा, और काम भी न बना।

१०६९ हाथीरै किसी मँहदी लाग्योड़ी है ?

हाथीके कौन-सी महँदी लगी हुई है।

हाथीके गीली महँदी लगी रहती है तो उसके उतरनेके भयसे कोई काम नहीं करते। जब कोई व्यक्ति काम नहीं करता तब यह कहावत कही जाती है।

१०७० हाथी आगै पूळो

हाथीके आगे पूला

हाथीको ओक घास के पूले से क्या हो, क्योंकि वह बहुत थोड़ा होता है

१०७१ हाथी वहे अठे पुण्यांरा लेखा हुवै ?

जहां हाथी उड़े वहां उनको पूनियोंके हिसाब होते हैं ?

मिलाओ—भींटोरा उडे अठे पायांरा लेखा हुवे ?

१०७२ हाथी तोलीजै जटै गधा पाहल में जाय

जहां हाथी तुलते हैं वहां गधे पासंगमें आते हैं

१०७३ हाथीरा दांत, कुत्तेरी पूँछ, कुमाणसरी जीभ, सदा आंटी रैवै

हाथीके दांत, कुत्तेकी पूँछ और कुपुरुषकी जीभ सदा टेढ़ी रहती है

कु-पुरुष सीधा नहीं बोलता।

१०७४ हाथीरा दांत देखावणरा और, खावणरा और

हाथीके दांत दिखलानेके दूसरे और खाने के दूसरे

अैसे आदमीके लिअ जो कहना कुछ है और करना कुछ है।

१०७५ हाथीरै पगमें सगळांरो पग

हाथीके पैरमें सबका पैर

अेक बड़े आदमी से अनेक छोटों का निर्वाह होता है।

अेक बड़े पदार्थमें अनेक छोटे पदार्थ आ जाते हैं।

१०६२ हाथरै आळस मूँछ मूँढै में आवै

हाथके (=जरा-से =) आलस्यके कारण मोंछ मुंहमें आती है।

जरा-से आलस्यके कारण अधिक हानि होना।

१०६३ हाथरो दियो आडो आवै

हाथका दिया हुआ काम आता है

दानकी महिमा।

१०६४ हाथ सुमरनी, पेट कतरणी

हाथमें माला और पेटमें कतरनी

कपटीके लिए।

[देखो ऊपर—हाथ में माला पेट कुदाला]

१०६५ हाथसूं दियो दूध बराबर

हाथसे दिया दूधके समान है

स्वेच्छासे दी हुई वस्तु निर्दोष है।

मि०—आप मिले सो दूध बराबर, मांग मिले सो पाणी।

कहै कबीर, सो रकत बराबर ज्यांमें खेंचाताणी।

१०६६ हाथ सूको, टाबर भूखो

हाथके सूखते ही बच्चा (फिर) भूखा हो जाता है

बच्चों को दिनभर भूख लगती है—वे दिन भर खाते हैं।

१०६७ हाथसूँ हाथ और पग सूँ पग नेड़ो

हाथ से हाथ और पैर से पैर निकट

१०६८ हाथ ही बळ्या, होळा ही हाथ को आया नो

हाथ भी जले और होले (आगमें भुने गीले चने) भी हाथ

हानि भी उठाई, या कष्ट भी सहा, और काम भी न बना।

१०८३ हाथे लगावै, पगे बुझावै
हाथ से आग लगाता है, पैर से बुझाता है
चुगलखोर के लिये।

१०८४ हाय बिना हाय कैने ?
हाय बिना दया किसे ? जिसके चोट लगती है वही दया करता है।
जो अपना होता है उसी को दया आती है।

१०८५ हारिये ना हिम्मत बिसारिये ना राम नाम
जाही विध राखै राम ताहि विध रहिये।
हिम्मत नहीं हारना चाहिये।

१०८६ हाल तो पन्नो पनरह बार परणीजसी
अभी तो पन्ना पन्द्रह बार विवाहा जायगा

१०८७ हाल तो हळदी हाटी में ही ज बोलै है
अभी तो हल्दी हाट में ही बोलती है
(१) अभी कार्य आरम्भ नहीं हुआ है।
(२) अभी कार्य रोका जा सकता है।

१०८८ हाल तो पायली में पाव ही को पीसीज्यो नी
अभी तो पायली में पाव भी नहीं पिसा
अभी तो बहुत बाकी है।

१०८९ हाल तो सेर में पूण ही को कतीज्योनी
अभी तो सेर भर में पौनी भी नहीं कती
[कतरवाड़ी बदबाड़ दे'कड़े]

१०७६ हाथीरै पग में सै आयग्या

हाथीके पैरमें सब आ गये

अेक बड़े आदमी के आने से सभी आगये।

मिलाओ—सर्वे पदा हस्ति-पदे प्रविष्टाः।

१०७७ हाथीरो जोर हाथीनै को दीसैनी

हाथीका बल हाथीको नहीं दिखाई देता

अपनी शक्ति अपनेको नहीं जान पड़ती।

१०७८ हाथी लारै कुत्ता मोकळा भुसै

हाथीके पीछे कुत्ते बहुत-से भौंकते हैं

मिलाओ—

The moon does not her the barking of dogs.

१०७९ हाथी नै हल जोतिया

हाथी को हल चलाने में लगा दिया

बड़े आदमी से सामान्य काम कराने पर।

१०८० हाथी-हाथी लड़ै, बीचमें झाड़रो खो

हाथी-हाथी आपसमें लड़ते हैं, बीचमें झाड़का नाश होता है

दो सबल विरोधियोंकी लड़ाईमें बीचके निर्बल हानि उठाते हैं।

१०८१ हाथी हींडत देख कूकर लब्र-लब्र कर मरै

हाथीको झूमते हुअे देखकर कुत्ते भौंक भौंक कर मरते हैं

१०८२ हाथे-पगे दिया जगै

हाथों-पैरों में दिये बलते हैं।

चंचल व्यक्ति के लिअे।

१०६६ हिचकी खांसी बगासी, तीनूं काळरी मासी
हिचकी, खांसी और जँभाई—तीनों काल की मौसी हैं
तीनों मृत्यु की ओर ले जानेवाली हैं।

१०६७ हिमायतरी गधी हाथीरै लात मारै
हिमायत की गधी हाथी के लात मारती है
हिमायत से निर्बल भी सबल बन जाता है।

१०६८ हिम्मत किम्मत होय
हिम्मत की कीमत होती है
हिम्मत बड़ी चीज है उसीसे आदर मिलता है। पूरा दोहा इस प्रकार है—
हिम्मत किम्मत होय हिम्मत बिना किम्मत नहीं
करे न आदर कोय रद कागद ज्यूं, राजिया!

१०६६ हिम्मते मरदां मददे खुदा
हिम्मते मरदां मददे खुदां बादशाह की लड़की से फकीर का निकाह

११०० हियैरी बात होठां आयां सरै
हृदय की बात होठों पर आ ही जाती है
हृदय का कपट कभी नहीं छिपता।
मि०—कोठैरी बात होठे आयां सरै।

११०१ हिलायांसूं दाळ जाय, लडायांसूं पूत जाय
हिलाने से दाल बिगड़ती है, लाड़ करने से पुत्र बिगड़ता है
दाल पकाते समय दाल को बराबर कलछी से चलाना नहीं चाहिये।
इसी प्रकार बच्चों का अनुचित लाड़-प्यार नहीं करना चाहिये।

१०६० हाल रात आडी है

अभी तो रात बीच में है।

अभी सफलता मिली नहीं है, न जाने क्या विघ्न आ पड़े

मिलाओ—कबीर पगड़ा दूरि है जिनके बिच है रात

का जाणै का होयसी ऊगंते परभात

१०६१ हिंगतै बोर खायो

हँगते हुए बेर खाया

कहानी—एक आदमी ने शौच जाते बेर खाया जिसे दूसरे व्यक्ति ने लिया। वह उसे सबके सामने प्रकट करने को धमकी दिखाता कहता—कह दूं क्या? तो एक दिन उसने चिढ़कर स्वयं स्वीकार कर। जिससे हमेशा को झंझट मिटी।

१०६२ हिंगतांरै बीचमें मूंढो देवै है

हँगते हुए बीच में मुंह देता है

१०६३ हिंग, रे छोरा! पेट फाड़ूं

अरे छोरे! हँग, नहीं तो तेरा पेट फाड़ता हूं

१०६४ हिंदवाणै में तुरकाणी कर दी

हिन्दुआने में तुर्कानी रीति कर दी

(१) धर्म के विरुद्ध काम करना

(२) किसी काम में विपरीत काम कर डालना

१०६५ हिंदू कैवतो सरमावै, छड़तो को सरमावै नी

हिन्दू कहते हुए शरमाता है, कहता हुआ नहीं शरमाता

हिंदू पहले कहता हुआ शरमाता है पर पीछे कहता हुआ भी नहीं शरमाता।

व्यवहार के आरंभ में शर्मा शर्मी के कारण नहीं बोलता पर पीछे कहता है।

१११० हुआ सौ, भागा भौ
हुया हजार, फिरो बजार
सौ रुपये हो गये तो भय भाग गया, हजार हो गये तो खूब बाजार में फिरो।
धन की महिमा।

११११ हुवै जणा ईद, नहीं तो रोजा
पास हो तो ईद, नहीं तो रोजे
मिल जाय तो मौज करते हैं, नहीं मिलता है तो फाका

१११२ हूं आयो, तूं चाल
मैं आया, तू चल

१११३ हूं गाऊं दियालीरा, तूं गावै होळीरा
मैं गाता हूं दिवाली के (गीत), तू गाता है होली के
बिना आशय समझे बीच में बेमतलबकी बात करने पर।

१११४ हूंतां बहन, अणहूंतां भाई, मगरां पूठै नार पराई

१११५ हूं नहीं हुती तो कैनें परणीजंता ? कै – थारी मांनै
मैं नहीं होती तो किससे विवाह करते ? कि तेरी मां से

१११६ हूं बड़ो, सेरी सांकड़ी
मैं बड़ा, गली तंग
[ऊपर देखिये—हम बड़ा गली सांकड़ी]

१११७ हूं मरूं पण तनै रांड कैरा'र छोडूं
मैं मरूं पर तुझे रांड करके छोड़ूं

११०२ दिल्ली-दिल्ली हूँ कदी धाड़कसलीरा म्हाय
छोभ लागो बाणियो, भाटे लागी गाय।
लोभ में पड़कर सर्वदा अनुचित कार्य करने वाला नुकसान उठाता है।

११०३ हिवयोड़ा चोर गुलगुला म्हाय

११०४ हींग जावे पण वास को जावेनी
हींग चली जाती है पर उसकी गंध नहीं जाती
मनुष्य मर जाता है पर उसके गुण याद रहते हैं।

११०५ हींग लगे ना फिटकड़ी, रंग चोखो ही आवे
हींग लगे न फिटकरी पर रंग चोखा आवे
बिना खर्च काम हो जाय।

११०६ हींजड़ेरी कमाई मूँछ-मुंडाईमें जावे
हिंजड़े की कमाई मोंछ मुड़वाने में जाती है।

११०७ हीरा पथरांसूँ फोड़ननै थोड़ा ही हुवे
हीरे पत्थरों से फोड़ने के लिये थोड़े ही होते हैं
बुद्धिमान मूर्खों से थोड़े ही झगड़ते हैं या माथाकूटी करते हैं

११०८ हीरेसूँ हीरो बींधीजै
हीरे से हीरा बिंधता है
(नीचेवाली कहावत देखो)

११०९ हीरो हीरैसूँ कटै
हीरा हीरे से कटता है
मिलाओ—Diamonds cut diamonds.

'राजस्थानी ग्रन्थमाला'

के

स्थायी ग्राहक बन कर

राजस्थानी भाषा के साहित्य-प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें।

२००० स्थायी ग्राहक हो जाने से—राजस्थानी के
साहित्य-प्रकाशन का कार्य अपने पैरों
पर खड़ा हो जावेगा।

आप इस उद्योग में सहायक बनिये

नीचे लिखे ग्रंथ प्रेस में दिये जा चुके है :—

(१) राजस्थानी कहावतां भाग पहला
(२) संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण
(३) सुखो गिरधरीरा गीत
(४) नरसीजी रो मायेरो

शीघ्रता से अपनी प्रति रिजर्व कराइये।

राजस्थानी साहित्य परिष
, ४ जगमोहन मल्लिक लेन,

११११८ हुं रहूं कोलायत, तूं रहै बिलायत
मैं रहता हूं कोलायत, तू रहता है बिलायत
मेरा-तेरा क्या साथ !

१११६ हुं लायो मांग तांग, तू ले गधेरी टांग
मैं तो मांग-तांग कर लाया हूं, तू गधे की टांग ले
मांगी हुई चीज में कोई हिस्सा बंटाना चाहता है तब कही जाती है।

११२० हुं ही राणी, तूं ही राणी, कुण घाळै चूल्हे में छाणी ?
मैं भी रानी, तू भी रानी, चूल्हे में कंडा कौन डाले ?
जब कोई काम न करना चाहे।

११२१ हुं कहतां मं आवै
'हूं' कहते मुंह से 'मं' निकलती है

११२२ है जितोई खेरीरो टुकड़ो है
जितना है उतना ही खेरीका टुकड़ा है

११२३ होड करयां लोड फूटै
होड करने से माथा फूटता है
होड करने की निंदा। जब कोई होड़ नहीं करना चाहता तब कहता है।

११२४ होडाहोड क्यूं गोडा फोडै
होडाहोडी क्यों गोड़ा फोड़ता है ?
दूसरे की देखादेखी या दूसरे से होड़ कर लगाकर, कोई व्यक्ति हानि उठाता है तब कही जाती है।

११२५ होणहारनै नमस्कार !
होनहार को नमस्कार है
होनहार बड़ी है, उससे वश नहीं चलता।